हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर सीरीजका ८० वा ग्रन्थ

मानवहृदयकी कथाएँ

(द्वितीय भाग)

फ्रांसके विश्वविख्यात कथाकार गई-द-मोपासाँकी
चुनी हुई कहानियोंका अनुवाद
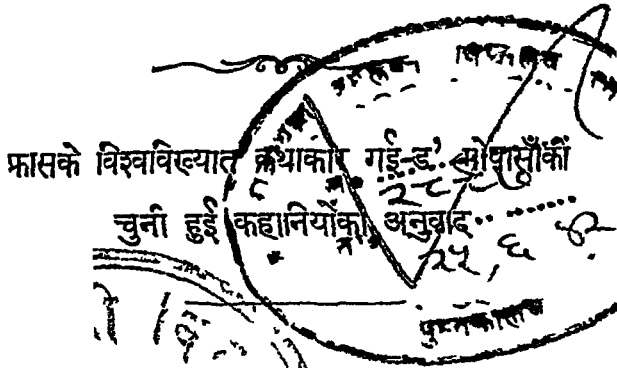
अनुवादकर्त्ता

बाबू मदन गोपालजी
बी० ए०, एलएल० बी० वकील

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
बम्बई

मानव-हृदयकी कथाएँ

स्थायी प्रेम

आखेट-कालके प्रारम्भमें होनेवाले भोजकी समाप्तिकी बात है। लैम्पोंके तीव्र प्रकाशमें फल और फूलोंसे लदी हुई मेजके चारों ओर बैठे हुए मार्किस दे वरत्रान तथा उनके अतिथिगण बातें कर रहे थे कि प्रेमकी चर्चा छिड़ गई। फिर क्या था, तुरंत ही उसी सनातन विषयपर तीव्र वाद-विवाद होने लगा कि प्रेम एक बारसे अधिक भी किया जा सकता है अथवा नहीं। जीवनमें केवल एक बार ही प्रेम करनेवाले पुरुषोंके उदाहरण दिये जानेपर वारम्वार मदनके तीक्ष्ण शरोंसे विद्ध होनेवालोंने भी उत्तरमें अपनी अपनी रामकथा सुनानी प्रारंभ कर दी। पुरुष तो इस बातको स्वीकार करते थे कि आघातद्वारा जीवन अशेष न करनेवाले रोगोंकी भाँति काम-विकारोंका आक्रमण भी एक ही मनुष्यपर कई बार हो सकता है और उनका यह निश्चय अविवादग्रस्त सा भी प्रतीत होता था; परंतु व्यावहारिक निरीक्षण-की अपेक्षा कविताओंके आधारपर कहीं अधिक अपनी सम्मति स्थिर करनेवालीं स्त्रियाँ अब भी दृढ़तापूर्वक यही कह रहीं थी कि प्रेम अथवा प्रबल अनुराग

मर्त्यलोक-निवासियोंके प्रति एक बार—केवल एक बार—ही आता है। प्रेम उनकी समझमें विद्युतके समान है, जिससे एक बार स्पर्श हो जानेपर ही हृदयका सदाके लिए ही नाश हुआ समझना चाहिए और फिर वह ऐसा नष्ट भ्रष्ट और जल भुनकर राखकी भाँति हो जाता है कि दृढ अनुराग तो क्या उसके स्वप्न तक भी वहाँ जड़ नहीं पकड सकते।

परन्तु प्रेम-कुंजोंमें अनेक बार विचरण करनेवाले मार्किस महोदय इस उक्तिसे सहमत न होते थे और कहते थे कि "अपने समस्त प्राण और हृदय-द्वारा पुरुषके लिए अनेक बार प्रेम करना भी संभव है। प्रेमकी पुनरुत्पत्ति असंभव बतानेके लिए आपने अबतक इसके आवेशमें प्राणोत्सर्ग करनेवाले पुरुषोंहीके उदाहरण दिये हैं; परन्तु मै दाव लगाकर कह सकता हूँ कि इन लोगोंने यदि मूर्खतावश आत्मघातद्वारा द्वितीय अनुरागका अस्तित्व ही असंभव न कर दिया होता, तो मृत्युपर्यन्त—वारम्वार—इनको नवीन प्रेम-पथ ही दृष्टिगोचर होते। प्रेम-रस चाखनेपर मनुष्य मद्य-पानकी भाँति उसका भी दास हो जाता है। अन्तमें मानव-स्वभावपर इसकी स्थिति वहुत कुछ निर्भर रहती है।"

एक बुड्ढे डाक्टर महोदय इस प्रश्नपर अंतिम निश्चय करनेके लिए निर्णायक चुने गये; परन्तु मार्किस महोदयकी भाँति वह भी प्रेमको स्वभाव-प्रधान वस्तु ही समझते थे। वह कहने लगे:—

"मुझको एक ऐसे प्रेमका पता है कि जो विना एक दिन विश्राम किए हुए पचपन वर्ष तक निरंतर एकरस विद्यमान रहा और फिर मृत्युद्वारा ही उसका अन्त हुआ।"

मार्किस महोदयकी पत्नी यह सुन प्रसन्नतासे तालियाँ वजाकर बोलीं:—"कैसी अनुपम बात है! वाह! ऐसा प्रेम तो स्वप्नसदृश सुन्दर प्रतीत होता है! पचपन वर्ष पर्य्यन्त स्थिर एवं अगम्य प्रेममें अवगुंठित रहना भी कैसा आनन्ददायक है! इस स्नेहका पात्र भी ऐसे आनन्दको प्राप्त कर अपने जीवनको अवश्य ही धन्य समझता होगा!"

डाक्टर महाशय मुस्कराकर कहने लगे—"श्रीमतीजी, अन्तिम वात तो आपने सत्य ही कही। स्नेह-भाजन एक पुरुष था। आप उसको जानती भी हैं। मेरा आशय औषध वेचनेवाले चौकवेसे है; रही स्त्रीकी वात

सो उससे भी आप अपरिचित नहीं हैं—वही बुड्ढी जो प्रतिवर्ष आपके प्रासादमें आकर कुर्सियोंकी मरम्मत किया करती थी।"

सामान्य पुरुषोंकी प्रेम-कथाको आदरकी दृष्टिसे न देखनेके कारण यह बात सुनते ही स्त्रियोंका उत्साह कर्पूरकी भाँति सहसा उड़ गया और कुछ एकने तो 'ऊँह' कहकर अपनी घृणा भी प्रकट कर दी। परन्तु डाक्टर महोदयने अपना कथन समाप्त न किया—वे कहते ही गये—

"तीन मास हुए, कुर्सियोंकी मरम्मत करनेवाली इस बुढ़ियाकी मृत्यु जब बिल्कुल निकट आ गई थी, तब मुझको बुलाया गया। पादरी महाशय वहाँपर पहलेहीसे उपस्थित थे। बुढ़िया अपनी समस्त सम्पत्तिका वसीयतनामा लिखकर हम दोनोंको उसका अधिकारी बनाया चाहती थी, जिससे कि उसकी मृत्युके उपरान्त हम वसीयतनामेके अनुसार सम्पत्तिको यथास्थान पहुँचा दें। अपने इस आचरणको भली भाँति समझानेके विचारसे उसने हमको अपना पूर्वेतिहास भी बताया, जो अत्यन्त ही अद्भुत एवं हृदयग्राही है। उसके माता और पिता दोनो ही कुर्सियोंकी मरम्मत किया करते थे। रहनेके लिए उनके पास तब कोई मकान न था। बिखरे हुए बालोंसे वह यों ही शैशवावस्थामे उनके साथ भूखी और प्यासी स्थान स्थानपर घूमती फिरती थी। नगरोंमे जानेपर वह अपना घोडा, गाडी और कुत्ता सीमाके बाहर ही छोड देते थे और कुर्सियोंकी मरम्मत करनेके उपरान्त सन्ध्यासमय माता पिताके लौटनेपर्यन्त बाल्यावस्थामें वह वहीं घासपर अकेली खेलती रहती थी। 'कुर्सी! कुर्सी! टूटी कुर्सी बनानेवाला!' इन शब्दोंको उच्च स्वरसे कहनेके अतिरिक्त उन बुड्ढोंके मुँहसे कभी कोई और वाक्य नहीं निकले।

"खेलमें बहककर दूर निकल जानेपर बालिकाको क्रुद्ध पिताकी डॉट सहनी पडती थी। प्यारसे उसके साथ बात करनेवाला कोई न था। अधिक अवस्था हो जानेपर मरम्मतके लिए कुर्सियाँ लाने और फिर ले जानेका कार्य इसके सुपुर्द कर दिया गया। नगरोंकी गलियोंमें आने-जानेके कारण अन्य बालकोंसे उसकी मैत्रीका इसी समय प्रारम्भ हुआ, परन्तु नंगे पैर घूमनेवाली बालिकासे बात करनेके कारण माता-पिता सदैव अपने बालकोंको बुलाकर भर्त्सना करने लगते थे। बालक इसपर बहुधा

ईंटोंकी वर्षातक कर डालते थे। केवल इसको एक दयालु स्त्रीने एक बार कुछ पैसे दिए थे, जिनको इसने अत्यन्त ही प्रयत्नसे अपने पास जोड़कर रक्खा था।

"जब यह ग्यारह वर्षकी थी, तब इसने एक ऐसे ही किसी नगरमें घूमते फिरते इसी बालक चौकवेको देखा। खेलमें साथीद्वारा दो बहुमूल्य कौडियाँ चुराए जानेके कारण यह कबरिस्तानके पीछे फूटफूटकर रो रहा था। अत्यन्त कमनीय मर्त्यलोकवासी नागरिकके पुत्रको—जो इसके कल्पना-जगतमें दुःख और क्लेशोंसे कोसों दूर था—आँसू बहाते देख इसके हृदयमें असह्य व्यथा उठ खडी हुई। निकट जाकर दुःखका कारण मालूम होते ही इसने अपनी वही समस्त संचित संपदा उसके हाथोंपर धर दी और आँसू पोंछ-कर जब बालकने उसको बिना किसी हिचकिचाहटके ले लिया, तो हर्षसे विह्वल हो इसने भी उसका मुख चूम लिया। पैसे गिननेमें व्यग्र होनेके कारण बालिकाके इस कार्यपर उसने कुछ भी आपत्ति न की। यह देखकर कि इसने मुझको तनिक भी नही दुरदुराया, यह अपने बाहुयुगलद्वारा उसको आवेष्टित कर हृदयसे लगा वहाँसे भाग खडी हुई।

"इस दरिद्र बालिकाके मस्तिष्कमें क्या विचार उठ रहे थे! अपना सर्वस्व निछावर करनेके कारण वह इस बालकके प्रेमसे विह्वल हो रही थी, अथवा प्रथम चुम्बन प्रदान करनेके कारण ही उसकी ऐसी अवस्था हो गई थी, बालक और वृद्ध दोनोंहीके लिए यह समस्या—यह रहस्य समान रूपसे जटिल एवं दुरूह है। कबरिस्तानके निकटवर्ती चौराहे-के तथा उस छोटेसे बालकके महीनों तक उसके कल्पना-जगतमें स्वप्न-चित्र पड़ते रहे। अब वह कुर्सियोंकी मरम्मत अथवा पसारियोंसे सौदा मोल लेते समय ही अपने पिताके रुपयोंमेसे यदा कदा एक आध पैसा (पैनी) चुराकर अपने पास रखने लगी और इस प्रकारसे द्रव्य जोडकर जब वह पुनः कबरिस्तानके उसी कौनेपर जेबमें दो फ्रैंक डालकर गई, तो वह बालक वहाँ-पर न था। लौटते समय उसने देखा कि वह अपने पिताके औषधालयमें, जहाँ रुपया-पैसा लिया जाता है, उस स्थानके पीछेकी ओर, खड़ा है। वहाँसे बालिकाको उसका मुख दिखाई दिया। इस समय वह दो बडे बड़े नीले और लाल गोलोंके बीचमें बैठा हुआ था। इन रंग विरंगे काचके सुंदर

गोलोंपर मोहित होकर वह उसको और भी अधिक प्यारकी दृष्टिसे देखने लगी और इस दृश्यका स्मृति-चित्र सदैवके लिए उसके हृदय-पटलपर अंकित हो गया। अगले वर्ष वह उसको स्कूलके निकट गुट्टे खेलते मिला। देखते ही यह उसकी ओर दौड़ गई और गलेमें बाँह डालकर उसने उसका इतने प्रेमावेशसे चुम्बन लिया कि वह मारे भयके चिल्लाने लगा। इसपर बालिकाने उसको चुप करनेके लिए अपना समस्त धन ही दे डाला, जो तीन फ्रैंक और और बीस सेंट होता था, परन्तु बालकके लिए तो वह वास्तवमें सोनेकी खानिके सदृश था और वह उसको बहुत देर तक आँख फाड़-फाड़कर देखता रहा।

"इसके पश्चात् उसने बालिकाको मनचीते चुम्बन लेने दिये। फिर अगले चार वर्षपर्यंत वह अपनी समस्त संचित आय उसीको अर्पण करती रही और वह बालक भी शुद्ध भावसे उसको चुम्बनका मूल्य समझकर अपनी जेबोंमें भरता रहा। कभी कभी तो यह रकम दो फ्रैंक (फ्रांसीसी रुपया) तक बढ जाती थी और कभी घटकर कठिनतासे तीस अथवा बारह सौसा (फ्रांसीसी पैंस) तक ही हो पाती थी और ऐसा होनेपर वह दु:खसे आँसू बहाती हुई टूटे फूटे स्वरसे उसको इस कमीका कारण बतानेका प्रयत्न करती थी—और तब अगली बार ज्यों त्यो करके पाँच फ्रैंक (फ्रांसीसी रुपए) भेंट करके ही बालिकाका हृदय प्रसन्न होता था। उसके मनमे अब किसी अन्य बालकका ध्यान तक न आता था और वह भी अधीरतापूर्वक बालिकाकी प्रतीक्षा करता रहता था, यहाँ तक कि कभी कभी तो उसको देखते ही वह दौडकर मिलने जाता था, जिससे बालिकाका हृदय प्रसन्नतासे धडकने लगता था। इसके उपरान्त वह सहसा दृष्टिसे लोप हो गया। अत्यन्त सावधानीसे खोज लगानेपर जब उसको पता चला कि वह किसी स्कूलके छात्र-निवासमे रहने लगा है, तो बालिका अत्यत चतुराईसे अपने माता-पिताको राह पलटनेके लिए राजी कर उसी स्थानपर कि जहाँ स्कूल बना हुआ था फिर बडी छुट्टियोंके समय जा पहुँची। युक्तिपूर्वक इस प्रकार सफलता प्राप्त करनेमे उसको एक वर्ष लग गया। गत दो वर्षोंसे दर्शन न होने और संपूर्णतया परिवर्तित होनेके कारण बालिका उसको अत्यंत ही कठिनाईसे पहिचान सकी। पहलेकी अपेक्षा अब वह कहीं अधिक लम्बा,

बलिष्ठ, सुंदर तथा सुडौल हो गया था और पीतलके बटनोंकी वर्दी उस-पर अत्यन्त ही भली प्रतीत होती थी। परन्तु युवकने देखकर भी बालिकाको न देखा और दृष्टि बचाकर पाससे निकल गया। यह देखकर वह दो दिन तक बराबर रोती रही और प्रेम-पीडाके कारण उसको इसी समयसे निरंतर वेदनाएँ होनी प्रारंभ हो गई।

"युवकके प्रत्येक वर्ष घर आनेपर जब वह उसके पाससे होकर निकलती थी, तो बालिकाको तो उसकी ओर आँख उठाकर देखनेका साहस न होता था और युवकमें इसकी ओर अपना मुख फेरकर केवल कृपा दिखानेकी भी क्षमता न थी। सर्वथा निराश होनेपर भी वह इसके प्रेममें पागल सी हो रही थी। वह मुझसे कहती थी कि 'पुरुष तो केवल यही मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। संसारमें इसके अतिरिक्त किसी अन्यका अस्तित्व भी है अथवा नहीं, मुझको सर्वथा अज्ञात है।' हाँ, तो फिर कालान्तरमें इसके माता-पिता मर गये और उनकी मृत्युके उपरान्त यह वही अपना पुराना काम करती रही।

"एक दिन उसी गाँवमें घुसनेपर कि जहाँ इसका हृदय सदा अटका पडा रहता था—इसने क्या देखा कि चौकवे महाशय हाथके सहारे एक युवतीको लिये हुए जो इनकी पत्नी थी अपने औषधालयसे निकल रहे हैं। इस हृदयद्रावक दृश्यको देखकर बेचारी दुखिया असह्य वेदनासे छुटकारा पानेके लिए उसी रात्रिको नदीमे कूद पडी। परंतु भाग्यसे अथवा अभाग्यसे उसी समय एक शराबी कहींसे उस ओर आ निकला और इसको जलसे निकालकर उसी औषधालयमें ले गया।

"'केस' आनेपर युवक चौकवे रात्रिके वस्त्रोंको उतारे विना संज्ञा लाभ करा-नेके लिए वैसे ही नीचे उतर आये और प्रकाश्यरूपमें अपरिचितहीकी भाँति विना यह जाने हुए कि यह स्त्री कौन है, उन्होंने कपडे उतारकर उसकी देहको मर्दन करनेके उपरांत कठोर स्वरसे कहा—"तुम कैसी पागल हो! ऐसी मूर्खताका काम कभी न करना चाहिए।" इस पूर्वपरिचित स्वरके सुनते ही स्त्रीके प्राण मानों पुनः लौट आये। 'उन्होंने अपने मुखसे कुछ कहा तो!' बस, इसी विचारके कारण उस दुखियाका जविन सुदीर्घ-

कालपर्यन्त सुखी बना रहा। चिकित्साके उपरान्त स्त्रीके बहुत कुछ कहने सुनने पर भी उन्होंने यत्किंचित् पुरस्कार तक लेना अस्वीकार कर दिया।

" अबलाका समस्त जीवन इसी भाँति समाप्त हो गया। परन्तु अपना समस्त उद्योग धंदा करते रहनेपर भी वह सदा इसी पुरुषका हृदयमें ध्यान करती रहती थी। फिर कुछ कालके अनंतर इस दरिद्राने उसके औषधालयसे इस कारण दवाइयाँ मोल लेना भी प्रारंभ कर दिया था कि इसके द्वारा एक तो उसको अपना प्यारा निकटसे दीख पड़ेगा तथा उससे बात करनेका अवसर मिलेगा, दूसरे इस भाँति अपना धन भी वह उसके पास पहुँचा सकती थी।

" जैसा कि मैंने अभी कहा है उसका पिछली वसंत ऋतुमें देहान्त हो गया। अपनी समस्त करुण-कथा कह चुकनेके उपरांत उस स्त्रीने अत्यंत विनयपूर्वक उसी पुरुषको, जिसे उसने प्रेमदृष्टिसे देखा था, अपना समस्त संचित धन समर्पण करनेकी मुझसे प्रार्थना की। अपनी मृत्यूपरांत उस पुरुषके हृदयमें स्वकीय स्मृति-चिह्न स्थापित करनेके लिए ही उसने घोर कष्ट उठाकर इस प्रकार धन संचित किया था। स्त्रीका प्राणान्त हो जानेपर और्ध्वदेहिक कृत्योंके संपादनके लिए पादरी महाशयको पचास फ्रैंक देकर अगले दिन प्रात.काल मैं चौकवे महाशयसे मिलने गया। स्थूलकाय, प्रभावशाली और स्वाभिमानी यह स्त्री-पुरुष उस समय एक दूसरेके सम्मुख बैठे हुए जल-पान समाप्त करनेहीको थे कि मैं वहाँ जा पहुँचा। देखते ही उन्होंने उठकर मेरा स्वागत किया और मेरे सम्मुख भी एक काफीका प्याला लाकर धर दिया। तदनंतर कुछ एक काँपते हुए स्वरमें मैंने अपनी कथा कहनी प्रारंभ की। मुझको विश्वास था कि इसे सुनकर उनका चित्त आर्द्र हो उठेगा और आँसू बहने लग जायँगे। परन्तु चौकवे महोदयने ज्यों ही यह सुना कि वह कुर्सी बनानेवाली उनसे प्रेम करती थी, त्यों ही वह मारे क्रोधके काँप उठे और शपथ खा-खाकर उसको धूर्ता स्वेच्छाचारिणी आदि कुवाक्य इस तरह कहने लगे, मानों उनकी धवल कीर्तिमें कालिमा लग गई हो, भले मानुसोंकी मान-मर्यादामें बट्टा लग गया हो, अथवा उनका वह गौरव खो गया हो जिसको कि वह अपने जीवनकी अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान् समझते थे। उनकी स्त्री भी इस समय क्रोधसे विह्वल

हो वारम्वार यही कह रही थी 'वह भिखारिन ! उस चांडालिनीका ऐसा हियाव !'

" इस घोर पापकी निन्दाके लिए उपयुक्त शब्दोंका अभाव पाकर ही मानो वह अब मारे क्रोधके खडे होकर कमरेमें इधर उधर टहलने लगे और कुछ कालके अनन्तर फिर कुछ अस्फुट स्वरसे यह कहने लगे कि डाक्टर महाशय, देखिए तो इसके समान भी क्या कोई अन्य भयंकर बात हो सकती है ! आह ! क्या कहूँ, यदि कहीं उसके जीवन-कालमें मुझको इसका पता चल जाता, तो मैं अवश्य उसको जेलखानेकी हवा खिलाता। मै शपथ खाकर कहता हूँ कि वह कारागारसे कदापि न बच सकती।

" मैं इस समय हक्का बक्कासा हो रहा था और मेरी समझमें यह न आता था कि जिस कार्यके पूरा करनेको मैं यहाँ आया हूँ उसके सम्बन्धमें मुझको क्या और कैसे बात प्रारम्भ करनी चाहिए।

"अंतमें जी कड़ा करके मैंने भी कह ही डाला कि मृत्युके समय वह अपना समस्त संचित धन—जो तीन सहस्त्र पाँच सौ फ्रैंक होता है—आपको भेंट देनेका भार मेरे ऊपर छोड़ गई है। परन्तु आपके इस कथनसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप इस धनको स्वीकार करनेकी अपेक्षा दीन-दुखियोंको बाँट देना ही अधिक अच्छा समझेंगे।

" यह सुनते ही स्त्री और पुरुष दोनों आश्चर्यसे मूक हो मेरी ओर देखने लगे। मैंने भी इन साढ़े तीन हज़ार मुद्राओंको अपनी जेबसे निकालना प्रारंभ किया। विविध देशोंमें संचित किये जानेके कारण इस निकृष्ट धनमें सोने, चाँदी और ताँबेके सभी प्रकारके सिक्के मिले हुए थे। धनको मेज़पर रखकर मैंने फिर पूछाः—'अब आप क्या निर्णय करते है ?'

" श्रीमती चौकवेने कहा कि 'आसन्नमृत्यु स्त्रीकी अंतिम इच्छा होनेके कारण इसको अस्वीकार करना भी असम्भव है'। और पतिने निर्लज्जतापूर्वक यह कहा कि 'उससे हम अपने बालकोंके लिए कुछ पदार्थ मोल ले लेंगे।'

'दोनोंके उत्तर सुनकर मैंने रूखे मुखसे केवल इतना ही कहा—'जैसी आपकी इच्छा।'

" मेरे यह कहनेपर पतिने फिर कहा कि 'उस स्त्रीने इस कार्य-संपादनका भार आपपर ही छोडा था, इस लिए आप सब कुछ समझते हुए भी

यह धन हमहीको दे डालिए, हम इसको किस अच्छे ही काममें लगा देंगे।'

"अब मैंने रुपया गिन दिया और अभिवादन कर वहाँसे चला आया।

"अगले दिन चौकवेने मेरे घर आकर असभ्यतापूर्वक पूछा 'उस स्त्री-की एक गाड़ी भी थी, वह क्या हुई?'

" 'देखिए, वह खडी हुई है। आपकी इच्छा हो, तो उसे भी ले जाइए।' 'मैं भी यही चाहता था' इतना कहते हुए वह वहाँसे चल दिये; परन्तु मैंने उनको फिर लौटाकर कहा:— 'उसका एक बुड्ढा घोड़ा और दो कुत्ते भी यहाँ खडे हुए हैं—क्या आपको उनकी आवश्यकता नहीं है?'

"यह सुनकर कुछ देर तक मेरी ओर आश्चर्यसे घूरकर उन्होंने कहा— अजी नहीं, मैं उनका क्या करूँगा, आपको अधिकार है, जो चाहे कीजिए" और फिर हँसकर मेरी ओर हाथ बढा दिया। मेरे लिए कर-मर्दन करनेके अतिरिक्त अब कोई अन्य उपाय ही न था और फिर गाँवके डाक्टरों और दवा-फरोशोंकी आपसमे शत्रुता भी तो नहीं हो सकती। कुत्ते तो मेरे पास अब भी हैं, पर घोडेको मैंने पादरी महाशयहीको दे डाला। गाडी चौकवे महोदयके लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। वह उनके काममें आती है और भिखारिनके रुपयोसे उन्होंने रेलवे-कंपनीके हिस्से मोल ले लिये हैं। अपने समस्त जीवनमें केवल यही सच्चा और शुद्ध प्रेम मेरे देखनेमे आया है।"

डाक्टर महोदयने इतना कहकर आँख उठाकर ऊपरकी ओर देखा। बुड्ढे मार्किसकी आँखोमे जल भरा हुआ था। उन्होने ठंडी साँस भरकर कहा— "प्रेम किस प्रकार किया जाता है, यह बात वास्तवमें केवल स्त्रियाँ ही जानती हैं।"

एलेकजैंडर

और दिनोंकी भाँति, उस दिन भी ऐलेकजैंडरने संध्याके चार बजे, लूलोंके बैठने योग्य तीन पहियोंवाली कुर्सी उस छोटेसे घरके द्वारपर लाकर खडी कर दी। डाक्टर महोदयके आदेशानुसार अपनी वृद्धा एवं अशक्त स्वामिनीको नित्य प्रति इसपर बैठाकर संध्याके छह बजे तक, घुमाना फिराना, उसका नित्यका कार्य था।

हलकी गाड़ीको, सीढियोंके पास इस प्रकारसे लगाकर, कि वृद्धाको बैठनेमें कष्ट न हो, वह घरमें घुसा और उसके वहाँ जाते ही एक वृद्ध सैनिकका भर्राता हुआ, क्रोधयुक्त स्वर, भीतरसे भर्त्सना करता हुआ सुनाई देने लगा, जो वास्तवमे पैदल सेनाके भूतपूर्व कप्तान, पेन्शन-भोजी, जोज़ेफ मैरेमबैलके मुखारबिंदसे निकल रहा था।

तदनन्तर कुछ कालपर्यंत किवाडोंको बलपूर्वक बंद करने, कुर्सियोंको सरकाने और जल्दीसे इधर उधर फिरनेका शब्द होनेके पश्चात्, वहाँ सन्नाटासा छा गया। फिर कुछ ही क्षण बीतनेपर, सीढ़ियाँ उतरनेमें घोर परिश्रम पडनेके कारण, अत्यन्त थकी हुई, श्रीमती मैरेमबैलको अपने समस्त बलसे सहारा दिये हुए एलेकजैंडर, पुनः पौलमें आता हुआ दिखाई दिया। लुढकनेवाली कुर्सीमें वृद्धाके सुखपूर्वक बैठ जानेपर भृत्य पीछेकी ओर हो गया और हत्तेको पकडकर, गाडीको ठेलता हुआ नदीकी ओर ले चला।

समस्त पुरुषोंके श्रद्धामय अभिवादनोंको स्वीकार करते हुए, यह दोनों इस छोटेसे नगरमें इस छोरसे उस छोर तक नित्य-प्रति इसी प्रकारसे निकलते थे और यह बंदनाएँ भी, स्वामिनी और भृत्य दोनोंहीके लिए होती थीं। कारण यह कि वृद्धाको तो समस्त जनता प्रेम और सम्मानकी दृष्टिसे देखती ही थी; परन्तु उसके साथ-ही-साथ, प्राचीन कुलपतियोंकी भाँति लंबी, तथा श्वेत दाढ़ी, रखनेवाला, यह वृद्ध सैनिक भी एक आदर्श नौकर समझा जाता था।

सड़कपर, जुलाईके सूर्यका प्रचंड प्रकाश इस समय अत्यन्त निर्दयता-पूर्वक पड़ रहा था। राहके दोनों ओर बने हुए छोटे-छोटे घर, घाममें भुन-से रहे थे और कुत्ते तक घरोंकी छायामें पडे हुए पटरियोंपर जहाँ तहाँ सो रहे थे। ऐसे कुसमयमें, दम फूल जाने पर भी, बेचारे एलेक्ज़ेंडरने नदी-की ओर जानेवाली छायायुक्त सडकपर जल्दीसे पहुँचनेके लिए तेज़ीसे चलना प्रारभ किया।

श्रीमती मैरेमबैल इस समय सो गई थीं और उनके सिरपर लगे हुए श्वेत छातेकी तानोंके कभी कभी लग जानेसे, उस सहिष्णु नौकरके मुखपर खुरेंचें हो जाती थीं। 'एलीद तिलेइयल' नामक छाया-युक्त सडकके आते ही, वृक्षोंकी छायामें श्रीमतीकी आँख खुली और उन्होंने कोमल स्वरसे कहा—"बेटा, धीरे धीरे चलो; ऐसी चालसे चलकर क्या मौत बुलानी है!"

नीबुओंके मंडलाकार वृक्षोंसे सर्वथा ढकी हुई इस राहके निकट ही, 'मावरो' नामक नदी सर्प-गतिसे 'विलो' नामक लताओंसे मंडित कूलोंके मध्य, वह रही थी।

नदीमें गर्जन करते हुए भँवर और चट्टानोंसे टकरानेके कारण क्षुद्र लहरोंके उडते हुए जल-कण, इस समय टहलनेमें, सुंदर गीतिकाओंका सा आनन्द और शुद्ध वायुमें शीतलताका संचार कर रहे थे। इस सुन्दर स्थलकी आर्द्र वायुमें अत्यन्त प्रसन्नतासे गहरे श्वास खीचनेके पश्चात्, श्रीमती मैरेमबैलने कुछ एक अस्फुट स्वरसे कहा—"अब मेरा चित्त तनिक ठिकाने लगा; परंतु उनका स्वभाव आज भी बिगड रहा था।"

"श्रीमतीजी ठीक कहती हैं, एलेक्जैंडरने उत्तर दिया।"

छत्तीस वर्षोंसे यह व्यक्ति इस दम्पति-युगलकी सेवा कर रहा था। सर्व प्रथम सेनामें अर्दलीके रूपसे सेवा करनेके अनंतर, मालिकोंको छोड़-नेकी चाह न होनेके कारण, सेनासे विच्छेद होनेपर, यह इनका निजी दास हो गया था; और गत छह वर्षोंसे तो अपनी स्वामिनीको कुर्सीपर बैठाकर, यह तीसरे पहर नगरकी तंग गलियोंमें होकर, इसी प्रकारसे नित्य प्रति ही आया जाया करता था। सुदीर्घ सेवा तथा नित्य प्रति सम्मुख रहनेके कारण, इस स्नेहमयी वृद्धा स्वामिनी, तथा स्वामिभक्त सेवकका कुछ एक गाढ़ परि-चय भी हो चला था।

ऊँच-नीचका विचार किये बिना, बराबरवालोंके समान, यह दोनों केवल घरेलू बातोंहीकी चर्चा किया करते थे; और उनके वार्त्तालाप तथा चिन्ताका प्रधान विषय भी सदा वही—कप्तान महाशयका—बुरा स्वभाव होता था। आरंभमे अत्यन्त आशाजनक दिखाई देनेपर भी उनकी सुदीर्घ नौकरीमें अंतकाल तक पदोन्नति न हुई, और बिना यश अथवा कीर्तिके, पति महाशयका जीवन यों ही समाप्त हो गया। यही बात उनके स्वभावको चिडचिड़ा बनानेमें दहीके जामन-सा कार्य करती थी।

“ आज तो वास्तवमें उनका चित्त प्रसन्न न था; नौकरी छोडनेके बादसे बहुधा उनकी यही दशा रहती है ”—श्रीमती मैरेमबैलने कहा।

स्वामिनीके विचारोंको मानो पूरा करनेके लिए ही, एलेकजैंडरने ठंडी सॉस भरकर कहा—“ आह! सत्यकी हत्या किए बिना ही, श्रीमतीजी यह भी कह सकती हैं कि यह तो नित्य प्रति ही होता है, और फौजकी नौकरी छोडनेसे पहले भी यही बात थी। ”

“ यह ठीक है: परंतु बेचारोंका भाग्य भी कैसा खोटा निकला। प्रारंभमें शौर्य प्रदर्शित करनेपर तो, उनको बीस वर्षकी अवस्थाहीमे ‘ लीजियन ऑफ आनर्स ’ सदृश उच्च पदक मिल गया था, परन्तु उसके पश्चात्, फिर पचास वर्षकी आयु पर्यन्त वह कप्तानके पदसे अधिक उन्नति न कर सके; और इस प्रकार, कम-से-कम कर्नल होकर पेंशन लेनेकी, उनकी पूर्वाभिलापा यो ही रह गई। ”

“ श्रीमतीजी यह स्वीकार करेंगी कि इसमें उन्हींका दोप था। यदि उनकी जीभ चाबुकके सदृश तीव्र न होती, तो उच्चपदाधिकारी, प्रेमसे उनके अधिकारोंकी कहीं अधिक रक्षा करते। कर्कशतासे तो कोई लाभ ही नहीं होता। उन्नतिके अभिलापियोको सदा औरोंको प्रसन्न करनेहीका प्रयत्न करना चाहिए। रही हमारे साथ व्यवहारकी बात, सो उसमें दोप हमारा ही है। हमको अब भी उनहीके सहारे रहना अच्छा लगता है; परंतु दूसरे इस व्यवहारको क्यो पसंद करेंगे ? ”

यह सुनकर श्रीमती मैरेमबैल सोचमें पड गई। आह! स्वामीकी इस क्रूरतापर वह कितने वर्षोंसे विचार कर रही थीं। वर्षोंकी बात है कि, अत्यन्त थोड़ी ही अवस्थामें इस प्रकार सम्मानित होनेवाले इस युवा अफ-

सरके साथ, जिसको संसार होनहार बताता था, इन्होंने मोहित हो विवाह कर लिया था। जीवनमें लोगोंसे कैसी कैसी गलतियाँ हो जाती हैं!

"हम यहाँ कुछ देरके लिए रुक जायँ तो अच्छा है, और इतने समयके लिए, मेरे गरीब एलेकज़ैंडर, तुम उस बैंचपर सुस्ता सकते हो" वृद्धाने अस्फुट स्वरसे कहा।

कुछ-कुछ कीडोंसे खाई हुई यह बैंच कुंज-गलीके मोडपर, रक्खी हुई थी, और इस ओर आते समय एलेकज़ैंडर सदैव यहाँ कुछ क्षणके लिए ठहरा करता था।

बैंचपर बैठकर अब वह अभिमानपूर्वक, अभ्यस्त चेष्टाके साथ, अपनी लंबी दाढीको मुट्ठीमें भरकर, हाथको उसके सिरेकी ओर धीरे-धीरे खिस-काने लगा, और फिर वहाँ पहुँचकर थोडी देरके लिए रुका, मानों पेटसे लगाकर, वह उसकी बाढ नापना चाहता था।

"विवाह होनेके कारण उनके अन्याय सहना मेरे लिए तो स्वाभाविक और उचित भी हो सकता है; परंतु अच्छे एलेकज़ैंडर, उनका अनुमोदन तुम किस लिए करते हो?"

वृद्धाके उपर्युक्त वाक्य सुनते ही उसने चौंककर कँधे हिलाए और कहा "आह! मेरी बात पूछती हो मालिकन?"

वृद्धाने कहा—"हाँ, और क्या! तुमको देखकर मुझे कई बार अचरज हुआ है। मेरे विवाहके समय भी तुम उनके अर्दली थे, और तब, उनकी सब कुछ सहनेके अतिरिक्त, तुम्हारे पास कुछ उपाय ही न था। परन्तु उसके पश्चात् हमारे यहाँ तुम किस कारण पडे रहे; हम तो वेतन भी बहुत थोड़ा देते हैं और तुमसे बर्ताव भी बहुत बुरा करते है। तुम चाहते, तो औरोंकी भाँति किसी स्थानपर बसकर विवाह भी कर सकते थे; और अब तक तुम्हारे बाल-बच्चे भी हो जाते।"

यह सुनकर उसने कहा—"आह मालिकन! मेरी तो बात ही जुदा है।"

इतना कहकर वह चुप हो रहा; परन्तु हाथ उसका अब भी दाढीपर वैसा ही चल रहा था, जिसको देखकर ऐसा बोध होता था कि मानो उसकी हृदयस्थ घंटी बज रही है, अथवा उसको बजानेके लिए वह रस्सी खींचनेका प्रयत्न कर रहा है। इस समय, आकुल पुरुषकी भाँति वह घूर्णित नेत्रोंसे चारों ओर देख रहा था।

श्रीमती मैरेमबैल जो अपनी ही विचार-धारामें बह रही थीं, अब यों बोलीं—"तुम तो किसान नहीं हो, और तुमने शिक्षा भी—"

बात अधूरी ही रह गई, और इसी बीच उसने गर्वसे यह उत्तर दिया "श्रीमती, मैंने जमीनकी पैमाइश (सर्वे) का भी काम सीखा था।"

"तो फिर हमारे पास रहकर तुमने अपने भविष्यका इस प्रकार क्यों सत्यानाश किया ?"

"बात तो यही है ! बात तो यही है ! यह मेरे स्वभावका ही दोष है !" उसने अस्फुट स्वरसे कहा।

"तुम्हारे स्वभावका इससे क्या संबंध है ?"

"देखिए, जब मेरा किसीसे स्नेह हो जाता है, तो मै उसीके यहाँ रह जाता हूँ; बस इतनी ही सी बात है।"

यह सुनकर वह हँसीं और बोलीं—"तुम यह तो न कहोगे कि मैरेम-बैलके सुन्दर स्वभावके कारण तुमने आजन्म यहींपर रहनेकी ठान ली है।"

प्रत्यक्ष रूपसे आकुल होकर, पहले तो वह कुछ क्षण तक बैंचपर इधर-उधर करवटें बदलता रहा, और फिर अपनी लंबी दाढीमेंसे धीरे-धीरे यह बडबड़ाने लगा—"वह तो—कारण—नहीं है; किंतु आप हैं।"

सुन्दर मुखवाली वृद्धा, जिसके श्वेत घुँघराले केशपाश मस्तक और शिरो-वेष्टनके मध्य हिम-रेखाकी भाँति चमक रहे थे, यह सुनकर, कुर्सीमें करवटें बदल, कुछ क्षणपर्यन्त नौकरकी ओर आश्चर्यभरी दृष्टिसे देख उच्च स्वरसे बोलीं—"मेरे ग़रीब एलेकजै़डर, यह क्यों कर हुआ ?"

भीरु पुरुष, गर्ह्य रहस्योंको स्वीकार करनेके लिए विवश किये जाने पर, जैसी चेष्टाएँ करते हैं; मैदानमें कभी इधर और कभी उधर दृष्टि दौडाकर, अपने मुखको इधर-उधर फेर, इस नौकरने भी, अब ठीक वैसा ही करना प्रारंभ कर दिया। और अंतमें—आज्ञा होनेपर बंदूकोंकी बाढके सम्मुख जानेवाले सैनिकके समान साहसकर उसने कह ही दिया "सुनिए, बात यों है कि लैफ़्टिनैण्ट महोदयका सर्व प्रथम पत्र श्रीमतीजीके पास लेकर जब मै गया, तो आपने मुस्कराकर मुझे एक फ्रैंक दिया था, बस उसीके कारण ऐसी व्यवस्था हुई है।"

नौकरकी बात भली भाँति न समझकर वृद्धाने कहा-"तनिक साफ साफ़ समझाकर कहो।"

मालिकनकी यह बात सुन, दोष स्वीकार करनेवाले अपराधीके समान सिसक-सिसककर नौकरने कहा—"श्रीमतीके प्रति मेरे हृदयमें कुछ भाव उदय हुए थे। बस, इतनीहीसी बात है।"

वृद्धाने यह सुन, कहा तो कुछ नहीं, पर उसकी ओर देखना बंद कर दिया, और अपना सिर झुकाकर वे कुछ सोचने लग गईं। यह स्त्री भली थी और धर्म, सौजन्य, ज्ञान तथा करुणा आदि गुण इसके चित्तमे कूट-कूटकर भरे हुए थे। इसी कारण, इस बेचारे निर्धनकी असीम भक्ति—जिसने पास रहनेकी अभिलाषासे बिना कुछ कहे सुने इतना महान् त्याग किया था—एक क्षणमें उनकी समझमें आगई और चित्त भर आनेके कारण वह रो-सी दी। तत्पश्चात् कोपके स्थानमें विषादयुक्त मुखमुद्रासे उन्होने कहा—"अब घरको लौटना चाहिए।"

आज्ञा होते ही वह उठा और पहियेदार कुर्सीको उस ओर ढकेलने लगा। गाँवके निकट आनेपर उनको कप्तान मैरेमवैल अपनी ओर आते दिखाई दिये, और इनका साथ होते ही लगे अपनी पत्नीसे कुछ क्रोधसे कहने—"रात्रिको आज क्या भोजन होगा?"

"भुने हुए मुर्गीके बच्चे।"

सुनते ही वह आगबबूला हो गये। मुर्गीके बच्चे! सदा मुर्गीके बच्चे ही मिलते हैं। पवित्र आत्माकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि इन मुर्गीके बच्चोंसे तो मेरा मन ऊब गया है। नित्य प्रति यही भोजन मिलता है, क्या इतनी बात भी तुम्हारे ध्यानमें नही आती?

"परंतु प्राणनाथ, तुम तो जानते ही हो कि डाक्टरका यही आदेश है। उन्होंने इसीको तुम्हारे लिए सर्वोत्तम कहा है। यदि तुम्हारा आमाशय ठीक होता, तो मैं अन्य बहुतसे ऐसे व्यञ्जन कर सकती थी, जिनका नाम लेनेमें भी अब भय लगता है।" पत्नीने शांत स्वरसे कहा।

उत्तर सुन झुंझलाकर अब वह नौकरके सिर हो गए, और लगे चिल्लाकर कहने—"अच्छा, यदि मेरा पेट ठीक नही रहता, तो यह इस पशुका दोष है। गत पैंतीस वर्षोंसे निखद्द भोजन बना-बनाकर यह मेरी देहमें विष उत्पन्न कर रहा है।"

श्रीमती मैरेमवैलने अब सहसा पूरी गर्दन घुमाकर नौकरकी ओर देखा। दोनोंके नेत्रोंका साक्षात्कार हुआ, और एक ही दृष्टिपातमें दोनोंने एक दूसरेको धन्यवाद दे डाला।

चोर

प्राकाश्यरूपसे किसी अन्य विषयपर विचार करते हुए प्रतीत होनेपर भी डाक्टर सौरबिये, उन आश्चर्यजनक डकैतियों और साहसिक कथाओंको किसी प्रसिद्ध पुस्तकसे उद्धृत कर सुनाई जानेवाली वृत्तान्त-मालाके समान दत्तचित्त हो चुपचाप सुननेके पश्चात्, सहसा उच्चस्वरसे यों कहने लगे:—
" डरे हुए मृगछौनेकी भाँति धड़कते हुए हृदयसे जब किसी बालिकाके निर्दोष ओष्ठ, प्रलोभनकारीके अधर-पल्लवोंका रस-पान करनेके लिए लालायित हो जाते हैं; और जब वह, अपने निर्मल यशपर अमिट कालिमा लग जानेके भयको सर्वथा भुलाकर, अपने पतन और भविष्यका तनिक भी विचार न कर विना सोचे समझे आत्म-समर्पण करनेपर उतारू हो जाती है; उस समय निर्बल अबलाके सतीत्वपर आक्रमण कर उसको भ्रष्ट करना और उसके क्षणिक दौर्बल्य तथा पागलपनका अनुचित लाभ उठाना इतना नीच कृत्य है कि इससे अधिक कुत्सित एवं जघन्य कार्य हो सकता है, यह बात मेरी समझहीमें नहीं आती।

" इन पापाचारोंको अज्ञात वैज्ञानिक प्रयोगोंकी भाँति शनैः शनैः धूर्ततापूर्वक चरम सीमा तक पहुँचानेवाला पुरुष, ऐसी समस्या उपस्थित हो जानेपर यदि पर्य्याप्त धैर्य्य और आत्मनिग्रहद्वारा अग्निशिखाको हिमवत् शीतल शब्दोंद्वारा शान्त नहीं करता; अथवा जो उचित मात्रामें विवेचन शक्ति न होनेके कारण; आत्मनिष्ठाके अभावसे अन्तर्वासी पशुवृत्तियोंका दमन करनेमें अशक्त है—और कगारके सिरेकी ओर दौड़नेवाली बालिकाको न रोककर हतबुद्धि पुरुषके समान नीचे खडमें गिरने देता है, वह पुरुषाधम भी ताला तोड़नेवाले, अथवा सूने एवं अरक्षित घरमें घुसकर चोरी या अन्य दूषित क्षुद्र कृत्य करनेवाले धूर्तकी भाँति ही नीच है। ऐसे पुरुषोंकी गणना मैं उन्हीं बदमाश डाकुओंमें करता हूँ कि जिनके आश्चर्यजनक वृत्तान्त आपने हम लोगोंको अभी सुनाये हैं।

"अपराधके गुरुत्वको कम करनेवाली परिस्थितियोंके होते हुए भी, मैं ऐसे पुरुषको दोषमुक्त नहीं समझता। मेरी सम्मतिमें उसकी उस समय भी उतनी ही जिम्मेदारी रहती है। प्रेम-लीला जैसे भयंकर खेलमें तो मनुष्य उचित और अनुचित निर्णयके प्रयत्न तकमें असफल हो जाते हैं। टैनिसके खेलकी भाँति यहाँपर भी सीमाके अन्दर रहनेका प्रयत्न सर्वथा व्यर्थ होता है; परन्तु मैं फिर भी उनको उतना ही दोषी समझता हूँ। इसकी ठीक विपरीत दशामें भी जब कि कोई ऐसी प्रौढा, हृदयहारिणी, दुर्लभ बालिका भाग्यसे अथवा अभाग्यसे मनुष्यकी प्रतिद्वन्द्विनी हो जाती है, जो तुरन्त ही यह जता देती है कि वह प्रेमके अन्तिम अध्यायको पढ़नेके अतिरिक्त अन्य कुछ भी सीखना नहीं चाहती, (मनोविज्ञानसम्बन्धी एक उपन्यास-लेखकद्वारा दिए हुए 'अर्ध-कन्या' नामवाली इन बालिकाओंसे विधाता हमारी सन्तानोंकी रक्षा करे) तो ऐसी कन्याका सामना हो जाने पर भी, मै पुरुषको कम अपराधी नहीं समझता।

"मानव-स्वभावमें निन्दनीय, एवं अतुलस्पर्शी मिथ्याभिमानके उचित मात्रामें वर्तमान रहनेके कारण महात्मा यूसुफ़का अनुकरण कर इन दहकते हुए मनोहर अंगारोंको न कुरेदना, तथा मूर्खवत् इस ओरसे अपनी ऑखें फेरना और यूनानी दन्तकथाओंमें वर्णित यूलैसीज़के साथियोंकी भाँति साइरन नामक अप्सराओंका मधुर संगीत सुन, आकृष्ट होनेपर कानोंमें मोम भरना भी, अत्यन्त ही कठिन एवं दुःखदायक है, यह मैं मानता हूँ। नवीन वस्त्राच्छादित मेज़पर आमन्त्रित होकर किसी व्यञ्जनात्मक वाणीद्वारा विशेष आग्रह किये जानेपर, केवल मेज़के परिधानके स्पर्श और सुस्वादु एवं अविस्मार्य मदिरासे ही ओष्ठोंकी तृषा शांत करना कितना दुस्तर कार्य्य है! परन्तु आसक्तिरूपी पिशाचके उतरते ही यथार्थ रूप प्राप्त होनेपर, ठंडे मस्तिष्कसे यदि मनुष्य आत्मविश्लेषणद्वारा इन अपराधोंके गुरुत्वको तौले, और फिर उनके फलाफल, प्रतिपीडन और भविष्यमें शेष जीवनकी सुख-शान्तिको, सदाके लिए भंग करनेवाले क्लेशोंपर, विचार करे, तो ऐसे अवसरोंपर आत्मनिग्रह करना, वह अवश्य ही कहीं अधिक श्रेयस्कर समझेगा।

"मुझ जैसे श्वेत दाढीयुक्त बूढेकी सदाचारसम्बन्धी इन आलोचनाओंकी

जडमें छिपी हुई कथाका तुम लोग यों ही अनुमान कर सकते हो, और मुझको विश्वास है कि दुःखद होनेपर भी अद्भुत शौर्य प्रदर्शित किये जानेके कारण तुमको वह परम रुचिकर लगेगी।"

स्मृतिमें कथानकको यथाक्रम स्थित रखनेके लिए, मानों वह फिर कुछ क्षणके लिए मौन हो गये। तदुपरान्त आराम-कुर्सीके हत्थोंपर अपनी कुहनी टेककर, नेत्रोंसे शून्यकी ओर देखते हुए, कक्षाके विद्यार्थियोंके सम्मुख, रोगीकी शय्याके निकट खडे, किसी मेडिकल स्कूलके प्रोफेसरकी भाँति मन्द स्वरसे उन्होंने, यह कहना प्रारम्भ किया—

"हमारे पितामहोंके शब्दोंमें, उसकी गणना उन पुरुषोंमें की जानी चाहिए कि जिनको कभी कठोर-हृदया स्त्रीका साक्षात्कार ही नहीं होता। यह पुरुष देश विदेश घूमनेवाले मध्यकालीन योद्धाओंके कुछ एक अनुरूप था और स्वभावसे आंशिक धूर्त्त होनेपर भी भयको अत्यन्त ही तुच्छ समझता था। इसका शौर्य्य कभी कभी अविवेककी सीमा तक पहुँच जाता था। विषय-भोगके पथका यह अत्यन्त उत्साहके साथ अनुसरण करता था। इसके शरीरमें कान्ति भी इतनी अधिक थी कि औरोंका मन बरबस अपनी ओर खींच लेती थी। मर्य्यादातिक्रम करनेपर भी, जिनके कृत्योंको संसार स्वाभाविक ही समझता रहता है—यह पुरुष भी उन्हींमेंसे था। द्यूतक्रीड़ा और सुन्दर युवतियोंपर अपनी समस्त सम्पत्ति गँवानेपर भी, यह भाग्यका धनी बना हुआ था। जिस समयकी बात अब मैं कहने चला हूँ, उस समय यह वरसायलेमें रहता था, और येनकेन प्रकारेण, अपने लिए प्रमोदके साधन जुटा लेता था।

"उसके शिशुवत् स्वच्छ एवं परीक्षणयोग्य अन्तस्तलकी एक एक बातका मुझे पता था। और कपटी, परन्तु चाटुकार भतीजेके समान, यह युवा उस समय बूढ़े एवं अविवाहित चचाकी भाँति मेरा स्नेह-भाजन बना हुआ था। वह मुझसे परामर्श तो न लेता था, परन्तु अपने मित्रोंकी कथा वर्णन करनेके बहाने अपना ही समस्त वृत्तान्त रत्ती रत्तीभर मुझको सुना देता था। यहाँतक कि उसकी क्षुद्रसे क्षुद्र कुचेष्टाएँ भी मुझसे छिपी न थीं। उसकी तरुणवयस्क-प्रचण्डता, प्रमत्तोल्लास और कौतूहलोत्पादक कामुकताके कारण चित्तवृत्तिके दोलायमान हो जानेपर, कभी कभी तो मैं भी उस हृष्ट पुष्ट

युवासे मन-ही-मन ईर्ष्या करने लगता था और जीवनको विलासतामें इस प्रकारसे नष्ट करते देखकर, उसको कुचेष्टाओसे हटाकर, सन्मार्गपर लाने और आँखमिचौनी खेलनेवाले बालकोंकी भाँति, ' होशियार हो जा ' कहनेका भी मुझे साहस न होता था।

"कभी न समाप्त होनेवाले, कौटिलौन (फ्रांसीसी नृत्यविशेष) के अन्तमें—जहाँ कि घंटोंतक भाग लेनेवाले स्त्री-पुरुष, विना एक दूसरेसे प्रेम किये हुए ही, बिदा हो जाते हैं और कोई उनकी ओर लक्ष्य करनेका प्रयत्न तक भी नहीं करता—उस बेचारेको एक दिन यह पता चला कि वास्तविक प्रेम क्या पदार्थ है। प्रत्येक हृदय और मस्तिष्कपर सगर्व अधिकार जमाकर स्वच्छन्द—नहीं नहीं, दुष्ट शासककी भाँति,—प्रेम किस प्रकार अपना कठोर शासन करता है, यह बात उसको अब स्पष्टतया अनुभूत होने लगी, और उसने अपनेको एक अत्यन्त सुन्दर, परन्तु बुरी तरह पालन-पोषण की हुई बालिकाके प्रेम-पाशमें, बेढब फँसा हुआ पाया। कहना न होगा कि इस बालिकामें चाञ्चल्य और भावुकता दोनों ही अपने सौन्दर्यके समान बढ़े-चढे थे।

"बाला उससे प्रेम करती थी, यह न कहकर कहना चाहिए कि उसने अपनी समस्त देह और आत्मा तकको, अपने प्रेमाराध्यके लिए अर्पण कर रक्खा था। वह उसके पीछे पागल-सी हो रही थी। अदूरदर्शी एवं चञ्चल मनोवृत्तिवाले माता-पिताने, एक तो उसको वैसे ही स्वेच्छाचारिता दे रक्खी थी, दूसरे ' कौनवेन्ट ' (खीष्टधर्मीय मठ नामवाली) पाठशालामें अनुचित मैत्री हो जानेके कारण, वह वात-रोगसे पीडित रहती थी। इन दोनों बातोंके साथ ही साथ, जो कुछ वह अपने चारों ओर होते हुए देखती और सुनती थी, उसने और भी उसके स्वभावमें, सोनेमें सुहागेका काम किया था। मिथ्या एवं कपटपूर्ण आचरण होनेपर भी बाला यह तो भली भाँति जानती ही थी कि कुलका मिथ्याभिमान करनेवाले उसके अत्यन्त लोलुप माता-पिता, केवल काल्पनिक विचार और ऋणरूपी सम्पदा रखनेवाले उस मध्यमवर्गीय युवासे कि जिसको वह अपना हृदय अर्पण कर चुकी थी उसका विवाह कभी न होने देंगे; परन्तु इन सन्देहात्मक संकल्प-विकल्पोंको एक ओर फेंक, इनका ध्यान तक भुला, फलाफलपर विचार किये

विना ही, वह मन वचन और कर्मसे उसीकी सहधर्मिणी होनेका दृढ़ निश्चय कर बैठी।

"तदुपरान्त धीरे धीरे, उस अभागे मनुष्यका आत्मिक बल भी जाता रहा। उसका हृदय पिघल गया, और वह भी थपेड़े मारनेवाली, प्रबल प्रवाहमयी, उस प्रेमरूपी नदीमें कूद पड़ा। परन्तु वह तो कुछ काल तक प्लावित करनेके उपरान्त पुनः तिनके अथवा लावारिस मालकी भाँति उसको किनारे पर ही पड़ा हुआ छोड़कर आगेको निकल गई।

"पागलपनकी बातोंसे भरे हुए पत्र भी, यह दोनों, अब एक दूसरेको लिखने लगे थे और शायद ही कोई ऐसा दिन होता होगा कि जब चलते-फिरते, राहमें, पार्टियोंमें अथवा नृत्यमें ही, इन दोनोंकी प्रकाश्यरूपसे आकस्मिक भेंट न हो जाती हो।"

डाक्टर महाशय इतना कहकर तनिक रुके, और पूर्वकालीन क्लेशोंके स्मरणसे, उनके नेत्रोंमे आँसू भर आये। आगे कही जानेवाली भयानक कथाके द्योतक, भर्राये हुए स्वरसे उन्होंने अब यों कहना प्रारम्भ किया—

"फिर महीनों तक, यह रहा कि वह उपवनकी दीवार फाँद, अपना साँस रोक, प्रत्येक आहटका ध्यान रख, घर तोड़ भीतर घुसनेवाले चोरकी भाँति, नौकरोंके द्वारसे— जिसको बाला स्वयं, पहलेहीसे, खोल रखती थी— भीतर घुस जाता था और वहाँसे नंगे पैर, अलक्षित रूपसे लम्बी गैलरीमें होकर, कभी कभी चर्रा उठनेवाले चौड़े जीने द्वारा दूसरी मंजिलमे, अपनी प्राणप्रियाके कमरेमे घुसकर घंटों वहीं बैठा रहता था।

"एक दिन अपेक्षाकृत अधिक अँधेरी रातमें, नियत समयपर पहुँचनेकी व्यग्रताके कारण, वह बराबरके कमरेमें रक्खी हुई कुर्सियोंसे टकरा गया, जिससे वह धड़ाकेसे गिर पड़ी। समयकी बात है कि भयानक शिरःपीड़ा अथवा देरतक उपन्यास पढ़नेके कारण, बालिकाकी माता तबतक जाग रही थी। घरकी निस्तब्धताको भंग करनेवाले इस शब्दको कुसमयमे सुननेके कारण वह घबराकर शय्यासे नीचे कूद पड़ी। फिर द्वार जो खोला, तो अस्पष्ट रूपसे क्या देखती है कि दीवारके सहारे कोई पुरुष भागा जा रहा है। यह समझकर कि मकानमे चोर घुस आया है, उसने भयानक आर्त्तनाद करके नौकरों और अपने पति तकको जगा दिया। अभागे मनुष्य-

पर अब आफ़त आ गई। अपनी संकटावस्थाको भली भाँति समझकर, अपनी आराध्य देवीपर कलंक लगानेकी अपेक्षा नराधम चोर बनना उसने कहीं अधिक अच्छा समझा और अपना पार्ट पूरा करनेके लिए, वह पुन. गोल कमरेमें घुसा और मेजोंको टटोलकर जो कुछ भला बुरा हाथोंमें आया वह सभी, अपनी जेबोंमें भरकर, एक बड़े कमरेके कोनेमें रक्खे हुए पियानोके पीछे जा बैठा।

"परन्तु नौकर-चाकरोंने मोमबत्तियाँ जलाकर उसको वहाँसे भी गर्दनिया देकर बाहर ढूँढ निकाला और फिर गालियोंकी वर्षा करते हुए भय और लज्जासे काँपते हुए, मृतप्राय बन्दीको पकडकर, वे सबसे निकटके थानेमें ले, गये। मुकदमा चलनेपर उसने जान-बूझकर अत्यन्त ही भद्दी सफाई पेश की और अत्यन्त आत्मनिष्ठाके साथ इतनी सुन्दरतासे अपना अभिनय किया कि हृदयमें छिपी हुई पीड़ा और निराशा अणु मात्र भी प्रकट न होने पाई। इस प्रकार दण्डित और अपमानित होनेपर, उसने सैनिकवत्—क्योंकि वह स्वयं एक ऑफिसर था—अपनेको पूर्णतया बलिदान कर दिया और अनिष्टकारक कृमिरूप अपराधीके समान—जिससे समस्त सभ्य संसार पीछा छुडाना चाहता है—वह विना किसी विप्रतिपत्तिके कारावासमे चला गया।

"खिन्न-आत्मा हो जानेके कारण, फिर उसकी वहाँ महान् दुःखके साथ मृत्यु हो गई। परन्तु मरते समय भी—जिसके लिए उसने अपना बलिदान किया था—उसी प्रतिमावत् पूज्या, सुकेशीका नाम पवित्र मन्त्रकी भाँति उसकी रसनापर धरा हुआ था। अन्तिम अभिलेप करनेवाले पुरोहित (पादरी) ने जब उसकी वसीयत—जो मेरे देनेके लिए उसको दी गई थी—मुझको दी, तो मैंने देखा कि विना किसीका नाम निदर्शन किये हुए और विना किसी रहस्योद्घाटनके, उसने इस समस्याको किस प्रकार सुन्दर विधिसे सुलझाया था और अन्तिम श्वासपर्य्यन्त सदा सिरपर रहनेवाले भयंकर आरोपोंके बोझको, किस प्रकार सर्वथा निर्मूल करके फेंक दिया था।

"उस सुन्दरीने फिर क्यों अपना विवाह किया और अपनी सुन्दर सन्तानोका पूर्वकालीन पवित्रताके साथ क्यों इतनी कडाईसे लालन-पालन किया' इसपर सदैव विचार करते रहने पर भी यह समस्या आजपर्य्यन्त मेरी समझमें नहीं आई।"

अविश्वास

"प्यारी सखी, तुमने मुझसे अपने जीवनकी अत्यन्त अद्भुत स्मृति सुनानेको कहा है। मैं अब अत्यन्त बूढ़ी हो गई हूँ; मेरे अब न तो कोई संतान ही है और न कोई कुटुंबी, अतएव अपने हृदयकी बात स्वतंत्रतापूर्वक कहना मेरे लिए संभव है। परंतु मेरा नाम किसीसे प्रकट न करना, तुमसे केवल यही प्रतिज्ञा कराना चाहती हूँ।

"मैं कई बार प्रेम कर चुकी हूँ और जैसा कि तुम जानती हो मेरे प्रेमी भी बहुत-से थे। अपना समस्त रूप नष्ट हो जानेपर भी मैं आज यह कह सकती हूँ कि किसी समय मैं अत्यन्त ही रूपवती थी। शरीरके लिए जिस प्रकार वायु अत्यन्त आवश्यक है, उसी प्रकार आत्माको जीवित रखनेके लिए प्रेम भी मुझको अनिवार्य प्रतीत होता था। निरंतर मेरा ही ध्यान करनेवाले, किसी भी प्रेमीका अस्तित्व न होनेपर, अनुरागहीन जीवनकी अपेक्षा, तब मैं प्राण विसर्जन करना ही अधिक श्रेयस्कर समझती थी। सच्चे हृदयसे—जी भरकर—समस्त जीवनमें केवल एक बार ही प्रेम हो सकता है; यह मैं बहुतसी स्त्रियोंको कहते हुए सुनती हूँ। परन्तु मैं, कई बार ऐसे गाढे प्रेममें फँस चुकी हूँ कि मेरे ध्यानमें उसका अन्त ही न आता था; परन्तु काठ न रहनेपर अग्निकी भाँति, मेरे वह भाव अब स्वाभाविकतया नष्ट हो गये हैं।

"अन्य समस्त घटनाओंकी मूल प्राथमिक घटना ही मैं आज तुमको सुनाती हूँ; परन्तु मैं इसमें सर्वथा निर्दोष थी। पैकके उग्र पंसारीकी वह दारुण प्रतिहिंसा मुझको उस संक्षोभकारक नाटककी स्मृति दिलाती है कि जिसमें मैं भी बरबस दर्शक बनाई गई थी।

"'ब्रेटन' के प्राचीन वंशके 'काउंट हर्वे द कैर' नामक एक धनाढ्य पुरुषसे मेरा एक वर्ष पूर्व विवाह हुआ था; परन्तु यह जाननेकी बात है कि इन पति महोदयसे मैं तनिक भी प्रेम न करती थी। सत्यप्रेम—विशुद्ध प्रीति—के लिए

मै, स्वेच्छाचारिता और प्रतिबन्ध, दोनोंका, एक ही समय होना अनिवार्य समझती हूँ। धर्मद्वारा अनुमोदित और स्थापित तथा पुरोहितोंके आशीर्वादयुक्त प्रेमको हम क्यों कर वास्तविक प्रेम कह सकते हैं? धार्मिक चुंबन चोरीसे लिये गये चुंबनकी भाँति सुन्दर नहीं होते। मेरे स्वामीकी देहयष्टि लम्बी तथा सुन्दर थी; और उनके आचरण भी वास्तवमें सर्वथा भद्रोचित ही थे। परन्तु यह सब होते हुए भी बुद्धिका उनमें सर्वथा अभाव था। उनकी बात स्पष्ट और सम्मति तीव्र होती थी। उनका मन उन पूर्वनिश्चित विचारोंसे ही भरा हुआ था, जो उनके माता-पिताने अपने पुरखाओंसे प्राप्त कर उनके मस्तिष्कमें घुसा दिये थे। बिना सोचे समझे कि पदार्थोंको देखनेके अन्य बहुतसे दृष्टि-कोण भी हो सकते हैं; वह बिना हिचकिचाए अपने सकीर्ण विचारोंको बेधडक कह डालते थे। उनका मस्तिष्क ऐसी दृढतापूर्वक बंद किया हुआ दीखता था कि उसमें विचारोंको परिभ्रमण करनेकी तनिकसी भी गुंजाइश न थी, तब फिर खुले हुए द्वारयुक्त घरकी भाँति उसको अधिक स्वास्थ-प्रद बनानेवाले शुद्धवायुसम नवीन विचारोंके प्रवेशकी तो कथा ही क्या थी।

"देहातमें, हमारा घर निर्जन स्थानमें बना हुआ था; और उस विशाल निष्प्रभ इमारतके चारों ओर बडे बड़े वृक्षोंकी फुनगियोंपर लगी हुई शैवाल वृक्षोंकी श्वेत दाढ़ीका स्मरण दिलाती थी। हमारे वनोपम उपवनके चारों ओर खाई खुदी हुई थी और उस छोरपर पनियर धरतीके निकट नरकुल और पानीपर तैरनेवाली घाससे भरा हुआ हमारा एक बहुत बडा तालाब था। इसके अतिरिक्त खाईको तालाबसे मिलानेवाली एक नदीके तटपर जंगली कलहंसोंका आखेट करनेके लिए मेरे पतिने एक झोपड़ा भी बनवा लिया था।

"साधारण भृत्य-समूहके अतिरिक्त मेरे पतिपर प्राणसे भी अधिक भक्ति रखनेवाला एक पशूपम वनरक्षक, और मुझसे अत्यन्त स्नेह रखनेवाली सखी-तुल्य एक शयन-परिचारिका भी हमारे यहाँ थी, जिसको मैं स्पेनसे लौटते समय पाँच वर्ष पूर्व ही अपने साथ उस देशसे ले आई थी। वह बिना विवाहकी संतान थी। उसकी भूरी देह, काले नेत्र और लकड़ीके समान

मोटे और सदा माथेपर फहरानेवाले केशोंको देखकर उसके मिस्रदेशीय जिप्सी होनेका भान होता था। सोलह वर्षकी अवस्था होनेपर भी वह बीस वर्षकी जँचती थी।

" शरत्कालका प्रारंभ हो गया था। आखेट करनेवालोंकी टोलियाँ पड़ौसमें और कभी कभी हमारे यहाँ भी आकर उतरने लगीं थीं। इनमें ' वैरन देक ' नामक एक युवा व्यक्ति भी थे, जो हमारे घरपर बहुधा आया करते थे; परन्तु कुछ काल पश्चात् इन्होंने आना छोड़ दिया था और मैं इस बातको सर्वथा भूल भी गई थी। परन्तु मैंने इसी समय स्वामीका अपने साथ कुछ बदला हुआ वर्त्ताव देखा।

" इस समय वह बहुधा मौन और अपने ही विचारोंमें मग्न रहते थे। उन्होंने मेरा चुंबन करना तक छोड़ दिया था। कभी कभी अकेले ही काल-यापन करनेकी इच्छासे मेरे दृढ़तापूर्वक पृथक्वास-स्थान प्राप्त करनेपर वह उसमें आते तो न थे, परन्तु रात्रिके समय मुझे अपने द्वारके निकट दबे पाँवकी आहट आती हुई, और फिर कुछ ही क्षणोपरान्त लोप होती हुई, बहुधा सुनाई देती थी।

" वास-स्थानके प्रथम खंडहीमें खिड़की होनेके कारण, घरके निकट छायामें कुछ छिपकर किसीके घूमनेका शब्द भी मुझको बहुधा सुनाई देता था, जिसकी चर्चा मैंने स्वामीसे भी की थी; परंतु कुछ क्षणपर्यन्त मेरी ओर आँख गड़ाकर देखनेके पश्चात् उन्होंने केवल यही उत्तर दिया था कि ' कोई बात नहीं है—वह तो चौकीदार है। '

" एक दिनकी बात है कि संध्या समय भोजनके पश्चात् ' हर्वे ' ने—जो असाधारण रूपसे प्रसन्न दीख पडते थे—शनैश्चरकी भाँति मुस्कराकर मुझसे कहा—' क्या तुम बंदूक लेकर तीन घंटे तक मेरे साथ आखेटमें रह सकती हो ? मैं एक लोमडीको मारा चाहता हूँ, जो प्रत्येक रात्रिको मेरी मुर्गियाँ खा जाती है। '

" यह सुनकर मैं प्रथम तो आश्चर्यमें पड़ गई और हिचकिचाई भी; परन्तु उनको एक अपूर्व आग्रहके साथ अपनी ओर घूरते हुए देखकर मैंने भी अन्तमें यही उत्तर दिया—' प्यारे, मैं अवश्य चलूँगी। ' यहाँपर यह बता देना

उचित होगा कि भेड़ियों और जंगली सुअरोंका, मैं भी पुरुषोंहीकी भाँति सुगमतासे आखेट कर सकती थी, अतएव स्वामीका मुझसे आखेटके लिए कहना स्वाभाविक था। परन्तु आश्चर्य तो यह था कि पतिके नेत्रोंमें उस समय सहसा भयका संचार होने लगा था; और उस दिन सम्पूर्ण संध्या-कालपर्यन्त वह रोगियोंकी भाँति वारम्वार उठते बैठते ही रहे। दस बजेके लगभग वह सहसा मेरे पास आये और बोले—क्या तुम तयार हो ?

"यह सुनते ही, मैं उठ खड़ी हुई और अपनी बंदूक स्वयं उनको लाते हुए देखकर मैंने पूछा—'सीसेकी बडी गोली भर लें या हिरणके मारने योग्य छर्रेंहीसे काम चल जायगा ?' इसपर वह कुछ अचम्भेमें आ गये; परन्तु शीघ्र ही सँभलकर यों कहने लगे—'आह, केवल हिरणको मारने योग्य छर्रेंसे ही काम चल जायगा, तुम कुछ संशय मत करो।'

"अभी, कुछ ही क्षण बीते थे कि उन्होंने एक सर्वथा विचित्र स्वरसे यह कहा—'अपनी इस अपूर्व स्थिरचित्ततापर तुमको गर्व होना चाहिए।'

"यह सुनते ही मैं खिलखिलाकर हँस पडी और बोली—'मुझको ? क्यों ? कारण तो बताओ ? लोमडीके शिकारमें स्थिरचित्तताकी बात भी खूब कही ! समझमें नहीं आता कि तुम्हारा इससे आशय क्या है ?'

"इसके पश्चात् हम, चुपचाप अपने उपवनमें होकर चल दिये। घरके समस्त प्राणी इस समय सो रहे थे। इस निरालोक प्राचीन वास-स्थानमें, स्लेट नामक पत्थरकी बनी हुई चमकती छतें, पूर्णचन्द्र-प्रकाशमे कुछ एक पीलीसी दृष्टिगोचर हो रही थीं और पार्श्वभागीय प्रासाद-शिखरोंकी अत्यंत उच्च कक्षाएँ भी चाँदनीके प्रकाशमें नहा-सी रही थीं। सुंदर परन्तु विषादमय रात्रि, निस्तब्धताके इस अखंड राज्यके कारण ऐसी नीरव एवं मधुर होते हुए भी, मरणासन्न मूर्छित दशामें पडी हुई-सी प्रतीत होती थी। वायुमंडल भी अब सर्वथा निःशब्द था; उसमे न तो मेंढ़कोंकी टरटर ही सुनाई देती थी, और न उल्लुओंकी घुत्कार। इस उद्वेग-कारक सुषुप्तिसे, समस्त प्रकृतिका इस समय मानो दमसा घुट रहा था। फिर उपवनमें, पेड़ोंके निकट पहुँचनेपर हिमसम ठंढी वायुद्वारा गिरे

हुए पत्तोंकी गंध आने लगी। आखेटका भूत सिरसे पैरोंतक सवार होनेके कारण मेरे स्वामी मौन होनेपर भी इस समय चारो ओर ऐसी सतर्क दृष्टिसे देखते हुए कानोंको खोलकर चल रहे थे कि देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि उनको शायद छायाहीमें कहीं शिकारकी बू आ रही थी।

इसके पश्चात् हम शीघ्र ही तालोंके निकट पहुँच गये। उनके तटोंपर लगे हुए मोथेके पेड़ तो सर्वथा निश्चल खड़े थे। वायुकी गति न होनेके कारण उनका पत्ता तक न हिलता था; परन्तु जलमें तनिकसा भी क्षोभ होनेपर लहरोंमें असीम रूपसे उत्तरोत्तर बढनेवाले वर्त्तुलाकार वृत्त पडने प्रारंभ हो जाते थे।

" जहाँ बैठकर मृगयाकी प्रतीक्षा करनी थी, उस झोंपड़ेके निकट पहुँचते ही स्वामी मुझसे भीतर घुसनेके लिए कहकर, स्वयं बंदूक भरने और घोडा खड़खड़ाने लगे, जिसका मेरे हृदयपर अत्यंत ही अद्भुत प्रभाव पड़ा। मुझको इस प्रकार कॉपते देखकर वह यह कहने लगे—' यह परीक्षा ही शायद तुम्हारे लिए पर्य्याप्त दीखती है? यदि ऐसा है, तो तुम लौट न जाओ?'

" इसपर अचंभेमें आकर मैंने यह उत्तर दिया—' क्या कहते हो? मुझपर तो इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पडा है। मैं विना कुछ किए हुए, लौट—केवल लौट जानेके लिए ही यहॉ नहीं आई हूँ। न मालूम आज संध्यासे तुम ऐसी ऐसी अद्भुत बातें किस कारण कह रहे हो।'

" 'अच्छा, फिर जैसी तुम्हारी मर्जी' इतना बुड़बुड़ाकर, वह बिना हिले-डुले चुपचाप अपने स्थानपर जा बैठे।

" फिर लगभग आधा घंटे पर्य्यन्त शरदृतुकी शुभ्र एवं विषादमयी ज्योत्स्नाकी निस्तब्धता, जब किसी प्रकारसे भी भंग न हुई, तो मैंने मंद स्वरसे पूछा—' क्या तुमने भली भॉति निर्णय कर लिया है कि वह इसी राहसे होकर आती है?'

" यह सुनते ही पहले तो ' हवें ' इस प्रकार चौंके, मानो उनको किसीने काट खाया है और फिर अपना मुख मेरे कानके पास लाकर बोलेः—' मैंने खूब निश्चय कर लिया है। तुम ठीक जानो।'

" इसके पश्चात् वहाँ, फिर सन्नाटा छा गया। मैं समझती हूँ, कि इसके अनंतर मै कुछ ऊँघ सी रही थी कि स्वामीने मेरी बाँह बलपूर्वक पकड-

कर सर्पकी भाँति फुंकारते हुए कहाः—'उस ओर पेडोके नीचे क्या वह तुमको दिखाई देता है?'

"मेरा देखना व्यर्थ हुआ; क्योकि अंधकारके कारण मैं कुछ भी न चीन्ह सकती थी, और हर्वेने, इसी समय अपनी आँखोंसे मुझको घूरते रहनेपर भी, धीरे धीरे बंदूक उठा घोडा ठीक कर लिया।

"मैं अब निशाना लगाने और बंदूक छोडनेके लिए तयारी कर ही रही थी कि हमसे तीस कदमकी दूरीपर पूर्णचन्द्रके प्रकाशमें, मुझको सहसा एक पुरुषकी छाया दृष्टिगोचर हुई; यह व्यक्ति देह झुकाए हुए लपककर आगे बढ़नेका सा प्रयत्न कर रहा था।

" इसको देखते ही, मैं घबराकर चौंक उठी; परंतु, मेरे मुख फेरनेसे प्रथम ही मेरी आँखोंके सामने कुछ बिजलीसी चमकी और धड़ाका हुआ, फिर गोली लगते ही, भेड़िएकी भाँति, एक पुरुष धरतीपर लोटने लगा।

"इस समय मारे भयके मेरे होश तक उड गये थे और मैं भयानक रूपसे चिल्ला रही थी। तत्पश्चात् एक बलवान् हाथने—जो वास्तवमें हर्वेका था—पहले तो मेरा गला दबोचकर मुझको धराशायी कर दिया और फिर अपनी बलिष्ठ भुजाओंद्वारा उठाकर शीघ्रतापूर्वक घासपर पड़े हुए शवपर भरपूर वेगसे दे मारा, मानों मेरा सिर ही फोडना चाहते हों।

"उस समय मुझको अपनी जीवन-लीला समाप्तप्राय दृष्टिगोचर होती थी, और वास्तवमें, मेरा अन्त करनेके लिए उन्होंने अपनी एड़ी भी मेरे मस्तककी ओर उठा ली थी, कि इतनेमें किसीने उनको पकड़कर धक्का दे, इतनी शीघ्रतासे धरतीपर गिरा दिया कि मैं भी इस घटनाको ठीक ठीक न समझ सकी।

" सहसा मुक्त होते ही वहाँसे उठनेपर मैंने देखा कि 'पैकिटा' नामक मेरी वही परिचारिका अब मेरे स्वामीके शरीरपर घुटने टेककर झुकी हुई थी और जंगली बिल्लीकी भाँति लिपटी हुई अपनी समस्त शक्तिसे उनकी मूँछ, दाढी तथा चेहरेका माँस नोच रही थी।

" इसके उपरान्त, फिर न जाने क्या सोचकर वह सहसा उठ खडी हुई, और शवके ऊपर गिरकर मृतकको अपनी भुजाओंसे लिपटाकर उसकी आँखों और मुखको अधरोंके स्पर्शद्वारा इस प्रकार चुंबन करने लगी कि

देखकर यह बोध होता था कि उसको वहाँ श्वासकी प्रगति तथा प्रियतमके सुदीर्घ चुंबनकी बलवती आशा बनी हुई है । स्वामी अपने वस्त्र झाड़कर, मेरी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते हुए खड़े हो गये । अब सब बातें भली भाँति समझमें आ जानेके कारण वह मेरे पैरोंपर गिरकर कहने लगे—'ओह प्यारी, मुझको क्षमा करना; तुम्हारे ऊपर सन्देह करके मैंने इस लड़कीके प्रेमीको मार डाला । इस सम्बन्धमें मेरे चौकीदारने ही मुझको धोका दिया । '

" परन्तु मैं तो उस समय मृतकके अद्भुत चुम्बनों और जीवित स्त्रीकी नैराश्यमय प्रेम-सिसकियोंको तथा मर्मान्तक पीड़ाओंको ध्यानपूर्वक देखनेमे लगी हुई थी ।

" मैंने उसी क्षण अपने स्वामीके साथ विश्वासघात करनेका निश्चय कर लिया । "

दहेज

खा़इमन लैब्रूमैनका श्रीमती जीन कौरडियेके साथ विवाह हो जाने पर किसीको भी अचरज न हुआ। लैब्रूमैन महोदयने श्री पैपिलोकी वकालत मोल ली थी, और उसके भुगतानके लिए उधर तो उनको वैसे ही धनकी आवश्यकता थी, और इधर श्रीमती जीन कौरडियेके पास तीन लाख फ्रैंककी दर्शनी हुंडियाँ थीं जिनके दिखाने मात्रसे रुपया मिल सकता था।

लैब्रूमैन रूपवान् थे और मुफ़स्सिलमें रहने पर भी फैशनेबिल थे। उनका वेश-विन्यास, कसबेके निवासियोंके लिए एक अद्भुत बात थी।

श्रीमती कौरडियेमें लावण्य भी था और ताजगी भी। थोडी बहुत भौंडी होनेपर भी वह रूपवती और कमनीय समझी जाती थी।

दोनोंका विवाह-संस्कार होनेपर तो समस्त गाँवमें धूम सी मच गई। सबंधोपरांत शीघ्र ही घरको लौट स्वच्छन्द रूपसे गार्हस्थ्य सुख लूटनेवाले इस दंपति-युगलकी प्रत्येक पुरुष सराहना करता था और कुछ दिनकी 'प्रेम-यात्रा' के पश्चात् ही इन्होंने भी, कुछ कालके लिए पैरिस जाना निश्चय कर लिया था।

लैब्रूमैनके उचित मात्रामें सौजन्य प्रकट करनेके कारण वर-वधूकी यह 'प्रेम-यात्रा' भी अत्यन्त ही आनंददायक रही। 'प्रतीक्षा करनेवालेको सकल पदार्थ प्राप्त होते हैं' इस लोकोक्तिको पति महाशयने अपना आदर्श मान रक्खा था और उद्योग करते रहनेपर भी, किस प्रकार शान्त होकर कार्य किया जा सकता है, यह बात भी इनको भले प्रकार ज्ञात थी। यही कारण था कि इनको इतनी शीघ्र, ऐसी आशातीत—सोलह आना—सफलता प्राप्त हुई थी।

चार ही दिनमें श्रीमती लैब्रूमैनकी अपने स्वामीके प्रति ऐसी प्रगाढ भक्ति हो गई थी कि उनकी अनुपस्थितिमें श्रीमतीको क्षणमात्र पृथक् रहना भी असह्य हो जाता था। यदा कदा घुटनोंपर बैठी हुई श्रीमतीद्वारा कान ऐंठे

जानेपर, मुख खोलने और आँखें बंद करनेकी आज्ञा होते ही, पति महोदय अपना मुख फैला देते थे, और फिर अर्धोन्मीलित नेत्रोंद्वारा यह देखकर कि पत्नी उनके मुखमें सुंदर भोज्य पदार्थ खिसका रही है—वह उसकी मृदु उँगलियोंको दाँतोंसे कुतरनेका हास्य-पूर्ण उद्योग करते थे। उनकी इस चेष्टा-पर प्रसन्न होकर वधू ऐसा मिष्ट और सुदीर्घ चुम्बन प्रदान करती थी कि वर महाशयका रोम रोम खिल उठता था। पति महोदय भी, इसी भाँति पत्नीको प्रसन्न करनेके लिए प्रातःकालसे सन्ध्या तक और सन्ध्यासे प्रातःकाल तक, प्रेमालिंगन करते न अघाते थे।

प्रथम सप्ताह बीतनेपर उन्होंने अपनी सहधर्मिणीसे कहा—" यदि तुम चाहो तो अगले मंगलवारहीको हम पेरिस चल दें। वहाँपर उपाहारगृह, नाट्यशाला और नृत्य-भवन इत्यादि इत्यादि आमोद-स्थानोंमें दो प्रेमियोंकी भाँति विहार करनेका हमको अच्छा अवसर मिलेगा।"

प्रस्ताव सुनते ही, पत्नी हर्षातिरेकसे नृत्य करती हुई, बोली—" वाह, क्या ठीक कहा है। वहाँ तो यथासंभव शीघ्रतापूर्वक चलना चाहिए।"

इतनेमें पति महोदयने बातका सिलसिला रखते हुए यह कहना प्रारम्भ किया—" इस समय कोई बात भूलना न होगा। अपने पितासे भी दहेज तैयार रखनेको कह देना, क्यों कि पैपिलोका पूरा पूरा भुगतान भी मैं इसी समय कर देना चाहता हूँ।"

इसपर श्रीमतीने कहा—" ठीक तो है। मैं कल प्रातःकाल ही, पिताजी-से सब कह दूँगी।"

पत्नीके वाक्य समाप्त होते न होते ही, पति महोदयने उसको अपने बाहु-युगलमें आवेष्टित कर, विगत सप्ताहकी भाँति प्रसन्न करनेवाली, कुसुमा-युधकी वही प्रेममय लीलाएँ पुनः प्रारम्भ कर दीं।

अगले मंगलवारको जब सासू और श्वसुर अपनी पुत्री तथा जामाताको पेरिसके लिए स्टेशनपर बिदा करने गये, तो श्वसुर महाशयने कहा—" इतना अधिक धन जेबके भीतर पाकेट-बुकमें रखकर यात्रा करना तो मेरी समझमें बहुत ही अदूरदर्शिताकी बात है।" परन्तु जामाता यह सुनकर मुस्करा दिये और बोले—" आप चिन्ता न करें। इन बातोंका मुझे खूब अभ्यास है। अपने कामके सिलसिलेमें तो, मुझे कभी कभी एक एक

लाख तक अपने पास रखकर यात्रा करनी पडती है। सरकारी कायदे कानून-की झंझटसें बचने, और व्यर्थ समय नष्ट न करनेकी इच्छाके कारण ही मैं इस उपायका अवलम्बन करता हूँ। आशंका करनेका आपके लिए इसमें तनिक भी अवसर नहीं है।"

इसी समय गार्डने चिल्लाकर कहा—"पैरिस जानेवाले, ट्रेनमें बैठ जाँय।"

सुनते ही दोनों शीघ्रतापूर्वक एक ऐसी गाडीमें जा बैठे, जहाँ दो वृद्धाएँ पहलेहीसे बैठी हुई थी।

उनको देखकर लैब्रूमैनने, पत्नीके कानमें, धीमे स्वरमे कहा—"कैसी आपदामें आ पडे। मैं तो सिगरेट तकको तरस जाऊँगा।"

इसपर पत्नीने अस्फुट स्वरसे कहा—"व्यथा तो मुझको भी अत्यन्त अधिक हो रही है, परन्तु इस कारण नहीं कि तुम सिगरेट न पी सकोगे।"

इतनेमे गाड़ी सीटी देकर चल पडी। यात्रामें लगभग एक घंटा लग गया, परन्तु वृद्धाओंके जागते रहनेके कारण, युगल दंपतिमें अधिक वार्तालाप न हुआ।

सेंट लवार नामक स्टेशनपर गाड़ी रुकते ही, श्रीलैब्रूमैनने पत्नीसे कहा—"प्यारी, मेरी सम्मतिमें तो, सर्व प्रथम वुलवारपर जाकर कुछ खा-पी लेना चाहिए। तत्पश्चात् निश्चिन्त होकर हम अपने ट्रंक सँभाल होटलमें जा सकते हैं।"

पत्नीने इसपर शीघ्रतापूर्वक सिर हिलाकर उत्तर दिया—"हाँ, ठीक तो है। चलो उपाहारगृहमें जाकर ही कुछ भोजन कर लें। क्या वह दूर है?"

पतिने कहा—"हाँ, है तो दूर, पर हम वहाँ 'बस' पर बैठकर चलेंगे।"

यह सुन पत्नीके आश्चर्यान्वित हो यह प्रश्न करने पर कि—"मोटर किराये-पर क्यों नहीं कर लेते?" पति महाशयने उनको कुछ झिडकी देते हुए मुस्किराकर कहा—"धन क्या इसी प्रकार एकत्रित किया जाता है? यह जानती हो कि पाँच मिनटकी यात्राके लिए मोटरमें छः सेण्ट प्रति मिनट

किराया देना पड़ता है। तुम तो किसी सुखसे भी वंचित रहना नही चाहतीं!"

"ऐसी बात है?" पत्नीने सिटपिटाकर उत्तर दिया।

इतनेमें एक बडी 'बस' (गाडी) उधरसे निकली, जिसमें तीन बड़े बडे घोडे जुते हुए थे, और, दुलकी जा रहे थे। उसको देखते ही लैब्रूमैनने चिल्लाकार कहा—"कंडक्टर! कंडक्टर (गार्ड)।"

भारी गाडी रुक गई। नव-वकीलने अपनी स्त्रीको उस ओर धकेलकर शीघ्रतापूर्वक कहा—"तुम भीतर बैठो, मै छतपर जाता हूँ। वहाँपर बैठकर दोपहरके भोजन (लंच) से पूर्व कमसे कम एक सिगरेट पीनेका अवसर तो मिलेगा।"

उत्तर देनेका पत्नीको अवसर ही न मिला। सीढीपर चढते समय, हाथ थामकर सहायता देनेवाले कंडक्टरने, श्रीमतीको, बातकी बातमे भीतर धकेल दिया और वह घबराकर एक सीटपर जा पडी। पीछेकी खिड़कीद्वारा, छतपर जाते हुए पतिके केवल पाँव ही उनको दृष्टिगोचर हुए।

वहाँपर वह बेचारी सस्ते तम्बाकूकी गंधसे पूरित एक स्थूल-काय पुरुष और लहसुनकी लपटे उड़ानेवाली एक वृद्धा स्त्रीके बीचमे निश्चल होकर बैठ रहीं।

पंसारीका लड़का, युवती कन्या, एक सैनिक, सुवेशी चश्माधारी, रेशमी हैटयुक्त एक भद्रपुरुष, दो स्त्रियाँ—जिनकी तिरछी गर्वसे भरी हुई दृष्टि, मानो यह कह रही थी कि इस समय इस गाड़ीमें यात्रा करते रहने पर भी, हमको ऐसी वस्तुओंमें बैठनेका अभ्यास नही है—क्रिश्चियन धर्मानुसार परोपकारमय जीवन व्यतीत करनेवाली दो भगिनियाँ और प्रेतकर्म-निर्वाहक, यह समस्त चुपचाप एवं पंक्तिबद्ध बैठे हुए यात्री, हास्यपूर्ण व्यंग चित्रोंकी भाँति प्रतीत हो रहे थे।

गाड़ीके झटकोंके कारण यात्रियोंके सिर बारम्बार हिल रहे थे, और पहियोके हिलने-डुलनेसे, उनको मूर्छा सी आ रही थी। वे सब निद्रित-से जान पडते थे।

हमारी नवोढा अब भी निश्चल रूपसे बैठी हुई थी।

"वह मेरे पास—गाडीके भीतर—किस कारण नहीं बैठे?" बारम्बार यह विचार उस बेचारीके मनमें उठ रहे थे और एक अनिवर्चनीय

विषादके कारण उसका हृदय भरा आता था। पतिको ऐसा आचरण करनेकी तनिक भी आवश्यकता न थी।

इतनेमे भगिनियोंने कंडक्टरको गाडी रोकनेका संकेत किया, और कर्पूरकी तीव्र गन्ध अपने पीछे छोड, एकएक करके वे उतर गईं। बस (गाड़ी) आगेको चल दी और फिर रुकी। इस बार, रक्त-मुखवाली एक मिसरायन हाँफती हुई गाड़ीमें घुसी, और भोज्य-पदार्थोंकी डलिया अपने घुटनोंके बीचमें रखकर बैठ गई। रकाबियोंमें रक्खे हुए उसके भोज्य पदार्थोंके जलकी तीक्ष्ण गन्ध, समस्त कमरेमें व्याप्त हो गई।

"मैंने जितना विचार किया था, उपाहार-गृह उससे भी कहीं अधिक दूर है।" जीनने मनमें सोचा।

थोड़ी देरमें प्रेतकर्म-निर्वाहक भी उतर गया, और उसके स्थानपर बैठनेवाले साईसने तो अश्वशालाकी गन्ध ही मानो अपने साथ लाकर समस्त गाडीमें भर दी। युवती कन्याका उत्तराधिकारी, इस समय एक पत्रवाहक था, जिसके पैरोंकी गन्ध ही, निरन्तर चलते फिरते रहनेकी, साक्षी दे रही थी।

वकील-पत्नी अब अधीर हो उठी थीं। उनका हृदय बारम्बार ऊपरको आता हुआ-सा प्रतीत होता था और वह अकारण ही रुदन करनेको उद्यत-सी हो रही थीं।

बैठे हुए यात्री उतरते जाते थे, और नवीन पुरुष उनके स्थानपर गाड़ी-में घुसे आते थे। 'बस' इन अनन्त मुहल्लों और बाजारोंमेंसे होकर, विविध स्टेशनोंपर थोड़ी देरके लिए ठहरती हुई, अब भी आगेको बढ़ी चली जा रही थी।

"हमको कितनी दूर जाना है!" जीनने विचार किया—"कहीं वह सो तो नहीं गये। पिछले दिनोंमे तो उनको अत्यन्त ही श्रम करना पड़ा है।"

धीरे धीरे समस्त यात्री चले गये, केवल वही अकेली बैठी रह गई। इतनेमे कंडक्टरने पुकारकर कहा—"वॉ गिरार।" वह तनिक भी अपने स्थानसे नहीं हिली। यह देखकर उसने पुनः पुकारा—"वॉ गिरार।" अन्य किसी यात्रीके वहाँपर न होनेके कारण, यह समझकर कि वह

उन्हींको सम्बोधन कर रहा है, वकील-पत्नीने उसकी ओर मुख किया ही था, कि इतनेमें उसने तृतीय बार फिर चिल्लाकर कहा—" वॉ गिरार।" अब जीनने प्रश्न किया—" हम किस स्थानपर हैं ?"

क्रोधित हो कंडक्टरने उत्तर दिया—" कह तो दिया कि 'वॉ गिरार' आ गया। आध घंटेसे यही चिल्ला रहा हूँ, पर तुमने ध्यान ही न दिया।"

" क्या यह स्थान बुलवारसे कुछ अधिक दूरीपर है ?" जीनने प्रश्न किया।

" कौनसे बुलवारको पूछती हो ?"

" बुलवार डे इटैलियन्सको।"

" वह तो कभीका निकल गया।"

" कष्ट न हो, तो इसकी सूचना मेरे पतिको भी कृपा करके दे दीजिएगा।"

" तुम्हारे पतिको ? वह कहाँ हैं ?"

" इसी बसकी छतपर।"

" क्या कहा, छतपर ? वह तो बहुत देरसे खाली पडी हुई है।"

सुनते ही वह भयभीत होकर चौंक पड़ीं, और बोलीं—" क्या ? क्या कहा आपने ? यह सर्वथा असम्भव है। वह मेरे साथ आकर बैठे थे। तनिक अच्छी तरहसे देखकर कहिएगा। वह अवश्य ही वहाँ होंगे।"

कंडक्टरने अब कुछ एक अशिष्ट होकर कहा—" अरी छोकरी, बहुत बकवाद कर चुकी। बहुत बातें न बना। एक पुरुष चला गया तो क्या हुआ, तुझको दस और मिल जायँगे। बस, अब यहाँसे चल दे। राहमें कहीं, किसी अन्य पुरुषसे भेंट हो जायगी।"

जीनके नेत्रोंसे अब अविरल अश्रुधारा बह चली, और उसने हठात् फिर कहा—" महाशय, आप धोखा खा रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आप अवश्य गलतीपर है। उनकी कोखमें तो एक बड़ा बक्स भी था।"

गार्डने हँसकर कहा—" बड़ा बक्स ! हाँ ठीक, कहा तुमने ! वह पुरुष तो मैडलनपर ही उतर गया था। उसने भी तुमसे कैसा पीछा छुटाया ! वाह ! वाह !"

गाड़ी अब रुक गई थी। अतएव इच्छा न होनेपर भी, श्रीमतीको यहाँ-पर बरबस उतरना पड़ा। नीचे आते समय जब उनकी दृष्टि स्वभावतः

छतकी ओर गईं तो उन्होंने देखा कि वहाँपर सन्नाटा छाया हुआ है। एक चिड़िया भी नहीं है।

नव वधू अब फूट फूट कर रो रही थीं, और विना सोचे समझे कि मेरी रखवाली करनेवाला या बात सुननेवाला यहाँपर कौन है, वह कातर स्वरसे चिल्ला उठी-" हाय! मेरी यहाँ अब न जाने क्या दशा होगी!"

इतनेमें एक इन्सपेक्टर निकट आ गया और बोला—" क्या मुआ-मिला है?"

गार्डने कुछ एक व्यंग स्वरसे कहा—" श्रीमतीके स्वामी इसी यात्रामें इनका साथ छोड़कर कहीं चल दिये हैं।"

यह सुनकर वह यह कहता हुआ अपने भारी क़दम उठाता हुआ आगे बढ गया कि—

" ओह! कैसी तुच्छ वात है! जाओ, तुम अपना काम-काज देखो।"

अब वह कहाँ जाय? क्या करे? स्वामीपर क्या घटना घटी? वह इतने भुलक्कड़ कैसे वन गये? अत्यन्त व्याकुल हो जानेके कारण, वह इन प्रश्नों-पर विचार करनेमें सर्वथा असमर्थ थी, और मुख उठाकर सीधी आगे-को चल पड़ी।

जेवमें केवल दो फ्रैंक पड़े थे और अब वह किधर जाय, यह प्रश्न उसके सामने था। सहसा उसको अपने नातेके भाई 'वर्नल' का ध्यान आया, जो नौ-सेनाके मंत्री महोदयके दफ्तरमें एक क्लर्क था।

गाँठकी पूँजी भाड़ेकी गाड़ीका क़िराया देनेके लिए पर्याप्त थी ही, बस, वह उसमें बैठ, भाईके घरकी ओर चल दी। लैब्रूमैनकी भाँति, बगलमे एक बडासा सँदूकचा दाबे हुए, वह दफ्तरको जा ही रहा था कि यह वहाँ जा पहुँची, और गाडीसे कूदकर चिल्लाई " हैनरी!"

वह अचंभेसे खड़ा रह गया, और बोला—"जीन! यहाँ—और अकेली! कैसे यहाँ आई? किस स्थानसे आ रही हो?"

अश्रुपूरित नेत्रोंसे वह अचकचाते हुए बोली—" मेरे पति अभी अभी खो गये हैं।"

" खो गये हैं! कहाँ?"

" बस गाड़ीमें बैठे हुए।"

"बस गाड़ीमें बैठे हुए किस प्रकार खो गये ?"

रोते रोते बेचारीने समस्त गाथा सुनाई। सब बातें सुननेके पश्चात्, उन्होंने कुछ सोच-विचारकर कहा—"क्या आज प्रातःकाल उनका चित्त ठिकाने था?"

"हाँ।"

"अच्छा। उनके पास धन कितना था?"

"वह मेरा दहेज़ लाये थे।"

"तुम्हारा दहेज़! कुछ अंश या समस्त?"

"सम्पूर्ण, एक एक पाई। उन्होंने वकालत ख़रीदी थी; उसके भुगतानके लिए धनकी आवश्यकता थी।"

"अच्छा, तो प्यारी बहन, सुनो, तुम्हारे पति इस समय बेल्जियमकी राहपर जा रहे हैं।"

आशय न समझकर वह दुहराने लगी—"मेरे पति—तुम कहते हो कि–" बात काटकर भाईने कहा—"मैं कहता हूँ कि वह भाग गये। तुम्हारा सर्वस्व हरण करके, और क्या!" परस्परविरोधी मनोद्वेगोंका शिकार हो जानेके कारण, वह वहाँ खड़ी हुई सिसकियाँ भरने लगी और बोली—"तब—तो—वह—वह—महा धूर्त्त निकला" और क्षोभके कारण मूर्च्छित-सी हो अपने भाईके कंधेका सहारा ले रुदन करने लगी।

राहगीरोंको वहाँ एकत्रित होते देखकर, वह उसको धीरे धीरे पौरीमें ले गया और फिर कटि-प्रदेशमें हाथका सहारा लगा, धैर्यपूर्वक उसको दुतल्लेपर अपने कमरेकी ओर ले चला। मालिकके इस प्रकार लौट आनेपर आश्चर्यान्वित हो नौकरनीने किवाड़ खोले ही थे कि उसने यह आदेश दिया—

"सोफ़ी, झटपट उपाहार-गृहसे दो व्यक्तियोंके लिए दोपहरका भोजन ले आओ। मैं आज दफ्तर नहीं जा रहा हूँ।"

पङ्गु

सन् १८८२ की बात है। मैं रेलगाडीके एक कोनेमें जाकर सम्पूर्ण यात्रा अकेले ही समाप्त करनेकी आशासे बैठा ही था, कि इतने-मे सहसा गाडीका द्वार खुला और मुझको कोई यह कहता हुआ सुनाई दिया:—"सरकार, सँभलकर चढिएगा, गाडीके तख्ते तनिक ऊँचे लगे हुए हैं।"

इसपर किसीने उत्तर देते हुए, कहा.—"सब ठीक है, लॉरेन! घबराओ मत, मैंने भी गाडीका हैंडिल अत्यन्त ही बलपूर्वक पकड रक्खा है।"

इसके उपरान्त, एक सिर दृष्टिगोचर हुआ और दो हाथोंने, द्वारके दोनों ओर लटकते हुए चमड़ेके बन्दोंको बलपूर्वक पकड़कर, अपनी बृहत्काया धीरे धीरे ऊपरकी ओर खींची। आगन्तुकके पैर गाड़ीके तख्तोंसे बारम्बार टकरानेके कारण, इस समय दो बेतोंके समान खटखट शब्द कर रहे थे। अवयवहीन मूर्तिके समान इस पुरुषके कमरेमे बैठ जानेपर, पतलूनके ढीले पॉयचोंके सिरोंकी ओर देखनेसे मुझे पता चला कि इसकी दोनों टॉगें काठकी बनी हुई लग रही हैं। इतनेमे यात्रीके पीछेकी ओर एक सिर प्रकट हुआ और कहने लगा.—"सरकार आप, बैठ तो अच्छी तरह गये?"

"हाँ, बेटा।"

"तो ये अपने पुलन्दे और टेकिये (आधार-दण्ड) भी रख लीजिए।"

वृद्ध सैनिकसम वेशवाला एक नौकर, अब लाल-पीले काग़ज़ोंके सावधानीसे बँधे हुए पुलन्दे अपनी बग़लमें दबाये हुए गाड़ीमें चढा, और उन सबको एक एक करके अपने स्वामीके सिरके ऊपर गाड़ीमें लगी हुई जालीमें रखकर, बोला:—"सरकार, देख लीजिएगा, आपका यह सब सामान यहाँ रक्खा हुआ है। यह मिश्री है, यह गुडिया है, यह ढोल है,

यह हवाई बन्दूक है, और यह आपकी ‘ बोन बोन ’ नामक मिठाई है। ये पाँचों वस्तुएँ ठीक है। ”

“ अच्छा बेटा, खूब काम किया, तुम बने रहो। ”

आदमीके दरवाज़ा बन्द कर चले जाने पर, मैंने अब अपने पडौसीकी ओर ध्यानपूर्वक देखा। आगन्तुककी मूँछें घनी थीं और सिरके लगभग समस्त केश श्वेत हो जानेपर भी उसकी अवस्था कोई पैंतीस वर्षकी प्रतीत होती थी। ‘ लीजियन ऑव ऑनर ’ (युद्धमें महान् शौर्यप्रदर्शक कृत्यका फ्रेंचदेशीय सरकारी पारितोषिक) का द्योतक सुन्दर फ़ीता छातीपर लगा हुआ था। इस पुरुषका शरीर हट्टा कट्टा था और उससे यह भी पता चलता था कि यह अत्यन्त बली और फुर्त्तीला होते हुए भी, लाचारीके कारण ही ऐसा गतिहीन हो रहा है। यात्रीने अब अपनी भौंहोंका पसीना पोंछा और मेरी ओर दृष्टि गडाकर कहाः—“ क्या मेरे सिगरेटके धुएँसे श्रीमान्‌को कुछ कष्ट होगा ? ”

“ नहीं, श्रीमान्। ”

इसकी आँख, स्वर और मुखाकृति, ये सब ही मुझको वास्तवमें परिचितसे दीखते थे; परन्तु मैंने इसको कब और कहाँ देखा है, यह बात मेरी समझमें न आती थी। मै अवश्य ही इस पुरुषसे मिला था, बातचीत की थी और हाथ भी मिलाया था, परन्तु यह घटना बहुत दिन पहलेकी थी, इसको बीते हुए कई वर्ष हो गये थे। कुहासेमें विलुप्त पदार्थके समान, मेरा चित्त भी छायारूप होकर इन अतीत स्मृतियोंका अंधाधुंध (विना स्पष्टतया देखे) पीछा कर रहा था, परन्तु वह हाथ न आती थी, लुक-छिपकर इधर उधर भाग रही थी। मेरी ही दशा ऐसी हो, सो बात नहीं; वह पुरुष भी मेरी ओर दृक्पात कर रहा था और मेरी मुखाकृतिको ध्यानपूर्वक देखता जाता था। मानो वह मुझे अच्छी तरह तो नहीं, वरन् कुछ कुछ चीन्हता है। इस प्रकारकी पारस्परिक मुठभेडसे नितान्त आकुल होकर हम दोनोंके नेत्र अन्य दिशाओंकी ओर देखने लगते थे, परन्तु हठीली स्मृतिके पुनः खोज करनेके लिए उतारू होनेपर, उनका फिर एक दूसरेसे सामना हो जाता था। नेत्रोंकी लौटा-फेरीसे तग आकर अन्तमें मैंने कह ही डालाः—“ श्रीमन्, एक दूसरेकी ओर लगभग

एक घंटे तक देखनेकी अपेक्षा, यदि हम यह पता चलानेका प्रयत्न करें कि हमने एक दूसरेको कहाँ देखा है, तो क्या ही अच्छा हो।"

इसपर मेरे पड़ौसीने अत्यन्त मधुर स्वरसे यह उत्तर दिया:— "श्रीमान्‌का विचार ठीक है।"

मेरे यह कहनेपर कि मेरा नाम हैनरी वॉन क्रेयर है और मैं मजिस्ट्रेट हूँ, वह कुछ क्षणपर्य्यन्त तो ठिठका रहा, परन्तु फिर, महान् मानसिक घर्षणके द्योतक, सन्दिग्ध स्वरसे दृष्टिपात करता हुआ बोला:—"हाँ, अब मुझको भली भाँति स्मरण हो आया। मैं आपसे युद्धके पूर्व–बारह वर्ष हुए—पायनसेमें मिला था।"

"हाँ, महाशय, मुझे भी स्मरण हो आया। अरे! क्या आप लैफ्टिनेण्ट रिवैलिये हैं?"

"हाँ, अपने दोनों पैर खोते समय तक—जो युद्धमें तोपके गोलेसे उड गये थे—मैं कैपटिन रिवैलिये ही था।"

इस प्रकार पारस्परिक परिचय हो जानेके अनन्तर, हम दोनों, पुन. एक दूसरेकी ओर देखने लगे। मुझे अब भली भाँति स्मरण हो आया कि किस प्रकार यष्टिवत् देहवाला एक सुन्दर युवा, उस समय अत्यन्त उत्साहके साथ फुर्ती करते हुए भी, अत्यन्त मधुर चेष्टाओंसे, 'कौटिलोन' (नृत्य विशेष) में भाग लेनेके कारण, हँसी हँसीमें 'तूफ़ान' के नामसे प्रसिद्ध हो गया था। उस सुन्दर एवं अस्पष्ट अतीत स्मृतिके जागृत होनेपर मुझे अब सुनी हुई होनेपर भी, सर्वथा विस्मृत-प्राय—एक और कथा स्मरण हो आई। यह उन कहानियोंमेंसे थी कि जिनको सुननेके उपरान्त हम सर्वथा भूल जाते हैं और फिर, उनका हमारे स्मृति-पटलपर कुछ भी चिह्न शेष नहीं रह जाता।

वह बात शायद प्रेम-विषयक थी। फिर धीरे धीरे मस्तिष्कका अन्धकार दूर होने पर, मेरे हृदयाकाशमे एक सुन्दर युवतीका चन्द्रानन प्रकट हो गया, और विस्फोटक पदार्थोंके दारुण शब्दकी भाँति अत्यन्त वेगसे उसका नाम भी मुझको सहसा याद आ गया। वह श्रीमती 'दे मैण्डल' थीं। इसके अनन्तर, मुझे प्रत्येक बात स्मरण हो आई। वह वास्तवमे थी तो एक प्रेम-कथा; परन्तु अत्यन्त साधारण। वह कन्या इस युवासे प्रेम करती थी

और मेरा परिचय होनेके समय, इन दोनोंके भावी विवाहकी कुछ कुछ चर्चा होने लगी थी। प्रेमाधिक्यके कारण यह युवा भी इस सम्बन्धसे अत्यन्त प्रसन्न था।

अब मैंने आँख उठाकर गाडीकी ओर देखा; जहाँपर नौकरद्वारा धरे हुए, समस्त पुलन्दे गाड़ीकी गतिके कारण खूब हिल-डुल रहे थे। उनको देखते ही नौकरका वह स्वर पुन. मेरे कानोंमें स्पष्टतया गूँजने लगा। मानों वह अभी कहकर चुका हो कि--" सरकार, देख लीजिएगा, आपका सब सामान वह रक्खा है। यह मिश्री है, यह गुड़िया है, यह ढोल है और यह आपका 'बोन बोन' नामक मिष्टान्नविशेष है।"

प्रेम-कथा-रूप पुष्पकी समस्त पँखड़ियाँ अब मेरे हृदयस्तलमें क्रमशः प्रस्फुटित हो उठीं। मैंने सोचा कि अन्य पढ़ी हुई कहानियोंकी भाँति-जिनमें शारीरिक एवं आर्थिक दुर्घटनायें होनेपर भी, अन्तमें एक सुंदर नव-युवतीका विवाह नव-युवकके साथ हो जाता है,—यह ऑफ़िसर भी, इस प्रकार अंगहीन होनेपर, युद्धोपरान्त उस रमणीके पास गया होगा और उसने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर इसके साथ विवाह कर लिया है।

पुस्तकों अथवा नाटकोंमे वर्णित, असीम भक्तिकी पराकाष्ठाओंके समान यह बात भी मुझे अत्यन्त सरस और सुन्दर प्रतीत हुई। इन उदारतापूर्ण कहानियोंको पढ़ने अथवा सुननेके समय तो प्रत्येक पुरुष यही समझता है कि प्रसन्नता और उत्साहपूर्वक अपनेको बलिदान करना कुछ भी कठिन कार्य्य नहीं है। परन्तु अगले ही दिन, उनसे यदि कोई अभागा मित्र कुछ रुपया उधार माँगनेके लिए आ जाय, तो उन्हीं उदारचेता महाशयके चित्तमें घृणा उत्पन्न हो जाती है।

परन्तु इसी समय, एक और कल्पना—जो पहलेके समान भावुक न होनेपर भी, वस्तुतः यथार्थ प्रतीत होती थी,—मेरे हृदयमें सहसा उत्पन्न हुई और वह यह थी कि शायद इसने युद्धसे पहले—उस भयानक दुर्घटनाके होनेसे पूर्व ही—उस सुन्दरीसे पाणिग्रहण कर लिया था और उस अभागिनीको अब निराश हो उत्सर्गके साथ, अपने प्राणप्रिय पतिको,—जो युद्धके पश्चात् पदविहीन हो भग्न नौकासम घरको लौटा जा रहा था, और लाचारीसे गतिहीन होनेके कारण जिसमें मुटाईके साथ ही साथ निष्प्रभ

क्रोधकी मात्रा भी अधिकाधिक बढती जाती थी,—बरबस सेवा-शुश्रूषाद्वारा प्रसन्न कर आश्रय देना पड़ रहा है।

वह वास्तवमें सुखी था अथवा दुःखी, यह सब, पूरी कथा अथवा उसके उतने ही प्रधान अंशको—कि जिससे शेष अवर्णित एवं अवर्णनीय अंशका भी सम्यक्तया आभास मिल सके—जाननेके लिए मेरे हृदयमें दुर्निवार्य्य उत्कण्ठा उत्पन्न हो रही थी। परन्तु इस समस्यापर विचार करते रहनेपर भी, मैंने अब उससे बातचीत छेड़ दी। हम दोनोंने अभी कुछ यों ही साधारणसा वार्त्तालाप किया होगा कि मेरी ऑख पुनः उस जालीकी ओर गई। मैंने सोचा, कि इसके अवश्य ही तीन सन्तानें हैं। खॉडके गट्टे तो स्त्रीके लिए हैं, गुडिया छोटी लडकीके लिए, ढोल और हवाई बन्दूक दोनों लडकोंके लिए तथा बोन बोन मिठाई स्वयं इनकी है।

सहसा मैं पूछ बैठा.—"क्या आप 'पिता' शब्दके अधिकारी हो गये?"

उसने कहा:—"नहीं महाशय।"

सुनते ही मैं लज्जासे लाल हो गया। मानों शिष्टाचार-भंगका मैंने कोई अपराध किया हो। मैंने फिर कहा:—"मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। बात यह है कि खिलौनोंके विषयमें नौकरकी बातचीत सुनकर ही, मेरे हृदयमें ऐसी धारणा हुई थी। इस प्रकारका वार्त्तालाप सुनकर, लोग अन्यमनस्क होते हुए भी कुछका कुछ अनुमान लगा लेते हैं।

मेरी इस बातपर वह मुस्कराकर, मन्द स्वरसे बोला:—"मेरा अभी विवाह ही नहीं हुआ है। मैं तो अभी प्राथमिक दशामें ही हूँ।"

सहसा याद आजानेका स्वॉग भरकर मैंने भी, अब कह दिया:—"हॉ, ठीक तो है। जिस समय मेरा आपसे परिचय हुआ था, उस समय जहॉ तक मुझे याद पडता है—आपकी श्रीमती 'दे मैण्डेल' से सगाई ही हुई थी।"

"महाशय, आप ठीक कहते है। आपकी स्मृति तो अत्यन्त ही उत्कृष्ट है।"

साहस पाकर मैंने इतना और कहा.—"मुझे ऐसा सुना हुआ-सा, याद पडता है कि श्रीमती मैण्डेलका विवाह हुआ था, महाशय—क्या नाम है उनका? महाशय—"

धीर भावसे उसने कहा:—"महाशय दे फ़ौरैल।"

"जी हाँ, ठीक यही नाम था। आपके इस आघातका हाल भी मैंने उसी समय सुना था।"

इतना कहकर मैंने जो उसकी ओर आँख गड़ाकर देखा, तो वह लज्जित हो गया। उसका मुख, जो रुधिरकी अधिकताके कारण, वैसे ही लाल हो रहा था, अब सर्वथा लोहित वर्ण-सा हो गया—और अपने चित्त अथवा हृदयमें अपने पक्षको पराजित हुआ जानने पर भी,—स्पष्टतया निर्बलता स्वीकार न कर, उसको उत्साहपूर्वक समर्थन करनेवाले पुरुषके समान, उसने शीघ्र ही यह उत्तर दिया:—

"महाशय, श्रीमती फ़्लौरेलके साथ, मेरा नाम इस प्रकार, मिलाना ठीक नहीं है। युद्धोपरान्त और वह भी इस भाँति पदविहीन होकर लौटनेपर—मैं कभी उनको अपनी सहधर्मिणी बननेकी अनुमति न देता। *ऐसी बात क्या कभी सम्भव हो सकती थी? महाशय, सत्य जानिए कि* विवाह उदारता प्रदर्शित करनेके लिए नही किया जाता, वरन् उसका वास्तविक तात्पर्य यह है कि स्त्री प्रति दिन, प्रति घंटे यहाँ तक कि प्रत्येक मिनट और सेकिण्ड पर्य्यन्त, सदैव ही पतिकी सहगामिनी बनी रहे। फिर यदि कोई पुरुष मेरे समान कुरूप हो जाय, तो उसके साथ विवाह करना, स्त्रीके लिए मृत्यु-दण्डहीके समान हो जाता है। भक्ति और बलिदानकी मै प्रशंसा करता हूँ; परन्तु इनकी भी एक सीमा होती है और उसको मैं भली भाँति जानता भी हूँ। पर फिर भी, यह बात मुझको कदापि स्वीकार नहीं है कि नाटकके भीतर बैठे हुए जन-समूहके सदृश, समस्त संसारको प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करनेके लिए ही, स्त्री अपने समस्त जीवन, प्रमोद और सुख-स्वप्नको, सदाके लिए सर्वथा विनष्ट कर दे। अपने कमरेके फर्शपर, लकड़ीकी बनी हुई इन टाँगोंका, जब मैं खटखट शब्द सुनता हूँ, तो मारे क्रोधके मेरा जी यह चाहता है कि अपने ही नौकरोंका गला घोंट डालूँ। जो बात मै स्वयं सहन नहीं कर सकता, वही अन्य किसी स्त्रीके लिए किस प्रकार सम्भव हो सकती है, इसको आप जरा सोचिए। ऐसी दशामें उसको ऐसा करनेकी आज्ञा देना भी क्या मेरे लिए उपेक्षणीय है? आप ही कहिए, कि कटे हुए रूखकी भाँति मेरा यह शरीर, क्या कुछ सुन्दर दीखता है?"

इतना कहकर वह चुप हो गया। मैं उससे अब कह ही क्या सकता था! वास्तवमें बात उसहीकी ठीक थी। फिर उस अबलाको दोषी बताकर अथवा यह कहकर कि उसने ही गलती की, क्या मैं उसकी अवमानना कर सकता था? उसको तुच्छ समझ सकता था? कदापि नहीं। परन्तु इस प्रकार, नियमानुसार, सत्यानुकूल परिणाम होते हुए भी, मेरा काव्य-प्रिय भावुक हृदय सन्तुष्ट न था। ऐसे शौर्य-कृत्योंमें तो आवश्यकता होती है किसी प्रकारके मनोरम बलिदानकी और उसीका यहाँ सर्वथा अभाव था। इसी कारण मुझको ऐसी घोर निराशा हो रही थी। सहसा मेरे मुखसे पुनः यह वाक्य निकल पडेः—“ श्रीमती दे फ्लौरेलके क्या कुछ सन्तान भी है? ”

“ जी हाँ, उनके एक लडकी और दो लडके है। ये सब खिलौने मैं उन्हींके लिए ले जा रहा हूँ। वह और उनके पति, दोनो ही मुझपर असीम कृपा रखते हैं। ”

गाड़ी इस समय सेण्ट-जर्मेनके ढालपर, उडी जा रही थी। तदनन्तर वह गुफामे घुसी, और वहाँसे निकलकर स्टेशनपर आनेके उपरान्त खडी हो गई। आहत ऑफिसरको रेलसे नीचे उतरनेमें सहायता देनेके लिए मैं उठ ही रहा था कि खुले हुए द्वारमेंसे किसीके दो हाथ उस तक पहुँच गये।

“ अहाहा! आ गये मेरे प्यारे रिवैलिये। ”

“ ओ! फ्लौरेल! ”

पुरुषके पीछे खडी हुई एक सुन्दर नवयुवती, मधुर मधुर मुस्कानसे यात्रीकी ओर देखकर, हस्तसंकेतद्वारा उसे बुला रही थी। उसके पार्श्व-भागमें खडी हुई एक छोटीसी बालिका, प्रसन्नताके मारे कूद रही थी और दोनों बालक, ढोल और बन्दूकको, गाडीसे अपने पिताके हाथोंमें आते हुए, अत्यन्त सतृष्ण दृष्टिसे देख रहे थे।

पङ्गुके प्लेटफार्मपर उतरते ही, बालकोंने उसका मुख-चुम्बन किया। तदनन्तर वे वहाँसे चल दिये। छोटी बालिका तो अपने हाथमें टेकीका एक टूटा हुआ अंश लेकर, इस प्रकार जा रही थी, मानों वह अपने इस वयोवृद्ध मित्रका, अँगूठा पकडे ही चली जा रही हो।

पिता

वह राजकीय शिक्षा-विभागमें क्लर्क थे और वैटिगनोलमें रहा करते थे। पैरिस जानेके लिए प्रत्येक दिन, प्रातःकाल उनको 'ऑमनी बस' मे एक बालाके सम्मुख बैठना पडता था, और अन्तमें वह, उसीके प्रेममें फँस भी गये।

लडकी किसी दूकानपर नौकर थी और प्रत्येक दिन प्रायः इसी समय वहाँ जाती थी। इस श्यामाकी उन सुंदर ललनाओंमे गणना की जा सकती थी, जिनके अत्यंत कृष्णवर्ण नेत्र, गज-दंतसम सुंदर वदनपर, काले धब्बोंकी भाँति सुंदर प्रतीत होते हैं। बालाको वह सदा एक ही मोहल्लेके मोड़पर आते हुए देखते थे। उस महान् गाडीमें, घोडोंके सर्वथा रुकनेसे प्रथम ही, उछलकर बैठनेके लिए, वह प्रायः नित्य प्रति ही दौडा करती थी। और, फिर निश्वास हो गाडीमें घुस, अपने चारो ओर देखकर, वह सदा एक ही स्थानपर आ बैठती थी।

फ्रैंकोय टैसियेको, प्रथम दर्शनहीसे, इस मुखडेकी चाहना होने लगी थी। कभी कभी लोगोंका ऐसी कामिनियोंसे साक्षात्कार हो जाता है, जिनको, जान पहिचान न होने पर भी, भुजाओंमें लिपटानेके लिए उनके चित्त लालायित हो जाते हैं। इस लड़कीको देखते ही उनकी हृत्-तंत्रीमे एक प्रकारके झंकारके साथ ही साथ, प्रकार विशेषके आदर्श प्रेमका, अज्ञात रूपसे उदय होने लगा था।

असभ्यताकी सीमाके बाहर रहकर, फ्रैंकोयके बालाको ध्यानपूर्वक देखनेपर, पहले तो वह कुछ अकुलाई, और फिर लज्जित सी हो गई, यह देख क्लर्क महाशयने अपने नेत्र दूसरी ओर कर लिये; परंतु उनको वारम्वार उधर ही रखनेका प्रयत्न करने पर भी वह स्वयमेव पुनः उस रमणीकी ओर आकर्षित हो जाते थे। इस प्रकार बातचीत हुए विना भी, उन दोनोंकी कुछ ही दिनोंमें जान-पहिचान हो गई। उसके आते ही 'बस' गाडीमें स्थान न रहनेपर भी मानसिक कष्टोंकी उपेक्षा कर अपना स्थान उसके

लिए खाली छोड वह स्वयं बाहर चले जाते थे और वह भी उनका अभि-वादन करनेके लिए कुछ एक मुस्करा देती थी। क्र्कके प्रतीक्षापूर्ण नयनों-के सम्मुख अपने नेत्रोंके सदा नत हो जानेपर भी, सुदरीको उनके इस व्यवहारके प्रति कभी क्रोध न आता था।

अन्तमें उनकी बातचीत भी होने लगी; उन दोनोके मध्य अब एक प्रकारकी शीघ्र-मैत्री स्थापित हो चुकी थी—और नित्य प्रति आध घंटे पर्य्यन्त वह सर्वथा फ्री मैसन (Free mason) की भाँति हो जाते थे। यह आध घंटा, तब क्र्क महाशयके जीवनमें अत्यंत ही मनोरम था। शेष दिवसपर्य्यन्त, वह इस बालाहीका ध्यान करते रहते थे, और दफ्तरके उन न बीतनेवाले घंटोंमे, सदा इसहीकी छाया उनको दृष्टिगोचर होती रहती थी। हमारे हृदय-पटलपर सदैव अंकित रहनेवाली प्यारीकी मूर्ति-की भाँति इसकी स्मृति भी उनका भूतकी भाँति पीछा किया करती थी, और वह 'मन्त्र-मुग्ध' की भाँति रहते थे। इस बालाका हृदय जीत लेना, तब, उनकी दृष्टिमे न केवल अत्यन्त सुखदायी, प्रत्युत मानसिक ध्येयकी चरम सीमा था।

अब, प्रत्येक दिन प्रातःकाल वह उनसे हाथ मिलाती थी; और इस स्पर्श-सुख, तथा सुकुमार उँगलियोके दाबकी स्मृति, उनको अगले दिन तक बनी रहती थी। इसका चिह्न भी हमारी हथेलीपर सुरक्षित रहता है, यह भी उनकी धारणा थी।

'बस' गाडीके, इस थोडी देरके साथके लिए, वह चिंतित रहते थे और रविवारके आगमनकी प्रतीक्षामे तो उनका हृदय ही टूकटूक हो जाता था। कहना न होगा कि यह रमणी भी वास्तवमे, उनसे प्रेम करने लगी, और वसंत ऋतुमे, एक शनिवारको, उसने अगले दिन 'मायसो-लफीत' नामक स्थानपर चलकर—उनके साथ दोपहरका भोजन करनेकी प्रतिज्ञा भी कर ली।

(२)

रेलवे-स्टेशनपर उसको पहलेसे आई हुई देखकर उनको आश्चर्य भी हुआ, परन्तु उसने यह कहकर उनको शान्त कर दिया कि "जानेसे पहले मैं

आपसे कुछ बात किया चाहती हूँ; गाडी छूटनेमें अभी बीस मिनट बाकी है, और बातचीतमें जितनी देर लगेगी उसके लिए यह समय कही अधिक है।"

उनकी बाँहका सहारा लेने पर भी वह इस समय काँप रही थी। उसके गाल पीले पड रहे थे। उसने धरतीकी ओर दृष्टि गड़ाकर बहुत ही संकोचके साथ कहा—"मैं आपको धोखा देना नहीं चाहती, परंतु मै वहाँ उस समय तक नहीं जा सकती जब तक आप, कोई अनुचित बात न करनेकी—सर्वथा न करनेकी—प्रतिज्ञा न करें।"

इतना कहते ही उसका मुख अफीमके पुष्पकी भाँति रक्तवर्ण हो आया; और वह चुप हो रही। परन्तु इसका क्या उत्तर देना चाहिए, यह बात क्रुर्क महाशयकी समझमे न आई। इस कथनको सुनकर एक ही समयमें, उनको सुख भी हुआ और निराशा भी। स्त्रीका चपलाचरण होने पर, न्यून स्नेह करना अधिक श्रेयस्कर होने पर भी, कुछ एक प्रेमालाप करना उनको फिर भी ऐसा मनोरम और सुखद प्रतीत होता था कि वह अपना कर्त्तव्य ही निश्चय न कर सके।

उनका कुछ भी उत्तर न मिलने पर, वह आखोंमे ऑसू भर कंपित स्वरसे यह कहने लगी "यदि आप सर्वथा मेरी मान-रक्षाकी प्रतिज्ञा नहीं करते, तो मै घर चली जाऊँगी।" यह सुनकर उसका हाथ दबाकर, उन्होंने प्रेमपूर्वक कहा—"मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि वहाँपर तुम्हारी इच्छानुसार ही सब कार्य होगा।" इससे उसका चित्त कुछ स्थिर हुआ और वह मुस्कराकर बोली—"क्या आप वास्तवमें ऐसा ही करेंगे?" और जब उन्होंने ऑखे मिलाकर फिर कहा कि "हाँ, मैं ऐसा करनेकी शपथ करता हूँ" तो युवतीने उनसे कहा—"अच्छा तो फिर टिकट ले लीजिए।"

यात्रियोंसे रेल ठसाठस भरी होनेके कारण, उन्होंने फिर राहमें कोई बातचीत न की—और मायसो-लफ़ीत पहुँचते ही वह दोनों सीधे 'सीन' नदीकी ओर चल दिये।

निस्तब्धताको भंग करते हुए अन्तमे युवतीने कहा—"आप मुझको कैसी मूर्खा समझते होंगे!"

उन्होंने पूछाः—"क्यों?" "आपके साथ इस प्रकार अकेली आनेमें।" "नही, नहीं, कदापि नहीं, यह तो साधारण सी बात है।" "नहीं, मेरे लिये साधारण

नही हैं—क्यों कि मैं पापमें फॅसना नहीं चाहती, लड़कियोंका ठीक इसी भाँति पतन हुआ करता है। परन्तु आपको क्या पता कि हमारा जीवन कैसा कष्टदायक है, दिन, मास और वर्ष सदैव ही, मेरे लिए एक-से रहते हैं—कुछ भी परिवर्त्तन नही होता। मैं माताके साथ सर्वथा अकेली रहती हूँ, उन्होंने भी बड़े कष्ट झेले हैं और इसी कारण, वह अब सुखी नही रहतीं। अपना चित्त ठीक न रहने पर भी, मैं सदा प्रसन्न रहनेका प्रयत्न करती हूँ, पर सदैव सफलमनोरथ नहीं हो पाती—परन्तु अब इन बातोंसे क्या तात्पर्य—रहरहकर मुझको यही विचार आता है कि मैंने यहाँ आकर ठीक नहीं किया, शायद आपको इसका दु:ख न होता हो। ”

इसका उत्तर उन्होने अत्यंत औत्सुक्यसे—सुंदरीके, अपने निकटवाले, कानका चुम्बन करके दिया। परंतु उनके ऐसा करते ही वह सहसा, वेग-पूर्वक एक ओरको हो गई और क्रोधसे अधीर हो उच्च स्वरसे कहने लगीः—“ आह ! महाशय फ्रैकोय, शपथ खाकर भी आप ऐसा करते हैं ! ” इसके पश्चात् वह दोनों ‘ मोयसों–लफीत ’ की ओर लौट पडे।

फिर पौपलर जातीय महान् वृक्षोंकी छायामें बने हुए “ पैतित–हावरें ” नामक एक नीचे पटे हुए होटलमे बैठकर उन्होंने दोपहरका भोजन किया। स्थानीय वायु, उष्णता, हलकी श्वेत मदिरा, और एक दूसरेके अत्यंत निकट होनेके कारण, वह इस समय चुपचाप थे। इनके मुखमंडळ रक्तवर्ण हो रहे थे, और हृदय बैठे-से जाते थे, परंतु कहवा पीनेके पश्चात् ही वह फिर लहलहा उठे और ‘ सीन ’ नदी पार कर, परले किनारेकी राह ‘ ला–फ्रैत ’ नामक गाँवकी ओर चल दिये। “ तुम्हारा नाम क्या है। ” क्लर्कने सहसा पूँछा। उत्तर मिला “ लुईसी। ” अपने मुखसे ‘ लुइसी ’ ‘ लुइसी ’ कहकर वह चुप हो रहे और कुछ न बोले।

लड़की इस समय ‘ डेयजी ’ नामक फूलोंको चुन-चुनकर एक बड़ा सा गुच्छा बना रही थी, और क्लर्क महाशय, खेतमे हाँके हुए बछड़ेकी भाँति स्वछंदतापूर्वक उच्च स्वरसे संगीतालाप कर रहे थे। उनके बायें हाथके नदीके ढालू तटपर अंगूरकी बेलें लदी पडी थीं। इनको देख फ्रैकोय आश्चर्य-से स्तंभित हो कहने लगे “ वाह ! इधर तो देखो। ”

अंगूरकी बेलें तो यहाँ समाप्त हो गई थीं, परंतु समस्त ढलवाँ मैदान पुष्प-भारसे दबी हुई ' लिलैक ' नामकी झाड़ियोंसे पटा पडा था—समूची वनस्थली ही नील-लोहित वर्ण सी हो रही थी। दो मील दूर गाँवके निकट तक, पृथ्वीपर फूलोंका बड़ा चौड़ा गालीचा सा बिछा हुआ प्रतीत होता था। यह मनोहर दृश्य देखकर वह भी प्रसन्नता और आश्चर्यसे खड़ी हो कहने लगी " कैसा सुदर स्थान है ! " और फिर, एक खेत पार कर, वह दोनो उसी ढालू स्थानकी ओर—जो पैरिस नगरीके समस्त फूलवालोंको रोजी देता है—दौडने लग गये।

वृक्षोंके नीचे एक सकडी राह जाती देख, वह दोनों अब उसीपर हो लिये, और एक खुला हुआ भू-भाग देखकर बैठ गये।

वायुमंडल सर्वथा शान्त था, भौंरोके झुंडके झुंड चारों ओर उड़कर मधुर संगीतालाप कर रहे थे। स्वच्छंद नीलाकाशमें प्रकाशित सूर्यकी किरणें, ढालू मैदानोंपर गिरकर, उनको जगमगाये देती थी और उपवन सरीखे उस मैदानसे, प्रफुल्लित फूलोंके निःश्वाससम तीव्र सुगंध बह-बह-कर, उन तक पहुँच रही थी।

सुंदर गिरजाघरकी घड़ीमें घंटे बज रहे थे जब उन्होंने एक दूसरे-का मृदुलतापूर्वक आलिंगन किया और फिर, एक चुंबनके अतिरिक्त उनको कुछ अन्य वस्तुकी संज्ञा ही नहीं रही, और वे घासपर लेट गये। परंतु सुंदरी शीघ्र ही आपेमे आ गई, और अपने ऊपर महान् विपत्ति आई समझ दोनों हाथोंसे मुख ढाँपकर मारे दुःखके रोने और सिसकियाँ भरने लगी।

उन्होंने उसको धीरज बँधाना चाहा, परंतु वह तो वहाँसे उसी समय लौटकर शीघ्र ही घर पहुँचना चाहती थी। तत्पश्चात् शीघ्रता-पूर्वक राहमें लौटते समय भी, वह वारम्वार ' हे ईश्वर ! हे भगवान ! ' ही कहती रही और उसकी इस बातका कि ' लुइसी ! लुइसी ! तनिक यहाँ ठहर जाओ ' उसने कुछ भी उत्तर न दिया। उस समय उसका मुख लाल तथा दृष्टि शून्य हो रही थी, और पैरिस रेल्वे-स्टेशनपर आते ही वह, बिना अभिवादन किये ही उनसे बिदा हो गई।

(३)

अगले दिन ' ऑमनी बस ' में मिलनेपर उन्होंने देखा कि वह अपेक्षाकृत अधिक दुर्बल और परिवर्त्तित हो गई है । उसने उनसे कहा " मै आपसे कुछ कहना चाहती हूँ; आइए, हम दोनों ' बुलवार ' (नदीके किनारेकी सडक) पर ही उतर ले । "

और खरंजेपर आते ही, कहने लगी—" हमको एक दूसरेसे अब सदाके लिए विदा लेनी होगी, मै आपसे अब आगे न मिल सकूँगी । " उन्होने पूछा—" क्यो ? किस कारण ? " " इस लिए कि ऐसा करनेमे मैं अब सर्वथा असमर्थ हूँ, मुझसे वास्तवमें अपराध हुआ है, परंतु अब फिर, मैं ऐसा काम नहीं करना चाहती । '

मन्मथ-शरोंद्वारा बुरी तरह घायल होने पर भी युवतीने, जब क्लर्क महाशयकी दीनतापूर्वक कही हुई समस्त प्रार्थनाओका दृढतापूर्वक केवल यही उत्तर दिया कि—" नहीं, मै नही आसकती, यह काम मेरे लिए अशक्य है " तो वह, और भी अधिक उत्तेजित हो उससे विवाह कर डालनेकी प्रतिज्ञा करने लगे, परंतु इसको भी अस्वीकार कर, वह उनको वही खडा हुआ छोडकर आगे चल दी ।

फिर एक सप्ताह पर्य्यन्त उन्होने उसको न देखा और प्रयत्न करनेपर भी वह उनको न मिली । घरका पता न मालूम होनेके कारण, उन्होने अब उससे पुनर्मिलनकी आशा ही सर्वथा त्याग दी थी, परंतु नवें दिन, घरकी घंटी बजनेपर उन्होंने जो द्वार खोला, तो क्या देखते है कि वह द्वारपर खडी है । फिर आँखें चार होते ही वह उनकी भुजाओंपर गिर पडी, उसका वह विरोध अब सर्वथा शान्त हो गया था । इस भाँति तीन मास पर्य्यन्त तो इन दोनोंकी अत्यन्त ही गाढ़ मैत्री रही, परंतु इसके पश्चात्, प्रेमी महाशय युवतीसे कुछ कुछ उकताने लग गये । एक दिन उसने इनके कानमें कुछ कह दिया, जिसको सुनते ही, इन्हें केवल एक बातकी—जैसे बने तैसे इस युवतीसे संबध-विच्छेद करनेहीकी—चिन्ता रहने लगी । जल्दीमें बिना सोचे समझे, अदूरदर्शितापूर्वक किये हुए अपने कृत्यके घोर दुष्परिणामकी चिन्ता, और भयके कारण वह अब ऐसे घबरा रहे थे कि पीछा छुड़ानेके लिए उनको क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए; यही बात भली

प्रकार समझमे न आती थी । अंतमें दृढ़ निश्चय कर, अपना निवासस्थान बदल, वह वहाँसे अदृश्य हो गये ।

चोट इतनी गहरी थी कि बेचारी लड़कीने इस प्रकार त्याग करनेवाले उस पुरुषके ढूँढनेका कुछ भी प्रयत्न न कर, अपनी माताके घुटनोंपर सिर टेक, अपनी विपदाकी समस्त दुःख-कथा कह डाली, और फिर कुछ मास पश्चात् उसके एक पुत्र प्रसव हुआ ।

(४)

उपर्युक्त घटनाको कई वर्ष बीत गये । जीवन-चर्यामें रत्तीभर परिवर्त्तन हुए बिना ही, फ्रैकोय टैसिये अब, वृद्ध हो चले थे । दफ्तरके क्लर्कोंका-सा वही—सदैव एकसा रहनेवाला—मंद नैराश्य-पूर्ण और आकांक्षारहित, जीवन उनको अब भी, उसी भाँति व्यतीत करना पडता था । अब भी वह प्रत्येक दिन उसी समय उठते थे; और उसी द्वारकी राह, उन्हीं गलियोंमें होकर, उनको उसी दरबानके निकटसे उसी दफ्तरमे जाना पडता था । वहाँ भी उनकी, वही पुरानी कुर्सी थी और वही पुराना काम । अपने भिन्न भिन्न साथियोके मध्य, दफ्तरमें बैठकर वह दिनमें भी जिस प्रकार अकेले रहते थे, ठीक उसी प्रकार, अविवाहित होनेके कारण समस्त रात्रि भी उनको अपने शून्य वास-स्थानमें अकेले ही बितानी पडती थी । बुढापेके लिए प्रत्येक मास में, वह सौ फ्रैंक बचाते थे ।

भद्र पुरुषो, गाडियों और सुंदर युवतियोंकी छटा देखनेकी इच्छासे, वह प्रत्येक रविवारको, शंज़े लिज़े (Champ Elyseis) में जाया करते थे; और वहाँसे लौटनेपर अगले ही दिन, अपने साथियोंसे यह भी कह देते थे कि भाई, बाय दे बोलोन (Bois du Boulogne) से लौटती हुई गाडियाँ कल अत्यंत ही सुंदर एवं भव्य प्रतीत होती थीं ।

परंतु एक दिन रविवारको उधर न जाकर निर्मल आकाश देख, प्रातःकालके समय, वह मौनशिपे नामक पार्कके भीतर घुसे चले गये । यहाँपर, सडकके दोनों ओर बैठी हुई, परिचारिकाएँ और माताएँ, अपने अपने बालकोंको खेलते हुए देख रही थी । अंदर घुसते ही फ्रैकोय टैसिये, सहसा सिरसे पैरतक काँप उठे । दो छोटे छोटे बच्चोंका हाथ थामे हुए—जिनमें, एक तो दस वर्षका बालक था, और दूसरी चार वर्षकी नन्हीं सी लड़की—एक स्त्री अभी उनके पाससे होकर निकली थी । यह युवती वही थी ।

मनस्तापसे गला रुँध जानेके कारण अब वह सौ गज़ चलकर ही एक कुर्सीपर गिर पडे। स्त्रीने इनको नहीं पहिचाना था, इस लिए उसको दोबारा देखनेकी इच्छासे वह अब पुन. पीछेको लौटे। स्त्री इस समय बैठी हुई थी, वह बालक उसके पास चुपचाप खड़ा था, और बालिका धरतीपर बैठी हुई मिट्टीके घरोंदे बना रही थी। यह स्त्री उसहीके समान प्रतीत होती थी, और वास्तवमें थी भी वही; परंतु वेश-भूषा. साधारण होनेपर भी, अब उसका मुखमंडल, भद्र, कुलीन महिलाओकी भाँति, स्थिर, तेजःपूर्ण, एव शान्त था। निकट जानेका साहस न होनेके कारण, वह उसको दूरहीसे देख रहे थे कि लडकेने अपना सिर उनकी ओर किया और उसके ऐसा करते ही फ्रैंकोय टैसियेपुनः काँप उठे। निस्संदेह यह —नहीका पुत्र था, इसको देखकर उन्हें अपना—वर्षो पहले बालकपनमे लेया हुआ—फोटो स्मरण हो आया। बालककी आकृति उस चित्र-प्रदर्शित रूपसे बहुत कुछ मिलती थी। स्त्रीके पीछे पीछे चलनेकी इच्छासे वह, अब, पेडकी ओटमे हो, उसके जानेकी प्रतीक्षा करने लगे।

उस रातको उन्हें जरासी भी नींद न आई। रह-रहकर बालकका ध्यान उनको अत्यन्त मार्मिक पीडा पहुँचा रहा था। क्या यह उनहीका पुत्र था? आह! यदि उनको केवल इसी बातका पता चल जाता—ठीक ठीक निश्चय हो जाता। परतु इस संबंधमे वह कर ही क्या सकते थे। खैर, वह स्त्रीके निवासस्थान तक गये और वहाँ पूँछताँछ करनेपर उनको पता चला कि एक अत्यंत शुद्धाचरण पडौसीने उसकी दुर्दशापर तरस खाकर समस्त पापाचारको जानते हुए भी न केवल स्त्रीसे विवाह कर लिया था वरन् उस शिशुको भी—जो वास्तवमे फ्रैंकोय टैसियेकी संतान था—अपना लिया था।

बालकको देखनेकी प्रबल आकांक्षासे, अब वह प्रत्येक रविवारको पार्क मौनशिपेकी ओर ही जाने लगे और वहाँ पहुँचते ही, प्रत्येक बार, उनके हृदयमें, लडकेको लिपटाने, बारम्बार चुम्बन करने और उठाकर ले भागनेकी पागलोंकी भाँति भयंकर एवं दुर्निवार उत्कंठा उत्पन्न होने लगती थी।

अविवाहित रहनेकी दशामें, एकाकी जीवन व्यतीत करनेके कारण, उनको वैसे ही अत्यंत भयंकर कष्ट भोगने पड़ते थे और सेवा-शुश्रूषा

करनेवाले व्यक्तिका सर्वथा अभाव होनेसे घोर मानसिक पीडाकी भी कमी न थी। इन मानसिक एवं कायिक कष्टोंमें लज्जा, खेद, पश्चात्ताप, और ईर्ष्याके कारण उत्पन्न हुआ, प्राणिमात्रमें पाया जानेवाला, प्रकृतिजन्य संतति-स्नेह हृदयको छिन्नभिन्नकर उन्हें अब और भी रौरव नरकके समान यातनाएँ दे रहा था। अंतमें, एक दिन निराश होनेपर भी साहस कर उन्होंने उसके पार्कमें घुसते ही बीच सडकमें खड़े हो विवर्ण मुख, और काँपते हुए स्वरसे कहा—'तुमने मुझे नहीं पहिचाना?' यह सुनते ही आँख उठाकर वह, भयसे चिल्ला उठी और अपने दोनों बालकोंका हाथ पकड़ पीछे घसीटती हुई वहाँसे भाग खड़ी हुई, और वह, भग्न-मनोरथ हो, घरमें आ फूट-फूटकर खूब ही रोये।

इसके पश्चात्, फिर, महीनों तक उसके दर्शन न होने पर भी, पुत्रप्रेम-का शिकार होनेके कारण उनको दिन-रात मर्मान्तक पीड़ा होती रहती थी। पुत्र-चुम्बन करनेके पश्चात् तो वह प्राण भी सहर्ष त्याग सकते थे और उसकी प्राप्तिके लिए वध अथवा अन्य भयंकर कृत्य करने, संकट सहने, और सब कुछ खानेके लिए भी उतारू थे। इस सम्बन्धमे उन्होने उस स्त्रीको लिखा भी, परन्तु उसने कोई उत्तर न दिया। फिर जब उनकी भेजी हुई बीसों चिट्ठियोंका भी, कोई जवाव न आया, तो उसके दृढ निश्चयको फेरनेकी आशा न रहनेपर, उन्होंने स्वामीहीसे पत्र-व्यवहार करनेका उग्र निश्चय किया। इस समय तो वह रिवाल्वरकी गोली तक खानेको तयार थे। उनकी चिट्ठीमे निम्नलिखित कतिपय पंक्तियाँ थीं—

"महाशय, मेरा नाम सुनकर, आप मुझसे अवश्य ही घृणा करेंगे, परंतु घोर क्लेश, तथा दयनीय दशाके कारण मेरी समस्त आशाएँ अब केवल आपहीपर लगी हुई है। मै आपसे बातचीत करनेके लिए, केवल पाँच मिनटकी भिक्षा चाहता हूँ।

मै हूँ, आपका—"

दूसरे ही दिन उनको यह उत्तर मिलाः—

"महाशय, मै कल, मंगलवारको, संध्याके पाँच बजे आपकी प्रतीक्षा करूँगा।"

(५)

ऊपर जाते समय,—सीढ़ियोंमे—फ्रैंकोय टैसियेका हृदय, इतने वेगसे धड़क रहा था, कि राहमे उनको कई बार विश्राम करना पडा। चौकड़ी भरते समय, पशुके वक्षस्थलमें होनेवाली धड़कनके समान, उनके वक्षस्थल-में भी, इस समय मंद प्रहारवत् शब्द हो रहा था, यहाँ तक कि, उनको श्वास लेनेमे भी कठिनाई होती थी और गिरनेके भयसे, उन्होंने, दोनो ओर लगे हुए जीनेके बारजे भी अपने हाथोंसे थाम रक्खे थे।

तीसरे खंडपर पहुँच, घँटी बजाते ही नौकरानीके किवाड़ खोलनेपर, उन्होंने पूँछा—'क्या क्रैमेल महाशय यही रहते है?" "जी हॉ, आप कृपाकर भीतर पधारिए।"

फिर उनसे गोल कमरेमें घुसनेको कह दिया गया, और जब तक द्वार खुलनेपर दूसरा व्यक्ति वहॉ न आ गया, तब तक, आपत् समूहसम उस स्थानमें यह अकेले ही घुलते रहे। आगन्तुकका शरीर लंबा, और मजबूत था और वह काले रंगका कोट पहिने हुए था। उसके संकेत करने पर फ्रैंकोय टैसियेने एक कुर्सीपर बैठ रुँधे हुए गलेसे कहा—"श्रीमान्—श्रीमान्—नहीं कह सकता कि आपको मेरा नाम भी मालूम है या नहीं—अथवा आप यह भी जानते है—"

बात अभी अधूरी ही उसके मुखसे निकल पाई थी कि महाशय क्रैमेलने बीचहीमे रोककर उनसे कहा—"महाशय, आपके कहनेकी आवश्यकता नही है, मेरी भार्या आपके सम्बन्धमे सब कुछ कह चुकी है।" यह वाक्य ऐसे स्वरमें कहे गये थे कि उनसे वक्ताकी भलमनसाहत, शुद्धाचरण, और गॉभीर्यके साथ ही साथ, यह भी प्रकट होता था कि वह कुछ कड़ाईसे काम लिया चाहते है। अस्तु। फ्रैंकोय टैसियेने अब केवल इतना ही कहा—

"महाशय, आप ठीक कहते है, दुःख, खेद और पश्चात्तापके मारे, मेरे प्राणसे निकल रहे हैं, और अब एक बार—केवल एक बार—उस बालकको चुम्बन करनेकी मेरी प्रबल इच्छा है और यही बात मैं आपसे कहा चाहता था।"

महाशय क्रैमेलने, उठकर घंटी बजाई और नौकरानीके आते ही, कहा—"लुईको यहॉ ले आओ।" दासीके चले जानेपर वह दोनो एक दूसरेके

सम्मुख बिना कुछ कहे—चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करने लगे--मानों आपसमें कुछ और अधिक बातचीत ही न किया चाहते थे। इतनेमें एक दस वर्षका बालक, सहसा कमरेमें बेगसे घुसा और उस पुरुषके पास, जिसको वह अपना पिता समझता था, दौड़ता हुआ चला ही था कि एक अपरिचितको वहाँ बैठा देखकर, तनिक ठिठका, यह देख, महाशय फ्रैमेलने उसको चूमकर कहा—"बेटा, इधर आकर एक मिट्ठी इन महाशयको भी दो" यह सुनते ही बालक अपरिचित व्यक्तिके सम्मुख खड़ा हो उनका मुख देखने लगा।

फ्रैकोय टैसिये अब उठकर खड़े हो गये थे। उनका टोप सिरसे गिर पड़ा था और पुत्रको देख वह स्वयं भी, कुछ गिरेसे जाते थे। शिष्टाचारके कारण, महाशय फ्रैमेल भी, अपना मुख उधरसे मोड़कर, इस समय खिड़कीके बाहर झाँक रहे थे।

आश्चर्यसे सम्मुख खड़े रहकर, प्रतीक्षा करने पर भी, बालकने वह गिरा हुआ हैट उठाया और अपरिचित व्यक्तिके हाथोमे दे दिया। तदनंतर फ्रैकोय टैसियेने उसको अपनी भुजाओंमें भरकर, ऊपरको उठा लिया, और उन्मत्तकी भाँति बालकके आनन, आँख, कपोल, मुख, और केश इत्यादि सब ही गात्रोंका चुंबन कर डाला। बालकने, इस चुम्बनसे घबराकर, बचनेके लिए, अपना सिर मोड़ा और नन्हें नन्हे हाथोंसे अपना मुँह ढाँपनेका असफल प्रयत्न किया ही था कि इतनेमे उसको फिर धरतीपर खड़ाकर, फ्रैकोय टैसिये उच्च स्वरसे 'अंतिम विदा! अंतिम प्रणाम!' कहकर चोरकी भाँति कमरेसे बाहर झपटे चले गये।

वसन्तमें

वसंतका आगमन होते ही पहले ही दिनसे,—जब पृथ्वी, नींदसे उठकर हरित वस्त्र धारण करना प्रारंभ कर देती है, और उष्ण सुगंधित वायु हमारे मुखमंडलपर पंखा-सा झलकर, फेफड़ोंमें प्रविष्ट हो, हृदयस्तलतक भेदन करता हुआ सा प्रतीत होता है, तब—सर्वथा बन्धन-मुक्त हो आमोद करनेके लिए—एक अस्पष्ट एवं अनिर्वचनीय आकांक्षा, हमारे चित्तमे उठती हुई सी प्रतीत होती है, और दौडकर अथवा निष्प्रयोजन, इधर उधर घूमकर ही, हम ऋतुराजका रस-पान करनेके लिए लालायित हो जाते हैं। पिछला शीत-काल, अत्यन्त ही प्रचण्ड होनेके कारण मई मासमें, इस वार, वसंत ऋतुके आनन्द लूटनेका भाव, पुरुषोंके मस्तिष्कमें नशेकी भॉति चढा हुआ था, और ऐसा प्रतीत होता था कि मानो मादक रस ही कहीं, प्रचुर राशिमें पडा हुआ मिल गया है।

एक दिन प्रात.काल, सोकर उठनेपर जो मै खिडकीसे झॉका तो क्या देखता हूँ कि सूर्यके तीव्र प्रकाशमें स्वच्छ नीलाकाश, पास-पडोसके घरोंपर चमचमा रहा है, निकटस्थ खिड़कियोंमें लटकते हुए पिञ्जर-बद्ध 'कैनेरी' नामक पक्षियोंके सुरीले गानके साथ ही साथ, प्रत्येक मालेमें नौकर लोग भी खूब शोर कर रहे हैं। इसी प्रकार, राह, बाट, आदिमे भी उस समय हर्षध्वनियॉ हो रही थीं। दिनकी भॉति, अपने हृदय-कमलको प्रफुल्लित हुआ देखकर किधर जाना चाहिए यह निश्चय न कर सकने पर भी, मैं बाहर निकल आया। प्रत्येक राहगीर इस समय मुझको मुस्कराता हुआ दीखता था, मानो ऋतुराजके प्रत्यागमनपर, उष्ण प्रकाश-द्वारा समस्त पदार्थ ही आनंदसे ओतप्रोत हो रहे थे। ऐसी दशा देखकर चित्तमें वारम्वार यह विचार उठने लगे कि कहीं नगरमें प्रेम-वायु तो नहीं चल पडी। प्रात.कालीन वस्त्र धारण किये, राह चलनेवालीं, म्लान-श्री

सुकुमारियोंके नेत्रों तकमें कोमलता छिपी हुई दीखनेके कारण मेरा हृदय भी वारम्वार क्षुब्ध हो रहा था।

इसके बाद मै सीन नदीके किनारे जा पहुंचा—क्यों और कैसे, यह मै स्वयं भी नहीं जानता। 'सुरैसनै' को जानेवाले अग्निबोट वहाँ इस समय तयार खडे थे; उनको देखते ही मेरे हृदयमें भी वनमे घूमने फिरनेकी आकाँक्षा सहसा उत्पन्न हो गई। 'माउशे' नामक स्टीमरके डैक यात्रियोसे खचाखच भरे हुए थे। कारण यह कि प्रारंभिक वसंतकालीन सूर्यका प्रकाश होते ही जनता इच्छा न होते हुए भी घरसे बाहर निकलकर, या तो इधर उधर घूमने निकल जाती है, या इष्ट मित्रोंके यहाँ जाकर गप-शप करती है।

स्टीमरपर मेरे पास एक बाला बैठी हुई थी। वह वास्तवमें शिल्पकारिणी थी, फिर भी उसमे सोलह आना पेरिसियन (पैरिस-नगरवाली) कान्ति दृष्टिगोचर होती थी। उसके छोटेसे सिरपर हलके घुँघराले बाल—जो वायुवेगसे बारम्बार इधर उधर उडनेके कारण चमक रहे थे—कानोंके पाससे होकर गर्दनके पृष्ठ भागमे जा ऐसे सुंदर हलके रंगके प्रतीत होते थे कि उनको देखते ही बरबस चुम्बन-वर्षा करनेको जी चाहता था।

मेरे वारम्वार घूरकर देखनेपर उसने अपना सिर उठाकर कोई क्षणभर मेरी ओर किया और फिर वह नीचेको देखने लग गई। परन्तु इतनेहीसे मुखके पास पड़ी हुई रेखाने उसकी छिपी हुई मुस्कराहटका पता दे दिया, और उसका प्रकाश पडनेके कारण, उसका सुंदर सुकोमल कुछ एक पीतवर्ण रुआँ भी स्वर्णकी भाँति चमचमा उठा।

प्रशान्त नद अब अधिक विस्तृत होता जाता था और उष्ण वायुमंडलकी निस्तब्धता इस समय केवल जन-समूहके कोलाहलद्वारा ही भंग होती थी।

मेरी पडौसिनने अपनी आँखें फिर ऊपरको उठाई। मेरे उसकी ओर पहलेसे देखते रहनेके कारण, इस बार चार आँखें होते ही वह, वास्तवमे मुस्करा दी। इस लावण्यमयी बालाके दृष्टि-विन्यासमें अज्ञात गांभीर्य, चित्ताकर्षक कोमलता, काल्पनिक काव्यवत् भावुकता, और नित्यप्रति खोज किया जानेवाला आनन्द, आदि सहस्रों ऐसे भाव,—जिनके अस्तित्व-

से मैं अब तक सर्वथा अनभिज्ञ था—मुझको सहसा दृष्टिगोचर होने लगे; और किसी शून्य स्थानमें, बाहुवेष्टित कर, इसके कानोंमें प्रेममय मधुर गान करनेकी प्रबल इच्छाने, मुझको पागलसा बना दिया।

मैं, इससे बातचीत प्रारंभ करनेहीको था कि इतनेमें किसीने मेरे कंधेको छुआ, इसपर कुछ एक अचरजसे, मैंने जो अपना मुख मोड़ा तो क्या देखता हूँ कि एक साधारण आकृतिवाला मनुष्य—जो न तो युवा ही था और न वृद्ध—मेरी ओर विषादपूर्ण नेत्रोंसे देख रहा है। उसने कहा—"मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं।"

यह सुनते ही मैंने अपना मुख बिगाड़ लिया, पर यह देखकर भी, उसने कहा—"अत्यंत आवश्यक बात है।"

अब मैं उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया। जब हम बोटके दूसरे छोरपर पहुँच गये, तो उसने यों कहना प्रारंभ किया—"महाशय, देखिए, जब शीत, वर्षा और हिमको साथ लेकर शिशिर ऋतु आती है, तो डॉक्टर लोग हमें बारम्बार आदेश देते है कि अपने पैरोंको गर्म रखिए और शीत, खाँसी, जुकाम, गठिया और पार्श्वशूलसे अपनी रक्षा कीजिए, तब अत्यंत सावधानीसे, फलालैनकी पतलून पहिरने, भारी मोटा ओवर-कोट धारण करने तथा मोटी तलीके जूतोंके होते हुए भी आपको लगभग दो मास शय्यापर बिताने पड़ते हैं; परन्तु कितने आश्चर्यकी बात है कि पुष्प-पत्रसहित वसंतके पुनरागमनपर खेतोंमें सुगंधसे भरी हुई मंद मंद पवन प्रवाहित होनेपर भी कोई आपसे यह नही कहता कि 'महाशय, प्रेमसे सावधान रहिए। देखिए, वह सर्वत्र ही घात लगाए बैठा है, प्रत्येक कौनेमे छिपा हुआ आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसका जाल फैल रहा है, उसके अस्त्र-शस्त्रोंपर सान रक्खी हुई है और उसकी माया पूर्ण रूपसे व्याप्त हो रही है, प्रेमसे सजग रहिए। प्रेमसे सावधान रहिए। शराब, फेफड़ोंकी खाँसी अथवा पार्श्वशूलसे भी वह कहीं अधिक भयावह है, वह कभी क्षमा नहीं करता और प्रत्येक व्यक्तिसे ऐसी मूर्खताएँ कराता है कि फिर उनका कोई इलाज ही नहीं हो सकता।'

"हाँ महाशय, लोग जिस प्रकार रंग लगानेके पश्चात् नोटिस लगा देते हैं कि 'रंग लगा हुआ है, होशियारीसे चालिए' उसी प्रकार ऋतुराजका प्रत्या-

गमन होने पर मेरी सम्मतिमें, सर्व साधारणके लाभके लिए फ्रैंच सरकारको भी बड़े बड़े नोटिस दीवारोंपर चिपका देने चाहिए कि, 'वसंत आ गया, फ्रैंच प्रजा सावधान रहे।'

"परंतु फ्रैंच सरकार न तो ऐसा करती है और न भविष्यमें उसके ऐसा करनेकी कोई आशा ही है, अतएव मैं, उस त्रुटिको पूर्ण करनेके लिए आपसे कहता हूँ कि 'प्रेमसे सावधान रहिए।' जिस प्रकार किसी भी पुरुषकी नाक भयंकर शीतके कारण ऐंठ जानेपर रूसमें उसको सूचना दी जाती है, उसी प्रकार अपना धर्म या कर्त्तव्य समझकर मैं भी बताना चाहता हूँ कि प्रेम आपको बंदी बनाया ही चाहता है।"

अत्यंत आश्चर्यसे इस पुरुषकी बात सुननेके पश्चात् मैंने गंभीर मुद्रा धारण करके कहा—"महाशय, वास्तवमें आप, एक ऐसे विषयकी चर्चा कर रहे है, जिसका आपसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।"

यह सुनते ही तेज़ीसे मेरी ओर फिरकर, वह बोला—"वाह महाशय, आपने भी खूब कहा। भयंकर स्थानमें–जहाँ डूब जानेकी आशंका है–किसी आदमीको जाते देखकर, मै यों ही चुप बैठा रहूँ? और उसको मरने दूँ? तनिक मेरी रामकहानी सुनिए, और तब कहीं आपको पता लगेगा कि इस प्रकार वार्त्तालाप करनेका साहस मुझको क्यों कर हुआ।

"पिछले सालकी बात है, समय भी प्रायः यही था। परंतु सबसे पहले यह कह देना ठीक होगा कि मै राजकीय नौ-विभागमें क्लर्क हूँ, और हमारे प्रधान अधिकारी कमिश्नर कहलाते हैं। मोरके परकी बनी हुई क़लमोंसे लिखनेवाले यह अधिकारीगण भी, बर्दियोंपर लगी हुई सुनहरी लैसके कारण, अपना बडा महत्त्व समझते हैं और हमारे साथ जहाजी मल्लाहोंका-सा आचरण करते हैं। हाँ, तो आफ़िससें—जहाँ मैं बैठा करता था वहाँसे मुझे नीलाकाशका कुछ भाग और उसमे उडती हुई अबाबीलें दिखाई पड़ती थी। उनको देखकर, कागज़की ढेरियोंमें दबे रहने पर भी, इन पक्षियोंके समान मत्त होकर नाचनेकी प्रबल आकांक्षा मेरे हृदयमें उत्पन्न हो गई।

"बंधन तोडकर स्वच्छन्द विहार करनेकी आकांक्षा ऐसी प्रबल थी कि चित्तमें घृणा रहते हुए भी मै अपने ऑफिसरके पास गया। वह

नाटा सा पुरुष अत्यंत ही बुरे स्वभावका था और सदा क्रोधसे भरा रहता था। मेरे यह कहनेपर कि चित्त ठीक नहीं है, उसने कुछ क्षणपर्य्यन्त तो मेरी ओर देखा और फिर झल्लाकर कहा—"महाशय, मैं तुम्हारे कथनपर विश्वास नहीं करता, परन्तु छुट्टी फिर भी देता हूँ, जाओ यहासे। यदि तुम सरीखे क्लर्क यहाँ और आ जायँ, तो दफ्तरका काम ही बंद हो जाय। आज्ञा मिलते ही मैं तुरंत वहाँसे भागकर 'सीन' नदीपर जा पहुँचा। वह दिन भी आजहीके समान सुन्दर था और मैं वहाँसे 'माउशे' नामक स्टीमरपर सवार हो 'सैंट क्लाउड' को चल दिया। आह! उस दिन यदि मेरा ऑफिसर मुझको दफ्तरसे छुट्टी न देता, तो क्या ही अच्छा होता।

"सूर्यके प्रकाशमे मुझको अपनी देह फूलती हुई प्रतीत हो रही थी। नदी-किनारेके पेड़, मकान, तथा मेरे साथी अन्य यात्रीगण—सब-हीको, स्टीमर प्रेम-दृष्टिसे देख रहा था और मेरे हृदयमें, प्रत्येक पदार्थके—चाहे वह कुछ ही क्यों न हो—चुम्बन करनेकी प्रवल लालसा उठ रही थी। महाशय, आप समझे? यह सब मदनके जाल थे जो मेरे लिए बिछाये जा रहे थे। फिर कुछ कालके अनंतर 'त्रोकेदेरो' नामक स्थानपर छोटीसी पार्सल हाथमें लिये एक लडकी स्टीमरपर चढी और मेरे सम्मुख आकर बैठ गई। वह वास्तवमें सुंदरी थी; परन्तु देखिए कितने आश्चर्यकी बात है कि वसंत ऋतुका प्रारंभ होते ही, खिली हुई धूपमे यही स्त्रियाँ कितनी अधिक सुदर दीखने लगती है, मदके समान, हमारे मस्तिष्कोंको प्रभावित करनेवाला, उनका हाव-भाव एवं लावण्य भी तब कितना गजब ढाता है—उस समय तो वह, 'चीज़' (एक प्रकारकी मिठाई) खानेके पश्चात् पियी जानेवाली मदिराके समान, आनंददायक लगता है।

"यह लडकी, जिस प्रकार अभी आपकी ओर कनखियोसे देख रही थी, ठीक इसी प्रकार, वह भी मेरी ओर कभी कभी देख लेती थी, परंतु, मैं आपहीकी भाँति उसकी ओर दृष्टि गडागडाकर देख रहा था। फिर कुछ कालपर्य्यन्त एक दूसरेकी ओर देखते रहने पर, मुझको ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानो हम एक दूसरेसे इतने परिचित है कि वार्ता-

लाप करनेमें भी कोई आपत्ति न होगी। ऐसी धारणा होते ही, मैने उससे बातचीत प्रारंभ कर दी और वह भी मुझसे बोलने लगी। परंतु महाशय, सत्य जानिए, वह यथार्थमे सुंदरी भी थी और भली भी; उसको देखकर मुझे वास्तवमें मद सा चढ गया था।

"सेट-क्लाउड नामक स्थान आते ही, वह उतर गई, और मैं भी उसके पीछे पीछे हो लिया। यहॉपर उसको वह पार्सल देनी थी, परंतु उसके लौटनेपर स्टीमर रवाना हो जानेके कारण, मेरा और उसका साथ हो गया। सुगंधित उष्ण वायु बहनेके कारण हम दोनों इस समय उसासे भर रहे थे। मैने कहा—"वनमें, इस समय कैसा आनंद आवेगा!"

"बात आपने यथार्थ ही कही, वहॉ क्या कहना है!"

"श्रीमतीजी, यदि अनुचित न समझें तो हम उधर ही क्यों न चलें।"

"यह सुनते ही पहले तो उसने मेरी ओर दृष्टि उठाकर कुछ क्षण तक देखा–मानों वह यह जानना चाहती थी कि मै उपयुक्त पुरुप भी हूँ या नहीं; और फिर कुछ हिचकिचाहटके साथ मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। तदनंतर हम दोनों साथ साथ उसी ओर चल दिये। वृक्षोंके पत्ते भली भॉति न निकलनेके कारण, जहॉ एक ओर, वनकी लंबी, मोटी हरी घास धूपमें चमचमा रही थी, वहॉ दूसरी ओर, समस्त वायुमंडल भी पक्षियोंके मधुर कलरवसे गूँज रहा था और कीट भृंगादिक तक एक दूसरेके प्रति प्रेम प्रदर्शित कर रहे थे। फिर उस शून्य वनस्थलीकी गंध, और सुरभित उष्ण वायुसे मस्त होनेके कारण अपनी साथिनको चारों दिशाओंमें कूदते तथा भागते देख, मैने भी, वैसा ही करना प्रारंभ कर दिया। देखिए महाशय, कभी कभी हम भी कैसे मूर्ख हो जाते है!

"तत्पश्चात् अप्रतिबाधित रूपसे उसने वहॉ सैकडो ही गाने गाये होंगे; परंतु वह सब या तो थियेटरके थे, या 'म्यूज़ेत' (एक कवि) के। म्यूज़ेतके पद्य भी तब मुझको कैसे कवित्वपूर्ण लगते थे! उनको सुनकर मेरी ऑखोसे आनंदाश्रु निकल पडते थे। आह! इन मूर्खतापूर्ण गीतोसे हमारी बुद्धि कैसी भ्रष्ट हो जाती है। महाशय, मैं सत्य कहता हूँ कि वनमें इस प्रकार गानेवाली लड़कियोंसे और उनमें भी विशेपतया म्यूज़ेतकी कविता पढनेवालियोंसे तो कदापि विवाह न करना चाहिए।

" अंतमें वह तो थककर घासके एक ढालूस्थानपर जा बैठी और मैं उसके चरणोंके निकट हो लिया। उसके हाथ–नन्हें नन्हें हाथ–तब मेरे हाथोंमें थे। उनमे सुईके चिह्न इतनी अधिकतासे देख मेरा हृदय व्याकुल हो उठा और मैंने मनमें कहा—यह भी कैसे पवित्र परिश्रमके चिह्न है। परंतु आह! महाशय, आप जानते हैं कि इस पवित्र परिश्रमका अर्थ क्या है? सुनिए, इसका आशय यह है कि कारखानोंकी गपशप और काना-फूँसी द्वारा औरोंके दुश्चरित्र तथा अन्य गंदी बातें सुननेके कारण, उंगलियोंपर 'पवित्र श्रम' के चिह्न प्रकट करनेवाली इस लडकीका मन दूषित हो गया है। यह सूचिकाघात पता देते हैं उसके भ्रष्ट चरित्र, और मूर्खताभरी बात करनेवाले स्वभावका, और इनसे पता चलता है निम्न श्रेणीके व्यक्तियोंके दुःख-पूर्ण जीवन, और सकीर्ण हृदयका।

" हॉ, तो फिर उस दशामे, हम दोनो एक दूसरेकी ओर बहुत देर तक देखते रहे। आह! स्त्रियोंके नेत्रोंमें भी कैसी अद्भुत शक्ति भरी होती है; उनकी ओर देखते ही हम कैसे क्षुभित हो जाते है, और फिर वह हमारे तन-प्रदेशपर आक्रमण कर अधिकार जमा हमपर किस प्रकार शासन करती हैं। लोग इसको एक दूसरेका आत्म-दर्शन करना कहते हैं। आह! महाशय, देखिए तो कैसा कपट व्यापार है! एक दूसरेका आत्मा—हृदय—ठीक ठीक देख लेनेपर तो हम अवश्य ही ऐसे कार्योंको अधिक सावधानीसे करने लगेंगे। हॉ, तो यह सब बातें वास्तवमे ठीक होनेपर भी, उसके रूप-दाममें फॅसकर बावलासा हो जानेके कारण उस समय, मै उसको अपने बाहुयुगल-में आवेष्टित करनेका प्रयत्न ही कर रहा था कि उसने कहा—' पंजे दूर।' यह सुनते ही मैं घुटनोके बल बैठकर, अपने हृदयमे छिपी हुई व्यथा—जिसके कारण मेरा दम घुटासा जा रहा था—उसको सुनाने लग गया और फिर, मुझको इस प्रकार व्यवहार परिवर्त्तन करते देख वह पुन कनखियोंसे मानों यह कह रही थी—' वाह! तुमसे पुराने चडूलोंको भी हम स्त्रियॉ इसी प्रकार मूर्ख बनाती हैं, खैर, तुम्हारी बातपर भविष्यमें कुछ सोचा जायगा।'

" महाशय, विश्वास कीजिए, प्रेमके सम्बन्धमे तो हम पुरुष सदा ही नौसिखिया रहते हैं और यह स्त्रियॉ हमेशा चतुर खिलाडीकी भॉति हमारे साथ व्यवहार करती है।

" इसमे सन्देह नहीं कि यदि मै चाहता, तो उस स्त्रीको अपना सकता था; परन्तु उस समय उसकी कामना न कर मेरा मन दौड़ रहा था प्रेमकी ओर और वही मेरा आदर्श था। अपने समयको किसी अधिक उपयोगी काममे न लगाकर, उस समय मै भावुक हो रहा था और वास्तवमें यह मेरी मूर्खता थी, जिसको मैं समय बीत जाने-पर पीछेसे समझा।

" मेरी प्रेम-कहानीको बहुत कालपर्य्यन्त उचित मात्रामें सुननेके पश्चात् वह फिर उठ खड़ी हुई; और हम पुनः ' सेंट क्लाउड ' (St. Cloud) को लौट पडे। परन्तु पैरिस नगरी पहुँचने तक मैंने फिर भी उसका साथ न छोडा। यात्रासे लौटकर घर आते समय, उसको अत्यन्त खिन्न देखकर जब मैंने उदासीका कारण पूँछा, तो वह बोली—' आजके ऐसे सुंदर दिवस मेरे जीवनमें कितने थोड़े हुए हैं, इसी बातका मुझको सोच हो रहा है। ' उसका यह उत्तर सुनते ही मेरा हृदय इतने वेगसे धड़कने लगा कि मुझको अपनी पसलियाँ तक टूटती हुईसी प्रतीत होने लगी।

" अगले रविवारको मैं उससे फिर मिला और उससे अगलेको भी; तद-नंतर, हम दोनों प्रत्येक ही रविवारको एक दूसरेसे मिलने लगे और वौगि-वैल, सेट जरमेन, मायसोलफात और पौयसी इत्यादि, नगरके निकटस्थ, प्रेमियोंके भ्रमण करने योग्य सब ही स्थानोंकी, उसने मेरे साथ सैर की।

" वह कुलटा भी अब मुझसे प्रेम करनेका स्वाँग भरने लगी थी और अन्तमे सर्वथा हतबुद्धि हो मैंने तीन मास पश्चात् उससे विवाह ही कर डाला।

" महाशय, अकेले जीवन व्यतीत करनेवाले कोई एक क्लर्कसे—जिसको परामर्श देनेवाला भी कोई न हो—आप और आशा ही क्या कर सकते हैं ? ऐसे पुरुषोंके हृदयोमें तो सदा इसी प्रकारकी धारणाएँ उठती रहती हैं कि ' भार्या पाकर जीवन कैसा सुखी हो जायगा ! '

" ऐसी ही भावनाओंके कारण बेचारे पुरुष विवाह कर डालते हैं और फिर वहू-रानी घरमें पधारते ही प्रातःकालसे लेकर संध्यापर्यन्त या तो विना सोचे समझे, अज्ञानतापूर्वक पतिको नाम धरती हैं; अथवा व्यर्थकी वार्ता-से, या म्यूज़ेतके पद्योंको सक्षम स्वरसे गाकर, समय बिताती हैं ! (आह !

म्यूज़ेतके इन गीतोंसे भी हम कैसे ऊब गये हैं); फिर उनका कभी कोयले-वालीसे झगडा होता है, तो कभी दरवानसे गृहस्थीकी बातोंका लंबा-चौड़ा बखान होता है; शयनागारके रहस्य पड़ौसियोंकी नौकरानियोंके कानों तक पहुँचते है और पतिदेवकी कार्यप्रणालीकी समालोचना तक दूकानदारोके साथ होती है! कहाँतक गिनाऊँ, इन मूर्खताकी बातो, अद्भुत विचार, और बेहूदा रागद्वेषसे उनकी बुद्धि ऐसी कुंठित हो जाती है कि (उपर्युक्त बातोंको अपने ही ऊपर अधिक चरितार्थ होते देखकर) उससे वार्त्तालाप करनेपर मुझको प्रत्येक बार ही आँसू बहाने पड़ते हैं।

इतना कहकर कुछ तो आवेशमे और कुछ हाँपनी चढ जानेके कारण, वह चुप हो गया, और प्रेतात्माके सदृश बाधा पहुँचानेवाले इस सरल-प्रकृति पुरुषपर तरस खा, उसकी ओर देखकर मैं कुछ कहनेवाला ही था कि स्टीमर रुका और हम ' सेंट क्लाउड ' पहुँचे ।

मेरे हृदयको चुरानेवाली वह सुंदरी युवती भी इसी समय स्टीमरके नीचे उतरनेके लिए अपने स्थानपर खडी हो गई, और मेरी ओर कन-खियोंसे देखती हुई, निकटसे होकर ऐसी मुस्कराती चली कि उस ओर देखते ही, मैं बावलासा हो गया। स्टीमरसे तटपर उसको कूदते देख मै भी पीछेसे चलनेवाला ही था कि इसी दयालु पडौसीने मेरा हाथ पकड लिया; परंतु झटका देकर उससे पिंड छुड़ा मैं जब कुछ आगेकी ओर बढा, तो कोटका पल्ला पकडकर, मुझको अपनी ओर खींच उसने यह कहा.—' तुम नहीं जा सकते! तुम कदापि आगे पग न रख सकोगे! ' इन वाक्योको वह इतने उच्च स्वरसे कह रहा था कि प्रत्येक यात्री मुख मोड़कर मेरी ओर देखने और हँसने लगा। मुआमिला बेढब होता देख, उपहास और निंदाके भयसे, अत्यंत क्रोधित होनेपर भी मै उसी स्थलपर काष्ठके समान मूक और निश्चेष्ट हो खडा रह गया और इतनेमे, जहाज भी पुनः चल पड़ा ।

तटपर खड़ी हुई वह सुंदरी इस समय मुझको नैराश्य भावसे देख रही थी और वह उपद्रवकारी हाथ मल-मलकर मेरे कानमें कह रहा था—" मैने आपका कैसा उपकार किया, यह बात तो कमसे कम मान ही लीजिए। "

दत्तक पुत्र

दोनों झोंपड़ियाँ, एक दूसरेके पार्श्वमें-पहाड़ीके नीचे--समुद्र-तटपर खड़ी हुई थीं। इनमें दो किसान सपरिवार रहते थे। प्रत्येकके चार चार सन्तानें थीं। अनुत्पादक भूमिमे घोर परिश्रम करनेके अनन्तर दोनों खेतिहर, अपनी क्षुद्र सन्ततिका जैसे तैसे लालन पालन करते थे।

झोंपड़ियोंके पार्श्ववर्ती द्वारोंके सामने, शिशु-समूह प्रातःकालसे लेकर रात्रिपर्य्यन्त खेलता और धूलमें लोटता रहता था। दोनो कुटुम्बोमे विवाह और फिर सन्तान-प्रसव, प्रायः एक ही समय होनेके कारण, सबसे बड़े दो बालकोंकी अवस्था छै छै वर्षकी थी और सबसे छोटोंकी पन्द्रह पन्द्रह महीनेकी।

शिशु-समूहमें जब माताओंके लिए ही अपनी अपनी सन्तानको पहचानना कठिन होता था, तो फिर पिताओंकी तो कथा ही क्या है! ऐसी समस्या आ पड़नेपर उनकी तो सुध बुध ही जाती रहती थी और आठों नामोंके मस्तिष्कमे नाचनेके कारण सदा गड़बड़ उत्पन्न होती थी। यहाँ तक कि कभी कभी तो तीन तीन नाम उच्चारण करनेके पश्चात् गृहपति ठीक व्यक्तिको बुला पाते थे।

रोल-पोर नामक समुद्रतटस्थ स्नान-क्षेत्रसे इस ओर लौटनेपर सर्व प्रथम तुवाश-परिवारकी झोंपड़ी आती थी; जिसमें तीन बालिकाएँ थीं और एक बालक। दूसरे घरमें वैलिंस-परिवार रहता था। उसमें एक लड़की और तीन लड़के थे।

सूप (रसेदार मांस), आलू और शुद्ध वायुपर ही यह लोग मितव्ययितासे निर्वाह करते थे। कलहंसनियोंकी भाँति गृहपत्नियाँ, अपनी अपनी शावक सम सन्ततिको, प्रातः और सायंकालमे भोजनके लिए एकत्रित करती थीं। पचास वर्षके निरन्तर व्यवहारके कारण वार्निशकी हुई जैसी दीख पड़नेवाली मेज़पर, समस्त बालक अवस्थानुसार, एकके पश्चात् एक,

पंक्तिबद्ध बैठाये जाते थे। परन्तु वह इतनी ऊँची थी कि बेचारे सबसे छोटे बालक तो उसके तख्तोंतक भी न पहुँच पाते थे। उबले हुए आलुओंके शेष जलमें भीगी हुई, थालीभरी रोटियाँ, आधा फूल गोभी और प्याज़की तीन तीन गठियोंद्वारा ही समस्त परिवारको क्षुधा शान्त करनी पडती थी। कनिष्ठ शिशुको खिलानेका भार मातापर था।

रविवारके दिन, छोटीसी हाँडीमे मांस पकनेपर सब लोग उत्सवसा मनाते थे। गृहपति भी, इन अवसरोपर अन्य दिनोंकी अपेक्षा अधिक-काल-पर्यन्त भोजनपर बैठ बारम्बार यही कहा करते थे कि—"ऐसा भोजन, यदि हमारे यहाँ नित्य प्रति तैयार होता, तो क्या ही अच्छी बात होती।"

अगस्त मासमे, एक दिन तीसरे प्रहर, एक फिटन झोपडोंके द्वारपर आकर सहसा रुक गई,—और उसमे बैठी हुई युवतीने, जो घोडोंको हाँक रही थी, अपने पास बैठे हुए भद्र पुरुपसे कहा—"हैनरी, तनिक इन बालकोंकी ओर तो देखो! धूलमे लोटते हुए कैसे सुन्दर दीख पडते हैं!"

हृदयको शूलसम भेदनेवाले, उपालम्भ सरीखे, इन प्रशंसात्मक वाक्यो-को नित्यप्रति सुनते रहनेके कारण, जब पुरुषने इनका कुछ भी उत्तर न दिया, तो युवती गाडीसे कूद पडी और यह कहती हुई बालकोंकी ओर दौड़ गई कि—"मै इनको अवश्य हृदयसे लगाऊँगी। इनमेंसे उस एक नन्हेसे बालकको, अपने पास रखनेके लिए, मेरा मन कैसा आतुर हो रहा है।" फिर दो सबसे नन्हे बालकोंमेसे दुवाश-परिवारके एक शिशुको हाथोसे ऊपर उठाकर, इधर तो वह उसके गन्दे गाल, धूलिधूसरित केश और नन्हें नन्हे हाथोको प्रेमसे विह्वल हो चूमती थी और उधर वह, अतिशय प्रेम-वर्षासे घबराकर, बचनेके लिए भरसक प्रयत्न कर रहा था।

तदनन्तर पुन गाडीमे बैठ, प्रसन्नतापूर्वक, घोडेको दुलकी हाँकती हुई, उस समय तो, वह वहाँसे चली गई, परन्तु अगले ही सप्ताहमे, फिर वहाँ आकर और धरतीपर बैठकर उस नन्हें बालकको, उसने खूब ही ठूँस ठूँसकर मोयन पडी हुई मठरियाँ खिलाईं और दूसरोंको भी मिस्री बाँटी। अल्पवयस्का बालिकाकी भाँति, जब तक वह उन बालकोंके साथ खेलती

रही, तबतक धैर्य्यपूर्वक गाड़ीमें बैठे हुए पति महोदय उसकी प्रतीक्षा करते रहे।

अगली वार, उसने माता-पितासे भी परिचय प्राप्त कर लिया। फिर तो उसने, जेबोंमें सुन्दर, स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ और पैसे भर-भरकर प्रतिदिन ही वहाँ आना प्रारम्भ कर दिया।

इस स्त्रीका नाम था—श्रीमती हैनरी द ह्यूवियेरे।

एक दिन प्रातःकाल, पतिके साथ गाडीसे उतर कर अपरिचित बालकोंसे बातें किये बिना ही, वह सीधी किसानकी झोंपडीमें घुस गई।

किसान-दम्पति—जो इस समय चूल्हेके लिए लकडियाँ फाड रहे थे—इनके आते ही प्रथम तो आश्चर्यसे खडे रह गये और फिर अतिथियोंको बैठानेके लिए कुर्सियाँ आगे बढाकर औत्सुक्यपूर्ण दृष्टिसे उनकी ओर देखने लगे।

अब युवतीने टूटे फूटे और कॉपते हुए स्वरसे कहा—"मै तुम्हारे छोटे बालकको अपने साथ ले जाना चाहती हूँ। इसी कारण, मै तुमसे यहाँ मिलने आई हूँ।"

बेचारे देहाती यह वचन सुनकर ऐसे हतबुद्धिसे हो गये कि उनसे कुछ भी कहते न बन पड़ा।

दम आ जानेपर युवतीने फिर कहा कि "हम—अर्थात् मै और मेरे स्वामी—सर्वथा अकेले है। निःसन्तान हैं। इसलिए इसको अपने पास रखना चाहते है। क्या तुमको यह बात स्वीकार है?"

किसान-पत्नी, जो अब मुआमिलेको कुछ कुछ समझने लगी थी, यह बात सुनकर बोली—"क्या तुम हमारे 'रैलो' को यहाँसे ले जाना चाहती हो? नहीं, यह कदापि नही हो सकता।"

अब पति महाशयने यों कहना आरम्भ किया—

"मेरी पत्नी तुमको अपना आशय ठीक ठीक नहीं समझा सकीं। यह ठीक है कि हम इस बालकको गोद लिया चाहते हैं; परन्तु लौटकर वह तुमसे मिल सकेगा। यदि इसका चरित्र अच्छा रहा—जैसा कि हम आशा करते है कि अवश्य रहेगा—तो यह हमारा उत्तराधिकारी होगा। भविष्यमें यदि हमारे कोई सन्तान उत्पन्न हो गई तो सन्तानके साथ साथ इसको भी हमारी सम्पत्तिमेंसे समान भाग मिलेगा, और पूरी पूरी देख-रेख होनेपर भी

यदि भाग्यवशात् न सुधरा, तो वयस्क होनेपर इसको बीस हजार फ्रैंक मिलेंगे और यह धनराशि अभी हम एटर्नी (वकील) के यहाँ इसके नामसे जमा किये देते हैं। इसके अतिरिक्त हमने तुम्हारे सम्बन्धमें भी कुछ सोच लिया है और वह यह कि जबतक तुम जीवित रहोगे तबतक, तुमको भी सौ फ्रैंक प्रतिमास मिलते रहेंगे। क्या तुम मेरी बात समझ गये ?"

गाँववाली, जो ये बातें सुनकर अब क्रोधसे उठ खड़ी हुई थी, बोली—"तुम यह चाहते हो कि अपने पुत्रको मैं तुम्हारे हाथ बेच डालूँ। अरे राम ! यह बात भी क्या, माँसे पूछने योग्य है ! ऐसा तो कदापि न होगा। यह कार्य्य तो अत्यन्त ही गर्हित है।"

धीर एवं गम्भीर किसानने कहा तो कुछ नहीं; परन्तु बारम्बार सिर हिलाकर पत्नीके कथनसे, सहमति उसने भी प्रदर्शित कर दी।

श्रीमती द ह्यूवियेरे, अब निराश हो रोने लगी और पतिकी ओर मुँह मोडकर—उस बालकके समान कि जिसकी समस्त इच्छाएँ सदैव पूर्ण की गई हों—अश्रुभरे स्वरसे कहने लगी—"हैनरी, ये लोग न मानेंगे। कदापि न मानेंगे।"

पर पतिने, अन्तिम बार एक और प्रयत्न कर कहा—"परन्तु मित्रो, तुम अपने बालकके भविष्यको तो सोचो। उसकी प्रसन्नता और.........." उनकी बात पूरी न होने पाई थी कि उसको बीचहीसे काटकर किसान-पत्नीने झल्लाकर कहा—"सब सोच लिया ! खूब जाने बूझे बैठे हैं ! तुम यहाँसे बाहर निकलो। और फिर कभी हमको मुह न दिखलाना। इस प्रकारसे किसीके बालकको लेनेका विचार भी क्या खूब किया !"

इसी समय श्रीमती द ह्यूवियेरेको स्मरण हुआ कि यहाँपर, ऐसे दो छोटे छोटे बालक दृष्टिगोचर हुए थे। अतएव हठीली एवं लाड़के कारण बिगड़ी हुई स्त्रीके समान नेत्रोंमें आँसू भरकर उन्होंने फिर आग्रहपूर्वक पूछा—"क्या वह दूसरा छोटा बालक तुम्हारा नहीं है ?"

"नहीं, वह हमारे पडौसीका है। तुम चाहो तो उनके पास जाकर पूछ

सकते हो।" इतना कहकर किसान अपने घरकी कोठरीमें—जहाँ क्रुद्धा स्त्रीका स्वर अब भी प्रतिध्वनित हो रहा था,—घुस गया।

वैलिन्स दम्पति-युगल, इस समय मेजपर बैठे हुए, रोटीके टुकडोपर सड़ा हुआ मक्खन मितव्ययितापूर्वक चुपड-चुपडकर अभी धीरे धीरे चबा ही रहे थे कि पूर्वोक्त पति-पत्नीने, अपना प्रस्ताव परम चातुर्य्य और कौशलसे सारगर्भित भाषामें उनको भी जा सुनाया।

देहातियोंने, प्रथम तो अपना सिर हिलाकर अस्वीकारता प्रकट की; परन्तु यह जानकर कि हमको भी सौ फ्रैंक प्रतिमास मिला करेंगे अन्तमे उन्होंने आकुल होकर, इस विषयपर दृष्टिसंकेतद्वारा परामर्श करना ही उचित समझा। मनोव्यथाके कारण, बहुत कालपर्य्यन्त तो वह मौन ही रहे, परन्तु अन्तमें, पत्नीके प्रश्न करनेपर कि "तुम्हारी इस विषयमे क्या सम्मति है" किसानने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया कि "बात कुछ ऐसी निन्द्य तो है नहीं।"

श्रीमतीने घबराकर काँपते हुए स्वरसे उनके सम्मुख, अभी बालकके सुखकर भविष्य और आगे चलकर स्वयं उनको प्राप्त होनेवाली संपदाका चित्र खींचना प्रारम्भ ही किया था कि किसानने पूछा—"इन बारह सौ फ्रैंकोके सम्बन्धमें क्या आप किसी एटर्नी (वकील) के सम्मुख प्रतिज्ञापत्र भी लिखेंगे?"

"निःसन्देह। हम कल ही, इसका श्रीगणेश कर देंगे।" पति महाशयने शीघ्रतापूर्वक यह उत्तर दिया।

परन्तु किसान-पत्नीने जो अब भी इस प्रश्नपर विचार कर रही थी, यों कहना प्रारम्भ किया—"बालक छिन जानेपर, केवल सौ फ्रैंक मासिक मूल्य अपर्य्याप्त दीखता है। कुछ ही वर्ष बीतनेपर तो वह मजदूरी करने लगेगा। हम १२० फ्रैंकसे कम कदापि न लेंगे।"

अधीरतासे, पैर धरतीपर पटककर श्रीमतीने, यह संशोधन भी तुरन्त स्वीकार कर लिया और बालकको इसी समय अपने साथ ले जानेकी प्रबल आकांक्षाके कारण, इधर तो इन्होंने सौ फ्रैंककी एक अतिरिक्त राशि, पुरस्कारके रूपसे माता-पिताओंकी भेट की और उधर पतिने इकरारनामा (स्वीकृति-पत्र) लिखना प्रारम्भ किया। फिर कुछ ही कालके अनन्तर,

किसी दूकानसे तुच्छ पदार्थ प्राप्त करनेके समान, उस रोते-चिल्लाते हुए बालकको गोदमें उठाये हुए वह प्रसन्नवदना रमणी भी वहाँसे चल दी।

विदाईके इस दृश्यको, दुवाश-दम्पति-युगल भी, अपने द्वारपर, धीर गम्भीर भावसे खडे हुए देख रहे थे और अपनी अस्वीकारतापर उनको, शायद अब कुछ पछतावा भी हो रहा था।

इस घटनाके पश्चात् किसीने उस नन्हेंसे बालक जी वैलिन्सके सम्बन्धमें, फिर कोई बात नहीं सुनी। एटर्नीके यहाँ जाकर, बालकके माता-पिता, प्रतिमास १२० फ्रैंक नियमित रूपसे ले आते थे। दुवाश-पत्नीद्वारा घोर रूपसे अपमानित किये जाने और घर-घर उसीके द्वारा यह सन्देश पहुँच जानेके कारण कि बालकको इस प्रकारसे बेचना अत्यन्त ही अनैसर्गिक, दारुण, घृणित एवं घूँसखोरीका व्यापार है इन बेचारोंकी, अब अपने पडोसियों तकसे खटपट हो गई थी। दुवाश-पत्नी कभी कभी तो अपने नन्हें अबोध बालकको गोदमें लिये हुए उसको सुनानेके बहाने, उच्च स्वरसे यह कहा करती थी—"तुझको मैंने नहीं बेचा, बेचना अस्वीकार कर दिया। प्यारे बच्चे, मैं तुझको क्यों बेचती? मै धनी नहीं हूँ, इससे क्या! बालकोंको थोड़े ही बेचूँगी।"

पेन्शन मिल जानेके कारण, वैलिन्स-परिवारके दिन अब अत्यन्त सुखसे बीतते थे। परन्तु अत्यन्त दरिद्रतासे जविन व्यतीत करनेवाले दुवाश परिवारकी क्रोधाग्नि अब किसी प्रकार शान्त न होती थी। सबसे बडे लडकेके नियमित कालके लिए सेनामें भरती हो जानेसे, उस परिवारमे वृद्ध पिताके साथ श्रम करनेवाला अब केवल 'चारलोट' ही रह गया था। माता तथा दो छोटी बहनोंके भरण-पोषणका भार अब इसीपर था।

इक्कीस वर्षकी अवस्था हो जाने पर चारलोटने, एक दिन इन्हीं दो झोंपडोंके सम्मुख अत्यन्त ही सुन्दर गाडी रुकती हुई देखी, और सुवर्णकी बनी हुई घडीकी चैन लगाये हुए एक भद्र नवयुवक, श्वेतकेशा वृद्धाका हाथ थामे हुए उसमेंसे बाहर आया। बुढियाके कहनेपर कि उस दूसरे घरमें चलना होगा, वह वैलिन्सकी झोपडीमें अपने घरकी भाँति सरलतासे घुसा चला गया।

बुढिया मा इस समय मैला वस्त्र धो रही थी और बूढा पिता दीवारमें बनी हुई अँगीठीके पास खर्राटे भर रहा था। आगन्तुकोंकी पदध्वनि होने पर जैसे ही इन दोनोने सिर उठाकर सामनेकी ओर देखा तैसे ही युवाने नतमस्तक हो कहा—

"पिता, प्रणाम। माता, प्रणाम।"

यह सुनते ही दोनों प्राणी भयभीत होकर खडे हो गये। हड़बड़ीमें बेचारी बुढ़ियाका साबुन भी पानीमें गिर पडा और वह अस्फुट स्वरसे केवल यही कह सकी—"मेरे बच्चे, क्या तुम हो? क्या तुम लौट आये?"

पुत्रने, बुढियाको बारम्बार हृदयसे लगाकर अभिवादन किया और बूढेने उस शान्त स्वरसे,—कि जिसकी उसको टेवसी पड गई थी, कहा—"जीन, तुम लौट आये, अच्छा हुआ।" यह वाक्य इस प्रकार कहा कि मानों लड़का घरसे अभी महीना भर पहले ही बाहर गया था।

पारस्पर कुशल क्षेमके अनन्तर, माता-पिता, पास-पडोसियोंसे मिलाने और दिखानेके लिए, पुत्रको, मेयर, डिपुटी मेयर, पादरी और स्कूल-मास्टरके यहाँ ले गये।

अपनी झोंपड़ीके द्वारपर खड़े हुए चारलोटने उनको इस प्रकारसे जाते हुए देखा।

उस दिन, सन्ध्यासमय, भोजनकी बेला, उसने अपने बूढे माता-पितासे कहा—"वैलिंसके लड़केको इस प्रकार यहाँसे निकलनेका अवसर देकर, तुम दोनोंने बड़ी ही मूर्खताका कार्य्य किया।"

पुत्रकी यह बात सुनकर माताने आग्रहसे कहा—"मै अपने बालकको क्यों बेचती?"

पिताको चुप देखकर पुत्रने अब यों कहना आरम्भ किया—"मन्दभाग्य होनेके कारण ही मेरी इस प्रकारसे बलि दी गई।"

वृद्ध दुवाश, यह वाक्य सुन क्रोधित हो बोला—"अपने पास रखनेके कारण क्या तुम हमको धिक्कार रहे हो?" पुत्रने निर्दय होकर कहा—"हाँ, मैं तुमको इस मूर्खताके कारण धिक्कारता हूँ। तुम सरीखे माता-पिताओंके कारण ही सन्तानोंके अभाग्यकी सृष्टि होती है। तुम इस योग्य हो कि, तुमको छोड़कर मुझे कहीं और चल देना चाहिए।"

भोजनकी थालीपर बैठी हुई बुढ़िया माता, इन बातोंको सुनकर रो रही थी। उसके सिसकियाँ भरनेके कारण, चमचा भरा सूप, मुखमें डालनेपर आधा बाहर ही बिखर गया। तब वह बोली—"सन्तानके लालन-पालनमें जीवन निछावर कर देनेपर भी उनको माता-पितामें तनिक-सी भी श्रद्धा नहीं होती, वे सब कुछ भूल जाते हैं।"

यह सुनकर पुत्रने झल्लाकर कहा—"इस दशामे जीवित रहनेकी अपेक्षा तो उत्पन्न न होना ही कहीं अधिक श्रेयस्कर था। दूसरे बालकको देखकर तो मेरा हृदय धक्सा रह गया और मैंने मनमें कहा—इस समय मेरी भी ठीक यही दशा हो सकती थी।" बात करते करते अब वह खडा होकर कहने लगा। "मेरी समझमे, मेरे लिए यहाँ अब और अधिक ठहरना उचित नही है। यहाँ रहनेपर मै प्रातःकालसे लेकर सन्ध्या समय तक सदा ऐसी ही बाते सुनता रहूँगा और उनसे तुम दोनोंका जीवन दुःखित हो जायगा। तुम्हारी इस चूकको मैं कभी क्षमा न करूँगा।"

दम्पति-युगल मुख नीचा किये हुए, अश्रुपूरित नेत्रोंसे पुत्रका उलाहना सुन रहे थे।

पुत्र अभी कह रहा था—"नहीं, नहीं, यह बातें तो कल्पनातीत है। मेरे लिए तो किसी अन्य-स्थानमे जाकर जीविका उपार्जन करना ही परमोपयोगी है।"

इतनेमे उसने दर्वाजा खोल दिया। किवाड खुलते ही, बाहरसे शोर-गुलकी आवाज आने लगी। वैलिस-परिवार इस समय अपने पुत्रके गृहागमनका उत्सव मना रहा था, इसी कारण यह शोर हो रहा था।

छाया

हालहीके, एक अभियोगके संबंधमें बातचीत हो रही थी कि आपसमें बात छिड गई। इसपर हममेंसे प्रत्येकने एक एक कहानी—सत्य घटना—कह सुनाई। संध्याका समय था, हम रु-द-ग्रेनेल नामक स्थानके एक पुराने जमींदारीके मकानमें बैठे हुए थे। एकत्रित पुरुष सब मित्र ही थे, कोई गैर न था। वृद्ध मारकिस द-ला-वैली-जिनकी अवस्था इस समय बयासी वर्षकी थी, उठे और चिमनीके ऊपर बनी हुई कार्निस (मैंटिलपीस) पर अपनी कुहनी टेककर, कुछ काँपते हुए स्वरसे बोले—

"मुझे भी एक अपूर्व बात मालूम है। वह ऐसी अद्भुत है कि प्राय: समस्त जीवन बीत जानेपर भी, वह आज तक मेरे ध्यानसे नहीं उतरी। उस घटनाको हुए, छप्पन वर्ष बीत गये, परंतु कोई भी ऐसा महीना नहीं बीतता कि जिसमे मुझको उसका स्वप्न न दीखता हो। केवल इसीसे आप अनुमान कर सकते है कि मेरे मनपर उसकी कैसी गहरी एवं भयावह छाप लगी हुई है। घटना घटित होते समय दस मिनट तक, मै ऐसी बुरी तरह घबरा गया था कि आज तक कुछ न कुछ भय, मुझको सदा ही बना रहता है। सहसा शब्दोंके कारण मै भयानक रीतिसे जब-तब चौक उठता हूँ और रात्रिको अँधकारमें वस्तुओंके आकार आदि भले प्रकार न दीख सकनेके कारण, उनको देखते ही मेरे मनमें भयके कारण, वहाँसे भाग जानेकी इच्छा प्रबल हो उठती है। थोडे शब्दोमें यों समझिए कि मुझको अंधकारसे भय लगता है।

"यदि मेरी इतनी अवस्था न होती, तो मैं शायद ही अपनी इस दुर्बलताको इस प्रकार स्वीकार करता, परंतु अब तो मैं सब कुछ कह सकता हूँ। वास्तविक भय उपस्थित होनेपर मै तनिकसा भी कभी पीछे न हटा, अतएव बयासी वर्षकी अवस्था हो जानेपर, काल्पनिक भयके सम्मुख, यदि मैं अब इतना वीर न जँचूं, तो भी, किसीको आपत्ति न होनी चाहिए।

"उस घटनाके कारण मैं ऐसा विचलित हो गया था और उससे मुझको ऐसा घोर भयावह एवं रहस्यमय कष्ट हुआ था कि उसके संबंधमें मैंने आज तक किसीसे भी कुछ नहीं कहा। आज मैं बिना कुछ सफाई दिये उस घटनाका ठीक ठीक यथाक्रम वर्णन ही किये देता हूँ।

"जुलाई सन् १८२७ में मैं एक रुऑ नामक नगरमें ठहरा हुआ था। एक दिन, मैं समुद्रतटस्थ बॉधपर टहल रहा था कि मुझे एक पुरुष दिखाई दिया, जिसको देखते ही मैं, कुछ पहचाना तो, परन्तु उस समय, मुझको यह ठीक ठीक याद न आता था कि वह था कौन। उसको देखते ही, मैं वैसे ही जरा रुका था कि आगन्तुकने भी मेरी ओर दृष्टिपात कर तुरन्त अपना हाथ बढा दिया।

"यह मेरा एक मित्र था, और युवावस्थामें मैं इससे बहुत ही प्रेम करता था। मैने इसे पॉच वर्षसे नहीं देखा था, परन्तु इतने ही समयमें यह ५० वर्षका-सा दीख पड़ता था। इसके समस्त केश श्वेत हो गये थे और कमर भी झुक गई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि इसकी देहमे कुछ भी पुरुषार्थ शेष नहीं रहा है। देखते ही वह मेरे मनके कौतूहलको ताड़ गया और अपनी दुख भरी रामकहानी—जिसके कारण उसका जीवनतक छिन्न-भिन्न हो गया था—सुनानी प्रारभ कर दी।

"एक कुमारीके प्रेमपाशमे बुरी तरह फँस जानेपर, इसने उससे विवाह कर लिया था, परंतु द्वितिय स्वर्गसमान इस आनंदको, भोग करते हुए केवल एक वर्ष ही बीता था कि पत्नीका, हृदय-रोगके कारण, देहावसान हो गया। उसी दिन अपनी पत्नीके शवको समाधिस्थ कर जमीदारीकी हवेली छोड़ यह रुऑ-नगरस्थ अपने दूसरे निजी घरमे आ गया था। यहाँ यह अकेला और उदास रहता था, दुःखित रहनेके कारण इसके व्यथित मनमे आत्महत्या करनेका विचार सदा उठता रहता था।"

"इतनी कथा सुनाकर इसने मुझसे कहा कि, अब तो तुम यहाँ मिल ही गये, क्या ऐसे समयमें भी मेरा एक अत्यंत आवश्यक कार्य न करोगे? मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरे शयनागारमें रक्खे हुए एक डैस्कमेसे कुछ आवश्यकीय काग़ज़ ला दो। मैं यह बात ऐसी गुप्त रखना चाहता हूँ कि किसीपर भी प्रकट न हो, इसी लिए किसी नौकर या

मुंशीको नहीं भेजता और मैं, चाहे कुछ भी हो, किसी प्रकारसे भी वहाँ उस मकानमें, अब प्रवेश करना नहीं चाहता। मैं तुमको अपने कमरे तथा डैस्क दोनोंकी चाबी दे दूँगा, क्योंकि मकान छोडते समय, मैं उसको बंद कर आया था। मालीसे भी कुछ कहलाना है कि जिससे वह तुम्हारे जाते ही शैट्टो (भवन) का द्वार खोल दे। तुम प्रातःकाल मेरे यहाँ ही भोजन करना, उसी समय, मैं सब ठीक करूँगा।

" मैंने भी इस ज़रासे कामको कर डालनेकी प्रतिज्ञा कर ली। क्योंकि यह स्थान रुऑ-नगरसे कुछ ही मीलकी दूरीपर था। घोड़ेपर चढकर जानेमें, मुझे कठिनतासे एक घंटा लगता।

" अगले दिन प्रातःकाल दस बजे मैंने अपने मित्रके साथ भोजन किया, परंतु वह प्रायः मौन ही रहे।

" उन्होने इस चुप्पीकी मुझसे क्षमा चाही; क्योंकि उनके भूत-पूर्व आनन्दकी रंगभूमिमें मेरे जानेके विचार-मात्रसे ही उनका हृदय भर आया था। वास्तवमे, इस समय उनके मनमें भयानक उथल पुथल-सी मची हुई प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थी।

" अंतमें, मुझे क्या करना होगा यह उन्होंने भली भाँति समझा दिया। बात बहुत सीधी थी। मुझको डैस्कके दाहिने हाथवाली प्रथम दराज़मेसे, एक चिट्ठियोका गट्टा और एक पुलिंदा क़ागज़ोंका, यही दो वस्तुएँ, लानी थी। डैस्ककी चाबी मुझे देकर मित्रने कहा—'पत्र आदिको न देखनेके लिए आपसे याचना करनेकी मुझको आवश्यकता नहीं है।'

" यह बात मुझे बहुत बुरी मालूम दी, और मैंने उसी समय इसका उत्तर भी दे दिया। इसपर वह गिडगिडाते हुए बोले—' क्षमा करो, तीव्र यंत्रणासे पीड़ित होनेके कारण ही, मेरे मुखसे ऐसे शब्द निकल गये थे।' इतना कह उनकी ऑखोंमें आँसू भर आये।

" लगभग एक बजे, मैंने कार्य संपादन करनेके लिए उनसे विदा ली।

" ऋतु सुहावनी हो रही थी, मैं खेतोंके बीच घोडेपर दुलकी (चालसे) जा रहा था, लवा पक्षी सुन्दर स्वरसे गा रहे थे, और मेरे जूतोंसे तलवार टकरानेके कारण जो बार बार शब्द होता था वह मानों इस संगीत-

की ताल थी। वृक्षोंकी शाखाएँ मेरे मुखसे बार बार टकरा रही थीं। मेरे बलिष्ट एवं दृढ़ होनेके कारण यह मनोमोहक दृश्य मेरे हृदयको उल्लाससे भरे देता था। उस समय मैं कभी कभी वृक्षोंके पत्ते चबा डालता था।

" शेट्टो (भवन) के पास आकर, मैंने मालीके नामका पत्र जेबसे निकाला, परंतु उसपर भी मोहर लगी हुई देखकर मुझको बडी हैरानी हुई। प्रथम तो मैं ऐसा झल्लाया कि अपनी प्रतिज्ञा पूरी किये विना ही वहाँसे लौटना चाहता था; परंतु फिर, मुझे यह ध्यान आया कि, इससे मेरी 'तुनक मिजाजी' प्रकट होगी, बहुत संभव है कि अव्यवस्थित चित्तके कारण मेरे मित्रने यों ही—विना बिचारे—लिफ़ाफ़ा बंद कर दिया हो और इस बातकी ओर उनका ध्यान ही न गया हो।

" जमींदारी-भवन बीस वर्षसे छोड़ा हुआ-सा प्रतीत होता था। फाटक खुला हुआ था, उसकी चूले टूट गईं थीं, रास्तोंपर घास जमी हुई थी और फूलोंकी क्यारियोंका तो ढूंढ़नेपर भी पता न चलता था।

" दर्वाजेपर मेरे ठोकर मारनेके शब्दको सुनकर बगली दरवाजेसे एक बूढ़ा व्यक्ति निकलकर बाहर आया। मुझे खड़ा देखकर, वह आश्चर्यसे सन्नाटेमें आ गया। मेरे पत्र देनेपर उसने, उसे कई बार पढा, और फिर बहुत देरतक उसे लौट पलटकर ऊपर नीचे देखनेके पश्चात्, जेबमें रख, मुझसे यह कहा—' हाँ, तो आप चाहते क्या है ?'

" मैंने संक्षेपमें कहा—' स्वयं समझ लो, तुमने तो अपने स्वामीकी आज्ञा अभी पढ़ी है। मैं शैट्टो (भवन) में घुसा चाहता हूँ।'

" उसका हृदय अब भरसा आया था।

" ' क्या आप वहाँ—उनके—श्रीमतीके—कमरेमें जायेंगे ?'

" मेरा धैर्य अब छूटा जा रहा था।

" ' छिः ! तुम्हारा यह साहस कि मुझसे प्रश्न करते हो ? '

" घबराहटके कारण, उसके मुखसे ठीक ठीक स्वर भी न निकल सका।

"'नहीं, नहीं—सरकार—परंतु—परंतु वह तो, उनकी श्रीमतीकी मृत्युके उपरान्त आज तक खोला ही नहीं गया है। यदि आप कृपाकर यहाँ पाँच मिनट भी और प्रतीक्षा करेंगे, तो मै जाकर देखूँगा कि......'

"मैने क्रोधमें आ उसे बीचहीमें रोककर कहा—'बहाना क्यों करते हो? तुमको तो मालूम है कि तुम वहॉ घुस ही नहीं सकते, क्यों कि चाबी तो मेरे पास है, यह देखो!'

"फिर उसने और अधिक आक्षेप न किया।

"'श्रीमन्, आइए, मै आपको राह बताता हूँ।'

"'मुझे केवल जीना दिखाकर विदा हो जाओ। मैं अपनी राह विना तुम्हारी सहायताके ही ढूँढ़ लूँगा।'

'परंतु—श्रीमान्—वास्तव—'

"इस समय मेरा धैर्य्य बिलकुल जाता रहा था, मै उसे एक ओर धक्का देकर मकानमे घुस गया।

"सबसे प्रथम मै रसोई-घरमें गया, जहॉंपर यह पुरुष और इसकी स्त्री उस समय रहते थे। इसके पश्चात्, एक बडे हॉलको पारकर, मै जीनेपर चढ, उसी दरवाजेपर जा पहुँचा, जिसका वर्णन मेरे मित्र-ने किया था।

"उसको बहुत सुगमतासे खोलकर, मैं कमरेमें घुसा। वहॉ ऐसा घना अंधकार हो रहा था कि प्रथम तो मुझे कुछ दिखाई ही न दिया। कमरेके खाली, तथा बंद रहनेके कारण वहॉपर सड़ी सी दुर्गंध आ रही थी; अत एव मै सहसा रुक गया। जब धीरे धीरे मुझको अंधकारमे देखनेका अभ्यास हो गया, तब मैने इस बृहत् शयनागारको बडी अव्यवस्थित दशामें पाया। चारपाईपर चादरें न थी, पर दरी बिछी हुई थीं और तकिये लग रहे थे—एक तकियेपर तो किसीके हालहीमे कुहनी या सिर टेकनेके चिह्न तक बने हुए मुझे प्रत्यक्षतया दिखाई दिये।

"कुर्सियॉ भी यथास्थान न थी। एक किवाड भी जो वास्तवमे, किसी कोठरीका था, मुझे वहॉपर, आधा खुला दिखाई दिया।

"मै सर्व प्रथम खिड़कीके पास गया, और अधिक प्रकाश आनेके लिए मैने उसे खोलना चाहा, परतु तीलियोंके बंधोंपर इतनी जंग लग गई

थी, कि मैं उनको हिला तक न सका। यह देख मैने उनको, अपनी तलवार-से तोडनेकी चेष्टा की पर इसमे भी असफल रहा। अपने प्रयत्नोको इस प्रकार असफल होते देख, मुझको भी झुँझलाहट आ रही थी; परंतु इस अर्ध-अंधकारमें अब भली भाँति देख सकनेके कारण, मैने अधिक प्रकाश लाने-का उद्योग करना छोड दिया; और डैस्ककी ओर चल दिया।

"मैं अब एक आराम-कुर्सीपर बैठ गया और डैस्कका ढकना सरका दराज खोलकर जो देखी तो ऊपर तक भरी पाई। मुझको तो इनमेसे केवल तीन पैकटोकी आवश्यकता थी। किस प्रकार इनको पहिचानना होगा यह भी मुझको भली भॉति ज्ञात था, बस मैने तुरन्त ही खोज प्रारंभ कर दी।

"मै सिरनामें पढनेके लिए आखोपर भरसक ज़ोर दे रहा था कि मुझे सर-सर-सा शब्द सुनाई दिया और कोई वस्तु मेरी पीठसे लगकर चली गई। यह समझकर कि हवाके झोंकेसे पर्दा सरक गया होगा, मैने इस ओर कुछ भी ध्यान न दिया। परंतु एक या दो मिनटके पश्चात् ही, बहुत ही मंद गतिसे किसीके चलने-फिरनेकी फिर आहट सुनाई दी, जिसके कारण मै कुछ घबरासा गया और मेरी देहमें भी एक प्रकारकी कॅपकॅपी सी दौड़ गई। घबराना तो मूर्खताका चिह्न था, और मुख मोड़कर पीछे देखना मैंने अपनी मान-मर्यादाके विरुद्ध समझा। मुझे दूसरा पैकट भी, अभी मिला था, और मैं, तीसरे पैकटको ढूंढनेका विचार कर रहा था कि अपने कंधेपर, सुदीर्घ, कष्टप्रद, गहरे साँस खीचनेका शब्द सुनते ही मै अपने स्थानसे पागलकी भॉति उछलकर कुछ दूर जा खड़ा हुआ। उछलते समय मेरा हाथ भी घूमकर तलवारके दस्तेपर स्वयं ही जा पड़ा था। वास्त-वमे, यदि मैं उसको अपनी कमरमे न पाता तो वहॉसे कायरकी भॉति अवश्य ही निकल भागता।

"श्वेतवस्त्राच्छादित एक दीर्घकाय स्त्री, कुर्सीके पीछे जहॉपर मै एक क्षण पहले बैठा था, खड़ी हुई मेरी ओर ऑखें गडाकर देख रही थी।

"मेरे समस्त अंग उस समय ऐसे कॉप रहे थे, कि मेरे, मुखके बल गिरनेमें कुछ भी संदेह न था। जिसको इसका अनुभव न हुआ हो, वह भला इस तर्कातीत, घोर कष्टदायक भयको कैसे समझ सकता है? ऐसे समय, मन शून्य हो जाता है, हृदयकी धड़कन बंद हो जाती है और शरीरके समस्त अवयव स्पजकी भॉति छिद्रयुक्त हो जाते है।

"प्रेतोंके अस्तित्वमें विश्वास न करनेपर भी, मृत—आत्माओंके भीषण भयके कारण तब मेरी जान-सी निकल रही थी। पारलौकिक भयके कारण उस समय, मुझको मानसिक पीड़ा भी हो रही थी और वह भी आह! ऐसी भयंकर कि उसके कारण कुछ ही क्षणमें मुझे ऐसा दारुण कष्ट हुआ कि अपने समस्त जीवनमें वैसा कभी और नहीं हुआ। यदि वह स्त्री न बोलती—चुप ही रहती, तो मेरे प्राण-पखेरू अवश्य ही उड जाते। परंतु वह बोली और ऐसे मिष्ट, तथा करुण स्वरसे, कि मेरे स्नायुतक फड़ककर झंकार देने लगे। यह तो कहना कठिन होगा कि मैं स्वस्थ हो गया था, या मेरी बुद्धि ठिकाने आ गई थी। नहीं, मैं तब भी भयभीत था और यह समझनेकी भी मुझे सामर्थ्य न थी कि मैं क्या कर रहा हूँ। परंतु यह सब कुछ होनेपर भी पुराने सैनिकोंकी कुछ गंध मुझमें उस समय तक शेष रह गई थी, और यही कारण था, कि इतना व्यस्त होनेपर भी मैं अपनी गर्दन उठाये ही रहा। स्त्रीने कहा—'ओह, श्रीमन्, आप मेरी बहुत कुछ सहायता कर सकते हैं।'

"मै इसका उत्तर देना चाहता था; परंतु मुखसे तो एक शब्द निकालना भी असंभव हो रहा था। मेरे कंठसे उस समय केवल कुछ अस्फुट शब्द ही निकल सके। स्त्रीने इसपर कहा—'क्या आप ऐसा करेंगे? आप मेरी रक्षा कर सकते हैं, मुझे अच्छा कर सकते हैं। मुझे भयंकर पीडा हो रही है। मुझे कैसा कष्ट हो रहा है। ओह, कैसा भयानक कष्ट हो रहा है और धीरे धीरे मेरी आराम-कुर्सीपर बैठकर वह मेरी ओर देखती रही।'

"क्या आप मेरी सहायता करेंगे?'

"मेरा स्वर अब भी बंद था, अतएव गर्दन झुकाकर ही मैंने स्वीकृति दे दी।

"इसपर उस स्त्रीने कछुएकी पीठका बना हुआ कंघा मेरी ओर कर मंद स्वरसे कहा—'मेरे बाल संवार दीजिए; ओह! कृपाकर मेरे बाल संवार दीजिए; इससे मै चंगी हो जाऊँगी; मैं उनको संवारना चाहती हूँ, मेरे सिरको तो देखो—मुझको कितना कष्ट हो रहा है; मेरे बाल कैसे बिखरे हुए है।'

"मैंने देखा कि उसके बिखरे हुए केश—सुदीर्घ कृष्ण केश—कुर्सीके पीछे लटककर पृथ्वी छू रहे थे।

"मैंने क्यों प्रतिज्ञा की? क्यों काँपते हुए हाथोंमें कंघा लिया? और क्यों उनके सुदीर्घ, कृष्ण सर्पसमान केश अपने हाथोंमें लिये, जिनके स्पर्श मात्रसे मेरी त्वचा तक भयानक रीतिसे शीतल पड गई? मैं, यह सब बतानेमे असमर्थ हूँ।

"मेरी उँगलियोंमें उनका स्पर्श-ज्ञान अब भी बना हुआ है, और वह बात याद आनेपर, मैं अब भी काँप उठता हूँ।

"मैंने उसके बाल खोले, हिमसदृश लटोंको न मालूम कैसे स्पर्श किया, और उलझे हुए केशपाशको सुलझाकर भली भाँति गूँथा। स्त्रीने मस्तक नवाकर, गहरी साँस ली, मानो उसे सुख मिल रहा था। फिर सहसा यह कहकर कि कि मैं आपको धन्यवाद देती हूँ मेरे हाथसे कंघा हटाकर उसी अधखुले दर्वाजेमे, जिसपर मेरी दृष्टि पडी थी, दौड गई।

"अकेले रह जानेपर मुझे कुछ मिनट तक तो—भयानक स्वप्न देखकर जागनेवालेके समान घबराहट रही। फिर अंतमें धीरे धीरे मुझे ज्ञान होने लगा, तब मैं खिडकीकी ओर दौडा और पूरा बल लगाकर किवाड खोल दिये, कमरा प्रकाशसे भर गया। इसके पश्चात् मैं तुरंत उस द्वारकी ओर दौडा जिसमें वह स्त्री घुसी थी, परंतु अब मैंने उसको बंद पाया, बहुत बल लगानेपर भी वह हिला तक नहीं।

"रणभूमिमें जिस प्रकार सैनिकोमे आकस्मातिक भय फैल जाता है, उसी प्रकार मेरे मनमे भी, भय संचार होनेके कारण, यहाँसे भागनेकी इच्छा प्रबल हो उठी। चिट्ठियोंके तीनों पुलंदोको खुले हुए डेस्कसे झपट-कर उठाकर मैं कमरेसे दौड निकला; चार-चार सीढी न मालूम किस प्रकार एक ही समयमें पारकर मैं बाहर आया। घोडा कुछ ही कदमकी दूरीपर खडा था, मै कूदकर सवार हुआ ही था, कि उसने चौकड़ी भरनी प्रारंभ कर दी।

"फिर रुऑमें अपने मकानपर आकर ही मैंने दम लिया। घोडेकी रास अर्दलीको देकर, मै सीधा अपने कमरेमें चला गया, और इस समस्या-पर एकान्तमें विचार करनेके लिए, मैंने कमरा भी अंदरसे बंद कर लिया। लगभग एक घंटे तक, बहुत ध्यानपूर्वक मैं इस प्रश्नको मनमें विचारता

रहा कि कहीं मैं भ्रमका शिकार तो नहीं हो गया ? वात-व्याधिका प्रकोप होनेपर चित्तवृत्तियोंकी गतिका निरोध नहीं हो सकता और वह दूर दूर तक दौड लगाना प्रारंभ कर देती हैं और इसी कारण बहुधा ऐसे दृश्योंकी भी मानसिक जगतमें सृष्टि होने लगती है, और हृदय भी इन अलौकिक बातोका गढसा बन जाता है। मैं भी वास्तवमें इसी रोगसे ग्रसित था। अपनी रुग्णावस्थामें मैंने भी कोई ऐसा ही काल्पनिक दृश्य देखा है, ऐसा मै, निश्चय करनेवाला ही था कि खिडकीके निकट आनेपर मेरी दृष्टि सहसा अपने वक्षस्थलकी ओर पड़ी,—अरे ! मेरे फौजी 'गल-वस्त्र' पर तो वही सदीर्घ कृष्ण केश पड़े हुए थें। काँपती हुई उँगालियोंसे मैंने उनको एक—एक—कर, बीना, और खिड़कीकी राह बाहर फैका तब मैंने अपने अर्दलीको बुलाया। एक तो मेरा चित्त वैसे ही ठिकाने न था, दूसरे मै यह भी सोचना चाहता था कि मुझे मित्रसे क्या कहना चाहिए, अत एव मेरा उनसे उसी दिन मिलना न हो सकता था। मैंने चिट्ठियाँ उनके पास भेज दी, जिनकी रसीद उन्होंने सैनिकके हाथ भेज दी। उन्होने मेरे क्षेम-कुशलके संबंधमें विशेष आग्रहसे प्रश्न भी किया था और यह उत्तर मिलनेपर कि सूर्याघातके कारण मुझको ज्वर आ गया है, उनको बड़ी चिंता हुई। अगले दिन, सब सत्य वार्त्ता सुनाने-के विचारसे मैं उनके यहाँ गया; परतु वह तो संध्यासे ही कहीं चले गये थे, और उस समय तक न लौटे थे। मै फिर दोबारा, दिनमें, उनके घर गया। मेरे मित्र उस समय तक भी अनुपस्थित थे। एक सप्ताह तक राह देखने पर भी जब उनके कुछ भी समाचार न मिले, तो मैंने अधिकारियोंको इसकी सूचना कर दी। तहकीकात—अनुसंधान करनेपर भी न तो उनका कोई समाचार मिला, और न यह ही ज्ञात हुआ, कि वह किस कारणवश इस प्रकार लोप हो गये।

" त्यक्त भवन (शैट्टो) में भली भाँति अनुसंधान करनेपर भी कोई संदेहजनक बात न मिली। वहाँ स्त्रीके छिपा रखनेका कोई चिह्न तक न था।

" जब सब प्रयत्न निष्फल हो गये तो और अनुसंधान करना छोड दिया गया, और छप्पन वर्ष बीत जानेपर भी मुझे कुछ मालूम न हुआ। इस संबंधमे मेरी जानकारी अब भी पूर्ववत् ही बनी हुई है। "

भयंकर प्रतिशोध

'वायरलोन' देखे मुझे पंदरह वर्ष वीत गये थे। अपने मित्र सवैंलके साथ मैं वहाँ गत शरदृऋतुमें फिर शिकार खेलने गया, उनके 'आस्य-घर' को जर्मनोंने नष्ट कर दिया था, परंतु उन्होंने उसे दोबारा बनवा लिया था।

मुझे इस प्रान्तसे विशेष प्रेम था। यह उन रम्य स्थानोंमें है, जिनके देखते ही नयन, मंत्रमुग्धसे हो जाते हैं। वारम्वार दृष्टिगोचर होनेके कारण किसी न किसी झरने, वनस्थली, झील अथवा पहाड़ीकी स्मृति प्राकृतिक-दृश्य-प्रेमियोंके हृदयङ्गम हो समयपर उनके मनको हर्षदायक घटना की भाँति विकसित करती रहती है। वसंत ऋतुमें जिस प्रकार प्रात.कालके समय हलकी गाछके कपडे पहिनकर सडकपर जाती हुई किसी सुन्दरीका मुख, केवल एक बार ही देख लेनेसे हृदय-पटलपर सदाके लिए अंकित हो, एक प्रकारकी अतृप्त लालसा चित्तमें उत्पन्न कर देता है, उसी प्रकार कभी कभी कोई सुंदर वन, रम्य तट, अथवा फूलोंकी क्यारी एक वार देख लेनेहीसे हमारे मनमें ऐसी बस जाती है कि उसकी स्मृति कभी विलीन नहीं होती, वरन् यदा-कदा, उसका मानस-चित्र प्रसन्नता ही संचार करता रहता है।

वायरलोनका तो समूचा प्रदेश ही मुझको अत्यंत प्यारा लगता था। उसकी जहाँ-तहाँ लगी हुई सघन वृक्षावली मुझको अतीव भली लगती थी और उनके मध्य स्थान-स्थानपर वहती हुई स्वच्छ जलधाराएँ सूर्यके प्रकाशसे चमक कर नसोंकी भाँति पृथ्वीको रक्त पिलाती हुई प्रतीत होती थीं। मछलीके शिकारके लिए यहाँ विशेष सुविधा थी। गैंड, रोहू आदि सुंदर स्वादिष्ट मछलियोंकी कमी न थी। क्या ही स्वर्गीय सुख था! स्नान करने योग्य स्थानोंकी भी कमी न थी और इन छोटी छोटी धाराओंके तटोंपर ऊँची घासमें 'चहा' नामक पक्षियोंकी भी बहुतायत थी।

मेरे दो कुत्ते मुझसे आगे दौडे जा रहे थे, और उनपर दृष्टि लगाये, मैं बकरीकी भाँति सुगमतासे चढा चला जा रहा था। मेरे मित्र सवैंल

अनुमानसे १०० गजकी दूरीपर, दाहिनी ओर, खेतमें खड़े हुए, चारा कटवा रहे थे। झाड़ी पारकर, वनकी सीमासे बाहर निकलते ही, मेरी दृष्टि एक बंगलेके ध्वंसावशेषपर पड़ी।

सहसा मुझे ध्यान आ गया कि पिछली बार, जब मैं यहाँ आया था, तो उस समय यह खूब स्वच्छ-सुथरा दीखता था, अंगूरकी बेलें यहाँ फैल रही थीं और दर्वाज़ेपर भी मुर्गियोंका खूब जमघट रहता था।

मृतसमान, मांसविहीन और अस्थिपंजरमात्राऽवशेष देहवत् भग्न गृहसे अधिक विषादजनक एवं अशुभसूचक, और कौन वस्तु हो सकती है?

मुझे अब, यह भी याद आ गया कि जब मैं इस घरमें घुसा था, तब बहुत ही थका हुआ था और दयालु मालकिनने एक प्याला दूधसे मेरा सत्कार किया था। सवैलने मुझे इस परिवारकी कथा भी सुनाई थी। पिताको सरकारी वनमें घुस शिकार चुराना अत्यंत प्रिय था। एक वन-रखवालेने इसी कारण उसे गोलीसे मार डाला था। पुत्रको मैंने केवल एक बार ही देखा था; उसका क़द लंबा तथा मिज़ाज तीखा था, शिकार भी वह भयानक रूपसे करता था। गाँवमें यह परिवार 'क्रूर' के नामसे प्रसिद्ध था।

उनका यही नाम था अथवा लोगोंने हँसीमें इस नामसे उन्हें पुकारना प्रारंभ कर दिया था, यह मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता। मैंने सवैलको पुकारा। आवाज सुनते ही वह सारसकी भाँति लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ मेरे पास आ गया। मैंने पूछा—'इन लोगोंका क्या हुआ?' उन्होंने जो कथा सुनाई वह इस प्रकार है—

युद्धके प्रारंभ होते ही, पुत्रने—जिसकी अवस्था उस समय तैंतीस वर्षकी थी—नौकरी करनेवालोंमें नाम लिखा लिया, घरपर केवल माता ही रह गई। लोगोंको बेचारी बुढ़ियापर भी दया न आई, कारण यह, कि उसके पास धन था और लोग यह बात जानते थे।

वनके निकट, गाँवसे दूर, इस सुनसानमें वह अकेली ही इस घरमें रहती थी। यहाँ रहनेमें उसको भय नहीं लगता था, क्योंकि परिवारके अन्य पुरुषोंकी भाँति, वह भी शक्तिवाली थी। बुढ़ियाकी हड्डियाँ कठोर, क़द

लम्बा, तथा देह दुवली-पतली थी। वह शायद ही कभी हँसती थी। किसी अन्य व्यक्तिको उससे हँसी करनेका साहस तक न होता था। देहातकी स्त्रियाँ वैसे ही कम हँसती है। यह तो पुरुषोंहीके भागमे वदा है। वहाँ नारियोका हृदय सकीर्ण एवं विपादपूर्ण और जीवन सदा उदासीन तथा अधकारमय ही रहता है और इसी भाँति आयु शेप हो जाती है। किसान तो, मदिराकी भट्टियोपर जाकर, कुछ गुल-गपाड़ा भी मचा लेते हैं; पर उनकी अर्धांगनियोके मुख सदा गंभीर एवं कठोर ही वने रहते हैं। उनके मुखकी मांसपेशियाँ यह भी नहीं जानती कि हँसनेमे किस प्रकारकी गति होती है।

माता इस प्रकारसे अपना जीवन साधारणतया व्यतीत कर रही थी, कि शिशिर ऋतु आ गई। सप्ताहमें एक वार वह खाद्य पदार्थ, गाँवसे मोल-लेने आती थी और फिर लौटकर अपने घर चली जाती थी। भेड़ियोंके डरसे, वह वंदूक कंधेपर रखकर निकलती थी। वंदूक पुत्रकी थी, जंग खाई हुई और ऐसी कि, दस्तातक हाथकी रगडसे घिस गया था। लंवा क़द, झुकी हुई देह, वर्फपर धीमी चाल, सिरपर काला टोपा (जिसके भीतर उसके सफ़ेद वाल थे परंतु जिनको आज तक किसीने न देखा था), तथा दूर तक निकली हुई कंधेपर वंदूककी नली—बुढियाका यह अद्भुत रूप भी दर्शनीय था।

एक दिन जर्मन-सेना गाँवमें आ गई और प्रत्येक निवासीके वित्तानुसार, उसका विभाग कर दिया गया। बुढिया तो मालदार समझी ही जाती थी, वस उसके ऊपर, चार सैनिकोंका भार लाद दिया गया।

इन बृहदाकार सैनिकोंकी आकृति सुदर, दाढी छोटी तथा नेत्र नीले थे। इतना कष्ट उठाने तथा परिश्रम करने पर भी, इनके देह तनिक भी दुर्वल न हुए थे। विजित देशमें होनेपर भी इनमें इस समय तक करुणा एवं दया विद्यमान थी। इन चारोको उस अकेली बुढियाका सदा ध्यान रहता और जहाँतक वन पडता वह उसे कभी परिश्रम अथवा व्यय न करने देते थे। प्रातःकाल झुटपुटेहीमें, आस्तीनें चढाए, यह चारों, कुएपर प्रचुर पानीसे मुँह धोते तथा अंग मर्दन करते दिखाई पडते थे। इसी बीचमें

वृद्धा माता इनके लिए ' सूप ' तयार कर रखती थी। आज्ञाकारी पुत्रों-की भाँति, यह चारों उस बुढियाका रसोईघर साफ करते, फर्श धोते, लकड़ियाँ चीरते, आलू छीलते और घरके अन्य कार्य तक कर देते थे।

परन्तु वृद्धाको तो सदा अपने पुत्रका ही ध्यान बना रहता था। उसका लंबा कद, छरहरी देह, नुकीली नाक, और घनी मूँछें, उसके मानस-दर्पणमें सदा प्रतिबिम्बित रहती थीं। गृहस्थित इन चारों सैनिकोंमें प्रत्येकसे वह प्रतिदिन पूछा करती कि क्या तुमको मालूम है कि तेईस नंबरकी पैदल फ्रांसीसी पल्टन किस ओर भेजी गई है? मेरा बच्चा भी उसीमें गया है।

वह सदा यही उत्तर देते कि ' हमें नहीं मालूम, हमें कुछ पता नहीं। वृद्धाकी वेदना तथा बेचैनीको अनुभव करते हुए—क्योंकि घरोंमें उनके भी माताएँ थीं—वह बहुतसे कार्योंमें उसकी, जहाँतक बन पड़ता, सहायता करते थे। वह भी इनसे—अपने शत्रुओंसे—खूब प्रेम करती थी, क्योंकि किसानोंको तो देश-प्रेमके कारण ' शत्रुओंसे घृणा ' होती ही नहीं, यह विचार तो केवल उच्च वर्गोंमें ही पाया जाता है। बेचारे गरीब, जिनको निर्धनताके कारण अधिक देना पडता है, प्रत्येक नया बोझ जिनको पीसे डालता है, जिनके समूहके समूह मारे जाते है, जो बहुसंख्यक होनेके कारण ही तोपोंके वास्तविक शिकार बनते हैं—संक्षेपमें यह कहना चाहिए कि जिन पुरुषोंको अपनी दुर्बलता, तथा प्रतीकारकी शक्ति न होनेके कारण, युद्धकी भीषण एवं घोर यातनाएँ निर्दयताके साथ सहनी पडती है—वही लोग इन युद्धसंबंधी उद्वेगो, क्षणमे विरोध उत्पन्न करनेवाले मान-प्रतिष्ठाके झूठे विचारो, तथा बनावटी राजनैतिक गुट्टोको—जो छह महीनोंमें विजेता एवं विजित, दोनोंको थका मारते हैं,—नहीं समझ सकते।

' क्रूर ' माताके घर टिके हुए इन चारों जर्मनोंके लिए, प्रांत-भरमें लोग कहा करते थे, कि ' इनको खूब सुखका स्थान मिला है। '

एक दिन प्रातःकाल बुढिया अपने मकानमें अकेली बैठी हुई थी कि उसकी दृष्टि सुदूर मैदानमें एक पुरुषपर पडी, जो उसके घरकी ओर आ रहा था।

थोड़ी ही देरमें, वह उसे पहिचान गई; वह था चिट्ठी बाँटनेवाला डॉकिया। उसने आकर बुढियाको एक चिट्ठी दी। सिलाईके समय जिस ऐनकको लगाती थी, उसी ऐनकको वृद्धाने ऐनक-घरसे निकालकर आँखों-पर लगा चिट्ठी पढना प्रारंभ कर दिया। उसमें लिखा था—

"श्रीमतीजी, इस पत्रद्वारा मैं आपको शोक-समाचार भेज रहा हूँ। कल एक गोलेके लगनेसे आपके पुत्र विक्टरके दो टुकडे हो गये और उनकी मृत्यु हो गई। मैं उस समय उनके पास ही खडा था। उन्होंने मुझसे कहा था कि यदि कोई घटना हो जाय, तो मैं तुरंत ही आपको सूचना दे दूँ। उनकी जेबमें एक घड़ी थी, वह मैंने निकाल ली है और अब वह मेरे पास है। युद्ध समाप्त होनेपर मैं स्वयं आकर उसे आपको दे जाऊंगा।

सीज़र रीवो

द्वितीय कक्षाका सैनिक,—मार्च—पल्टन नं० २३"

इस चिट्ठीपर तीन सप्ताह पूर्वकी तारीख लिखी हुई थी।

बुढिया बिलकुल नहीं रोई, वरन् स्तब्ध हो बैठी रह गई। वह इतनी अधिक व्याकुल हो गई थी कि उसे न तो अपनी ही सुध रही और न उसने तुरत ही कोई कष्ट अनुभव किया। उसने सोचा 'विक्टर भी अब चल बसा।' धीरे धीरे उसके नेत्रोंसे अश्रुधारा बह चली और विषादसे उसका हृदय भर आया। एकके पश्चात् दूसरे भयावह एवं क्लेशकारक विचार, उसके मनमें उठने लगे। उसे अब अपना लड़का—अपना प्यारा बच्चा—एक बार चूमनेको भी न मिलेगा। सरकारी वनरक्षकोंने पिताकी हत्या कर डाली और अब पुत्रको प्रुशियनोंने मार डाला। तोपसे उसके दो टुकडे हो गये। वह वीभत्स दृश्य उसकी आँखोंके आगे अंकित-सा हो गया। झुका हुआ मस्तक, खुली हुई आँखे, तथा क्रोधके कारण होठके किनारों एव मूँछोंको चाटती हुई जीभ (जैसी उसकी टेव थी,), यह सब कल्पना-जगत्में बुढियाको प्रत्यक्ष दीखने लगे।

इसके पश्चात् उन्होंने उसके शवका न मालूम क्या किया होगा। आह, पिताके शवके समान यदि यह लोग, गोली-प्रविष्ट मस्तकसहित पुत्रके शवको भी ले आते तो कैसा होता?

परंतु बुढियाको अब कुछ अस्पष्ट शब्द सुनाई दिया। यह गाँवसे लौटते हुए 'प्रुशियनों' का स्वर था। उसने तुरंत ही पत्रको अपनी जेबमे रखकर छिपा लिया और आँसू पोंछकर साधारण आकृति बनाकर वह उनका स्वागत करने लगी।

वह चारों अत्यन्त प्रसन्न दीख रहे थे, कारण यह कि वह आज कहींसे एक खरगोश–वास्तवमें चुराकर–ले आये थे। आते ही उन्होंने, बुढियासे उत्तम भोजन बनानेका संकेत किया।

बुढिया तुरंत ही भोजन तयार करने लग गई। यद्यपि आज यह प्रथम अवसर न था, तथापि जब खरगोशको मारनेका समय आया तो उसका हृदय बैठसा गया, वह यह कार्य न कर सकी। एक सैनिकने उठकर कानो के बीच घूँसा मार, उसका काम तमाम कर दिया।

पशुके मरणोपरांत बुढ़ियाने उसके रक्त शरीरसे खाल खींचनी प्रारंभ कर दी; परंतु हाथ लगाते ही ठंडी सनसनी उत्पन्न करनेवाले और शीघ्र ही जमनेवाले रुधिरको ज्यों ही उसने अपनी उँगलियोंसे छुआ, और उसमें उसके हाथ सने, त्यों ही उसकी ओर एक बार दृष्टिपात करते ही वह सिरसे पैर तक सिहुर उठी। रक्तसे सने हुए पशुके समान जिसका हृदय इस समय भी धड़क रहा था उसे अपने प्यारे बेटेके भी दो टूक दीखने लगे।

प्रुशियनोंके साथ वह मेजपर भोजन करने तो बैठी, परंतु उससे एक ग्रास भी भोजन न किया गया। उन्होंने भी उसकी ओर कुछ ध्यान न दे खरगोशको चट कर डाला। वह कनखियोंसे रह-रहकर उनकी ओर देखती जाती थी, परंतु उसकी आकृति ऐसी गंभीर थी कि वह कुछ भी न समझ सके।

सहसा वह बोली कि हमको एक साथ रहते हुए एक महीना बीत गया और मैं तुम्हारे नाम भी नहीं जानती। बुढिया क्या कह रही है, इस बातके जाननेमें उन्हें देर न लगी और उन्होंने अपने नाम बता दिये। परंतु यह पर्याप्त न था; बुढियाने उनसे उनके नाम और घरके पते सब काग़ज़पर लिखवा लिये, और फिर कुछ देर तक अपनी लंबी नाकपर ऐनक लगा, उनकी अद्भुत लिखावटको देख कुछ सोचती रही और फिर काग़ज़को लपेटकर अपने मृत पुत्रके पत्रके ऊपर जेबमें रख लिया।

भोजन समाप्त होनेपर उसने सैनिकोंसे कहा—'अब मैं तुम्हारा कार्य करने जाती हूँ।' यह कहकर वह लगी उनके सोनेकी टांड़ोंमें सूखी घास बिछाने। बुढ़ियाको इस प्रकार कष्ट उठाते देखकर उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ, परंतु वह यों कहने लगी कि इससे तुमको ठंड न लगेगी। यह सुन वह भी इस कार्यमे उसकी सहायता करने लगे। सबने छप्परों-तक घास बिछा दी, मानों घासका ही कमरा हो। चारों ओर घास ही घास थी; गर्म, नरम और सुगंधित। इसपर शयन करनेमें उन्हें अत्यंत ही सुख होगा।

रात्रिको भोजन करते समय भी, जब बुढियाने कुछ न खाया, तो एक सैनिकने दु खित हो इसका कारण पूँछा। इसपर बुढियाने यह कह दिया कि पेटमे दर्द हो रहा है। इसके पश्चात् देहमें गर्मी लानेके लिए उसने अग्नि जला दी और चारों जर्मन सैनिक सीढीकी राह नित्यकी भाँति टॉड़पर सोने चले गये।

उन्होंने ज्यों ही टॉडका द्वार बंद किया कि बुढियाने सीढी हटा ली और द्वार निश्शब्द खोलकर धीरे धीरे बाहर जा घास लाकर रसोई-घर भरने लगी। बाहर बर्फ़में बुढिया इतने धीरे धीरे जाती थी कि कुछ भी शब्द न होता था। बीचमें रह-रहकर वह चारों सिपाहियोंके खुर्राटे भी सुन लेती थी, परंतु वे तो घोर निद्रामें अचेत पड़े थे।

जब वह सब तयारी कर चुकी तो उसने घासके एक पूलेमे आग लगा उसे और घासपर डाल दिया और स्वयं बाहर आकर देखने लगी।

कुछ ही क्षणोंके उपरांत सारे झोपडेमें प्रकाश भर गया और एक ठठेरेकी भयंकर प्रचंड भट्टीकी भाँति उसकी लपटे सकडी खिड़कियोंकी राह निकलकर बर्फपर प्रतिबिम्बित होने लगीं।

इसके पश्चात् मकानकी छतसे तीव्र चिल्लाहट सुनाई दी। यह उन पुरुषों-की पुकार थी जो भय और यन्त्रणाके कारण, भीषण चीत्कार कर रहे थे। थोड़ी ही देरमें टॉड़का दर्वाजा भी जल गया और अग्नि-शिखा भक-भकाकर टॉड़में प्रविष्ट हो छतको भेद, ऊपर निकल, आकाशकी ओर मशाल-की भाँति लपकने लगी; सारा झोंपड़ा एक क्षणमें चमक उठा।

अब अग्निकी चटचटाहट, दीवारोंकी चटक और बल्लियोंके टूटनेके शब्दके अतिरिक्त और कोई शब्द सुनाई न देता था। सहसा मकानकी छत भी गिर पड़ी और धुएँमें, जलते हुए मकानके इस ढाँचेके गिरनेसे, सैकड़ों चिनगारियाँ वायुमंडलमें उड़ने लगीं।

हिमाच्छादित समस्त प्रान्त इस अग्निकांडके कारण लाल किनारीदार सुनहरी वस्त्रकी भाँति चमकने लगा। सुदूरस्थित एक घंटा भी इसी समय बजने लगा।

वृद्धा भी अपनी बंदूक—अपने पुत्रकी बंदूक—लिये उजड़े हुए झोंपड़ेके सम्मुख इस भयसे खड़ी थी कि कहीं कोई पुरुष बचकर भीतरसे न निकल जाय।

जब बुढ़ियाने देखा कि सब कांड समाप्त हो गया, तो उसने वह बंदूक भी उसी भट्टीमें फेंक दी; और इसी समय एक उच्च शब्द हुआ।

प्रुशियन्स और दूसरे किसान अब वहाँ इकट्ठे होने लगे थे। उन्होंने देखा कि बुढ़िया धीरतासे एक वृक्षके ठूँठपर सतुष्ट-सी बैठी है। एक जर्मन अफ़सरने फ्राँसीसीकी भाँति विशुद्ध फ्रैंचमें पूछा—"तुम्हारे पास जो सैनिक थे वह कहाँ हैं?"

बुझते हुए अग्नि-समूहकी ओर अपने अस्थिमात्रावशेष हाथोंको उठाकर बुढ़ियाने उच्च स्वरसे कहा—"वहाँपर।"

लोगोंकी भीड़ने अब बुढ़ियाको चारों ओरसे घेर लिया था। प्रुशियनोंने पूछा—"अग्नि कैसे लगी?"

"मैंने लगाई है।"

प्रथम तो लोगोंने यह समझकर कि सहसा विपत्ति पड़नेके कारण, यह पागल-सी हो गई है, इस बातपर विश्वास ही न किया, परंतु वारम्वार पूँछे जानेपर बुढ़ियाने चिट्ठी मिलनेके समयसे लेकर, उन पुरुषोंके अंतिम आर्त्तनाद तक, (जो घरके सहित, जल गये थे) रत्ती रत्ती समस्त घटना ब्योरेवार सुना दी।

यह सब कह चुकनेके बाद बुढ़ियाने अपनी जेबसे दो पत्र निकाले, और बुझती हुई अग्निके प्रकाशमें, ऐनकको ठीक कर उन दोनों पत्रोंमेंसे

एकको दिखाकर, कहा—" यह मेरे पुत्र विक्टरकी मृत्युका पत्र है और नत-मस्तक हो धधकते हुए अग्निपुंजकी ओर इंगित कर दूसरा पत्र दिखाकर बोली—यह उन पुरुषोंके नाम है, आप उनके घर खबर भेज सकते हैं।" इसके पश्चात् उसने धीरतासे वह पत्र जर्मन ऑफिसरको—जो उसका कंधा पकडे खडा था—दे दिया, और कहा " आप यह बात भी इनकी माताओंको अवश्य लिखें कि किस प्रकार इनकी मृत्यु हुई और यह कर्म 'क्रूर' साइमनद्वारा संपादित हुआ। देखिए भूलना मत।"

आफ़िसरने चिल्लाकर जर्मन भाषामें कुछ आज्ञा दी और सैनिकोंने उसे धक्का देकर उसी जलते हुए घरकी जलती दीवारसे सटाकर खड़ा कर दिया। बारह सैनिक एक कतारमें वृद्धासे बीस कदमकी दूरीपर खड़े हो गये और वह भी सब कुछ समझकर, स्थिर भावसे खड़ी हो गई, और प्रतीक्षा करने लगी।

आज्ञाके शब्द गूँज उठे; और इसके पश्चात् तत्क्षण ही एक धड़ाका हुआ। एक गोली कुछ पिछड़ गई, और सबके दागनेके बाद छूट पाई।

वृद्धा गिरी नहीं, प्रत्युत बैठ गई। मानों किसीने उसकी टाँगें काट डाली हों।

प्रुशियन ऑफिसर आगे बढ़ा—बुढ़िया दो टूक हो गई थी। परंतु रुधिरसे सना हुआ पत्र उस समय भी अपने सूखे हाथमें थामे हुई थी।

मेरे मित्र सर्वैलने इतनी बात और कही। इस घटनाके पश्चात् जर्मन सैनिकोंने बदला लेनेके लिए मेरा मकान भी विध्वंस कर डाला।

यह सुनकर, मैं उन चार वीर सैनिकोंकी माताओंका, जो इस मकानमें जल मरे थे, तथा उस बुढ़ियाकी भयंकर वीरताका जिसको दीवारसे लगाकर गोली मार दी गई थी, चिन्तन करने लगा।

और मैंने पत्थरके एक टुकड़ेको बीनकर उठा लिया, जो उन अग्निशिखाओंसे जल जानेके कारण आज तक कृष्णवर्ण था।

पवित्र जल बाँटनेवाला

उस समय, हम, गाँवके बाहर,—सड़कके किनारे—एक छोटेसे मकानमें रहा करते थे। पास-पड़ौसके किसानकी कन्यासे विवाह करनेके पश्चात् उसने भी, वहीं आकर, रथकारका काम प्रारंभ कर दिया था; और दंपतियुगल—दोनों ही—परिश्रमी होनेके कारण थोड़े ही दिनोंमें उनके पास कुछ द्रव्य भी संचित हो गया था। परन्तु संतान न होनेके कारण वह अत्यंत दुखी रहते थे। अन्तमें भगवान्‌की दयासे उनके एक बालक भी उत्पन्न हुआ, जिसको वह 'जीन' कहकर पुकारते थे। माता और पिता दोनोंका यह लाडला और स्नेहपात्र था। वह सदा उसको गलेसे लगाये रखते और कभी आँखसे ओझल न होने देते थे।

बालककी आयु पाँच वर्षकी रही होगी कि कुछ नट गाँवकी ओर आ निकले और टाऊन हालके मैदानमें डेरा-तम्बू तानकर ठहर गये।

घरके सामनेसे उनको जाता हुआ देखकर, जीन भी—चुपकेसे—घर-वालोंकी आँख बचाकर—भाग खड़ा हुआ और बहुत कुछ खोज करनेके उपरांत पिताने बालकको, अन्तमें, वहीं—उन विद्वान् बकरियों, और सधे हुए कुत्तोंके बीच—एक बुड्ढे विदूषक (मसखरे) के घुटनोंपर बैठे हुए प्रसन्नतासे किलकारी मारते देखा।

तीन दिन पीछे, रथकार और उसकी पत्नीने, बालकको भोजनकी बेला पुनः घरमें न पाया। पासके उपवनमें खोज करनेपर भी, जब दोनों-को उसका पता न चला तो पिता सड़कपर आकर अत्यन्त उच्च स्वरसे पुत्रको 'जीन' 'जीन' कहकर पुकारने लगा।

इतनेमें रात्रि हो गई। और धरातलपर भूरे वाष्पके (कुहासे) धीरे धीरे फैल जानेके कारण दूरके पदार्थ और भी अधिक दूर तथा अस्वाभाविक एवं भयावह दीखने लगे। देवदारुके तीन निकटस्थ वृक्ष भी, अब रुदन करते हुए-से प्रतीत होते थे। परंतु पिताके आह्वानोंका फिर भी कोई उत्तर न मिला; केवल वायु ही, अस्फुट निश्वासोंसे भरी हुई प्रतीत होती थी।

यह समझकर कि शब्द इस ओरसे आ रहा है, बेचारा पिता,—कभी एक दिशामें और कभी दूसरी दिशामें कुछ क्षणपर्यन्त ध्यानसे सुननेके पश्चात, पागलकी भाँति इधर-उधर दौड़कर—सम्पूर्ण रात्रिपर्यन्त 'जीन ! जीन !' ही चिल्लाता रहा।

घोर मानसिक पीडाके कारण—कि जिससे उसको अपना मस्तिष्क उडता हुआ-सा प्रतीत होता था—वह उष:कालपर्यन्त, अंधकारमय दशों दिशाओंको अपने चीत्कारोंसे गुँजाता हुआ, और अकेले दुकेले पशुओंको भयभीत करता हुआ इसी प्रकारसे दौडभाग करता रहा। उधर उसकी पत्नी भी, द्वारपर लगी, पत्थरकी सीढियोंपर बैठी हुई, प्रातःकालपर्यन्त रोती रही।

जब बहुत खोज करनेपर भी लडका न मिला, तो इस दारुण दुःखके कारण, दोनों ही, समयसे पूर्व वृद्ध हो गये और अन्तमें, उन्होंने अपना घर-द्वार बेच, लडकेको घूम फिर-कर खोजनेकी ठान ली।

पर्वत-मालाके पार्श्व भागमें विचरनेवाले गड़रियों, राजमार्गसे जानेवाले व्यापारियों, गाँवके किसानों, और नगरोंके अधिकारियों—सबहीसे उन्होंने पूँछ-ताँछ की; परन्तु बालकको खोये हुए बहुत समय बीत जानेके कारण कोई उसके संबंधमे किंचित् मात्र भी न बता सका। इस समय तक तो वह शायद अपना और अपने गाँवका नाम तक भूल गया होगा—यह विचार मनमें आते ही, निराश हो माता-पिता आँसू बहाकर, चुपचाप रुदन करने लगते थे।

इस प्रकार कुछ ही दिन बीतने पाये थे कि उनका समस्त धन निवड गया, और तत्पश्चात् मेजपर बचा हुआ जूठा भोजन खाकर, दिनमें तो वह खेतो और पांथनिवासोंमे गर्हित भृत्यकर्म करते थे और रात्रिको शीतसे दु:खित होते हुए भी धरतीपर, यों ही पड रहते थे। घोर परिश्रमके कारण, फिर धीरे धीरे अत्यन्त दुर्बल हो जानेपर, जब लोगोंने उनको काम देना भी बंद कर दिया, तो वह सडकपर बैठकर भीख माँगनेके लिए विवश हो गये, और विषण्ण एवं नैराश्य-वदन हो मर्मभेदी स्वरसे राहगीरों-ही-को पुकारने लगे। फ़सल गाहनेवाले श्रमिक, जब दोपहरको खेतमें पेडके नीचे एकत्रित हो भोजन करने बैठते थे, तो माँगनेपर उनको भी रोटीका एक आध टुकडा मिल जाता था, जिसको वह नालीकी मुँडेरपर बैठकर शान्त चित्तसे खा लेते थे।

एक दिन, उनकी कथा सुनकर, पांथनिवासके स्वामीने उनसे कहीं यह कह दिया कि मेरे एक परिचित महाशयकी कन्या खो गई थी, परन्तु वह पैरिसमें मिल गई।

बस फिर क्या था, सुनते ही वह दोनों तुरन्त ही पैरिसकी ओर चल दिये।

महानगरीमें प्रवेश करनेपर, उसके महा परिमाण और बृहत् मानव-समूहको देखते ही उनके होश उड़ गये। बालकको किस प्रकार खोजना होगा, यह न जाननेपर भी उनको यह विश्वास था कि हमारा 'जीन' भी इसी 'मानव-वन' के भीतर कहीं विचर रहा है। फिर उनको कभी कभी यह सन्देह भी हो जाता था कि बिछुड़ते समय बालककी अवस्था केवल पाँच वर्षहीकी होनेके कारण, कहीं ऐसा न हो कि, हम उसको अब पहिचान ही न सकें।

उसको पानेके लिए, उन्होंने सब ही स्थानोंमें खोज की, समस्त गलियाँ छान डालीं और सम्पूर्ण एकत्रित मानव वृन्दोंको, सदैव, इस आशासे ध्यान-पूर्वक देखा, कि कहीं भाग्य सीधा हो गया, तो विधाताकी कृपासे इन्हीं स्थानोंमें हमारा पुत्र हमसे सहसा आ मिलेगा।

वह बहुधा, विना सोचे—समझे ही—जिस किसी ओरको—सीधे चल देते थे और मार्गमें—एक दूसरेका सहारा लिये हुए जानेवाले इस दंपति युगलको, दुखित एवं दरिद्र समझकर, लोग विना माँगे ही भिक्षा दे देते थे।

प्रत्येक रविवारको, वह गिरजाघरोंमें जा बैठते थे और भीतर घुसने तथा बाहर निकलनेवाले जनसमूहको ध्यानपूर्वक देखकर, अपना पूर्व-परिचित मुख ढूँढ़ निकालनेका प्रयत्न करते थे। वहाँपर उनको कई बार यह सन्देह भी हुआ—उन्होंने उसको पहिचान लिया है—परंतु अन्तमें, यह सर्वथा उनकी भ्रांति ही सिद्ध हुई।

इन गिरजाघरोंमेंसे—कि जहाँ वह बहुधा जाया करते थे—एक गिरजा-घरकी पैालमे बैठकर अभिषिक्त जल वितीर्ण करनेवाले, एक वृद्ध पुरुष-से इनकी धीरे धीरे मित्रता हो गई, फिर वृद्धकी कथा भी, अत्यन्त शोक-पूर्ण होनेके कारण, उसके प्रति उनकी सहानुभूति होनेसे यह मैत्री और भी अधिक दृढ़ हो गई। फल इसका यह हुआ कि अन्तमें, यह तीनों कुछ दूरीपर बने हुए एक विशाल गृहके निर्धन पुरुषोंयुक्त ऊपरी तल्लेमें,

नगरके बाहर एकत्रित हो, रहने लगे और नवीन मित्रके रोगी हो जानेपर रथकार ही, गिरजाघरमें, यदा कदा उसके स्थानपर जा बैठने लगा।

इतनेमें शीतकाल—अत्यन्त ही कडा शीत-काल आ गया और अभिषिक्त जलको वितीर्ण करनेवाला बेचारा ग़रीब बुड्ढा उसको, उस बड़े शीतको, न सहन कर सका और मर गया। तदनंतर, मुहल्लेके पादरी महाशयने, बूढे रथकारकी विपत्तिका ज्ञान होनेके कारण, मृतकके स्थानपर उसही-की नियुक्ति कर दी। तबसे वह बूढा रथकार ही प्रत्येक दिन, प्रातःकाल उस स्थानपर जाकर, और उसी कुर्सीपर बैठकर प्राचीन प्रस्तर-स्तूपका सहारा ले लेकर उसे घिसने लगा। गिरजाघरमें घुसनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको वह आँख गडाकर देखता था और प्रात कालसे लेकर सन्ध्यापर्यन्त जनसमूहसे भरे रहनेके कारण, प्रत्येक रविवारके आगमनकी वह, स्कूलके विद्यार्थीके समान,अधीरतासे प्रतीक्षा करता था।

अब वह अत्यंत वृद्ध हो गया था और गिरजाघरकी सीलके कारण, दिन प्रतिदिन बढनेवाली शारीरिक दुर्बलताके साथ ही साथ, उसकी समस्त आशाएँ भी, भग्नघटस्थ जलविंदुवत् शनैः शनैः स्रवित हो रही थीं।

प्रार्थना करनेवाले समस्त व्यक्तियोंको, अब वह देखते ही पहिचान लेता था, उनके आनेका समय, कार्यक्रम, यहाँ तक कि पत्थरके फ़र्शपर उनके पैरों-की आहटसे भी, वह भली भाँति परिचित हो गया था।

किसी अपरिचितका गिरजाप्रवेश भी, दृष्टिकोण अत्यन्त संकुचित हो जानेके कारण, उसके लिए, अब महत्त्वपूर्ण घटनाके समकक्ष हो जाता था। एक दिनकी बात है कि दो विशिष्टकुलाभिभूत रमणियोंका वहाँ पदार्पण हुआ; इनमेंसे एक वृद्धा थी और दूसरी तरुणी,—बहुत करके यह माँ-बेटी रही होंगीं। इनके पीछे एक पुरुष था जो इन्हींका अनुगमन कर रहा था। स्त्रियोंके बाहर आते ही इसने नतमस्तक हो उनका अभिवादन किया; और पवित्र जल अर्पणकर वृद्धाका हाथ अपने हाथमें थाम लिया।

इसको देखते ही, रथकारके मनमें विचार उठा कि यह अवश्य ही इस-नवोढ़ाका भावी पति है और फिर संध्यापर्यंत, वह विचार करता रहा कि मैंने इस प्रकारके मुखवाले पुरुषको इससे पूर्व कहाँ देखा है। परन्तु जिसका वह ध्यान कर रहा था वह, तो अबतक, बड़ा बूढा हो गया होगा, और इस युवकको देखकर यह प्रतीत होता था कि मानों वह, इसको कौमारावस्थासे जानता है।

स्त्रियोंको घर पहुचानेके लिऐ, यह पुरुप बहुधा गिरजामें आया-जाया करता था। इसकी दूरस्थ एवं अस्पष्ट समानताको यथास्थान स्थित न कर सकनेपर वृद्धने, पीड़ित हो, भार्यासे भी, अपनी क्षीण स्मृतिको उत्तेजित करनेकी सहायता चाही।

एक दिन संध्या समय, अँधेरा छा-जाने पर, यह तीनों परदेशी पूर्ववत् एक साथ आये, और जब वह भी गिरजामें चले गये तो वृद्धने पूछा "क्या तुम इस युवाको चीन्हती हो ?"

स्त्रीने, कुछ देर तक, अपनी स्मरण-शक्तिपर जोर देनेका प्रयत्न करनेके पश्चात् सहसा, मंद स्वरसे कहा—

"हाँ—हाँ ठीक तो है–परतु यह कुछ अधिक काला, लम्बा और गठीला प्रतीत होता है, और इसपर उच्च कुलाभिभूत पुरुषोंकी भाँति वस्त्र भी धारण किये हुए है पर यह सब कुछ होते हुए भी, इसकी आकृति, अपने पिता-हीके समान है—ठीक वैसी ही कि, जैसे तुम युवा अवस्थामें थे।"

सुनते ही वृद्ध प्रचंड वेगसे सहसा चौक पड़ा।

कथन सर्वथा सत्य था। इस पुरुपकी आकृति-वास्तवमें, वृद्ध रथकार तथा उसके मृत भ्राताहीके समान थी। अपने पिताका रूप भी, स्वयं उसने, अपने बचपनमें ऐसा ही देखा था; और वह उसको अब तक भली भाँति स्मरण था। आवेशके कारण, वृद्ध दम्पति–युगल, अब बोलनेमें भी सर्वथा असमर्थ हो गया। इतनेमे, वह तीनों व्यक्ति बाहर आ गये और वहाँसे विदा होनेहीको थे कि, युवकने पवित्र जल वितीर्ण करनेवाले उस वृद्धको अपनी अँगुलीसे स्पर्श किया, जिससे बुड्ढेका हाथ काँपने-के कारण अभिषिक्त जलके छींटे धरतीपर जा पड़े, और उसने चिल्ला-कर कहा—"जीन।"

यह सुनकर युवा रुका, और उसकी ओर देखने लगा।

बुड्ढेने अब और भी मन्द स्वरसे कहाः—"जीन।"

इस बार, दोनों स्त्रियाँ भी, विना समझे हुए कि मुआमिला क्या है, इनकी ओर देखनी लगी थीं।

वृद्धने अश्रुभरे स्वरसे तीसरी वार फिर पुकारा—"जीन।"

युवकने अब अपना मुख वृद्धके पास झुका लिया था, और बाल्यावस्थाकी स्मृति, पुनः जाग्रत होते ही उसने उत्तर दे कहा—"पिता पियरी, माता जैन्नी!"

पिताका पूरा नाम तथा गाँवका पता इत्यादि सब कुछ ही वह, अब भूल गया था, परन्तु बारम्बार जिसका उच्चारण किया गया था, वह "पिता पियरी, माता जैन्नी" वाला बचपनका वाक्य उसको अब तक याद था।

धरतीपर गिरकर बुड्ढेके घुटनोंपर माथा टेक, युवक, अब फूट-फूटकर रोने लगा, कभी वह माताका चुम्बन करता था और कभी पिताका, और वह दोनों वृद्ध भी, इस समय, हर्षातिरेकसे विह्वल हो रहे थे।

यह किसी प्रसन्नताका अवसर है ऐसा समझकर, दोनों प्राणियोंने भी अब अश्रु बहाने प्रारंभ कर दिये।

तत्पश्चात् वह सब, युवकके घर गये, और वहाँ उसने उनको अपनी समस्त कथा सुनाई।

उस सरकसके लोग ही उसको उठाकर ले गये थे और तीन वर्षपर्यन्त, वह उन्हींके साथ विविध देशोंमे घूमता रहा। तदनंतर सरकस तो टूट गया, परंतु महलोंमे निवास करनेवाली एक वृद्धा स्त्रीने, सुंदर मुख देखकर, मोहित हो कुछ मूल्य दे उसको अपने पास ही रख लिया। फिर मेधावी होनेके कारण वह स्कूल और तत्पश्चात् कालिजमे भर्ती किया गया, और अंतमे, कोई उत्तराधिकारी न होनेके कारण, वह वृद्धा, अपनी समस्त सम्पत्तिका स्वामी भी इसीको अपने मृत्यूपरांत नियत कर गई। माता-पिताका पता लगानेका, इसने भी घोर प्रयत्न किया था, परन्तु 'पिता पियरी और माता जन्नी' इस एक वाक्यके अतिरिक्त, और कोई बात स्मरण न होनेके कारण यह सदा असफल रहा। इसका विवाह भी अब होनेवाला था और इसने अपनी रूपवती एवं अच्छे स्वभाववाली पत्नीका, अपने माता-पितासे भी, इसी समय परिचय कराया।

तदुपरांत बुड्ढे और बुढियाके अपनी रामकहानी सुनानेके पश्चात् उसने उनका पुन चुम्बन किया, और इस भाँति कठिनतासे प्राप्त किया हुआ हर्ष, फिर कहीं लुप्त न हो जाय इस भयसे वह सब, उस रात्रिको बहुत देर पर्य्यन्त जागते भी रहे।

परन्तु दुःखोंका तो अब अन्त हो गया था, और, फिर शेष जीवनपर्य्यन्त वह सदा ही सुखी रहे।

मदिराकी कुप्पी

ज्यूल्स चीको ४० वर्षका था। उसकी देह लम्बी, मुख लाल, तथा पेट कुछ निकला हुआ था। वह शराबका काम करता था। जानकार लोग कहा करते थे कि वह बड़ा चतुर है। एक दिन अपनी गाडी उसने बुढिया मैगलोयरीके झोंपड़ेके सामने रोकी और वह उतरकर झोंपड़ेमें गया।

बात यह थी कि वहाँपर उसकी भी कुछ धरती थी और बुढियाका झोंपड़ा उससे लगा हुआ था। इस झोपड़ेपर उसकी बहुत दिनोंसे दृष्टि थी। बीसियों बार उसने इस झोंपड़ेको लेनेका उपाय किया था; परंतु सदा असफल रहा। बुढिया दृढ थी और अपना झोंपड़ा अलग करना न चाहती थी। "मै यहाँपर जन्मी हूँ, और मेरी हड्डियाँ भी यही गड़ेंगीं।" यही उसका उत्तर था।

जिस समय वह झोंपड़ेपर पहुँचा, तो बुढिया द्वारपर बैठी हुई आलू छील रही थी। वह ७२ वर्षकी थी, दुबली, पतली, और बिलकुल सूखी हुई। उसका शरीर झुक गया था और उसमें झुरियाँ पड गई थी; किन्तु इस अवस्थामें भी उसमें लडकियोंकी-सी फुर्त्ती थी। चीकोने जाते ही बड़े प्रेमसे पहले तो उसकी पीठ अपने हाथसे थपथपाई और फिर वह उसके पास एक स्टूल खींचकर बैठ गया।

"माँ, हो तो अच्छी तरहसे? तुमसे मिलकर, मुझे बडा हर्ष होता है।"

"बेटा चीको, इन पुराने हाडोंमे भला, दुःख क्या होता, तुम तो अच्छे हो?"

"तुम्हारी दयासे वैसे तो मैं अच्छा हूँ; पर यों ही कभी कभी गठियाका दौरा हो जाता है।"

"कुछ बात नहीं है, जाता रहेगा।" यह कहकर बुढिया चुप हो गई और चीको चुपचाप बैठा बैठा उसका काम देखने लगा। झींगा मछलीकी

तरह कठोर अपनी टेढ़ी तथा गठीली उँगलियोंसे वह डलियासे आलू निकाल निकालकर एक पुराने चाकूसे छीलकर पानी भरे हुए कटोरेमें टुकड़े काटकर डालती जाती थी।

इतनेमें, एक एक करके तीन चिड़ियाँ आईं और गोदीमें पड़े हुए आलुओंके छिलके, चोंचमें रखकर उड़ गईं, बैठे-बैठे चीको उकता गया। उसके हृदयमें विचार उठ रहे थे; परंतु उसने अभीतक कुछ भी नहीं कहा। अंतमें वह जल्दीसे कह उठा—"अम्मा, एक बात सुनो।"

"क्या?"

"तुमने क्या धरती न बेचनेका ही पक्का इरादा कर लिया है?

"कह तो दिया कि नहीं बेचूँगी। तुम्हारी समझमें ही नहीं आता, कितनी बार कहूँ। बार-बार पूछनेसे क्या लाभ?"

"तुम्हारी मर्जी। मैं तो एक ऐसी बात सोच रहा था कि हम दोनोंको लाभ हो।"

"वह क्या?"

"देखो, मेरे हाथ, यह धरती बेच दो और अपने पास ही रहने दो। समझीं या नहीं? देखो, ध्यानसे सुनो, मैं फिर कहता हूँ।" बुढ़ियाने आलू छीलने छोड़ दिये, और कनखियोंसे शराबवालेकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगी।

"बात यह है कि प्रतिमास, मैं तुमको १५० फ्रैंक दिया करूँगा। यह बात तो तुम्हारी समझमें आ गई, प्रत्येक मासके अंतमें मैं स्वयं तुमको ३० क्राउन दे जाया करूँगा। इसे लेनेमें तुमको कोई बाधा न होगी और तुम अपने घरकी इसी प्रकार मालिकिन बनी रहोगी। मेरी कुछ चिन्ता मत करो। यह रुपया तुमको वापिस न करना पड़ेगा। बस, तुम तो प्रत्येक मासमें मुझसे रुपये गिना लिया करो। यह बात स्वीकार है?"

यह कहकर वह बुढ़ियाकी ओर प्रसन्न तथा दयार्द्र मुखसे देखने लगा, परन्तु बुढ़ियाने इसमें भी कोई चाल समझी और उसकी ओर अविश्वासयुक्त दृष्टिसे देखकर कहा—" मेरे लिये तो कुछ बुरा नहीं मालूम पड़ता, पर तुमको तो झोंपड़ा इन बातोंसे भी नहीं मिलता दीखता।"

चीकोने कहा—" तुमको इसकी क्या चिन्ता है। भगवान् जबतक तुम्हें जीता रक्खें इस मकानमें रहो, यह तो तुम्हारा ही है। मेरे लिए तो एक दस्तावेज़ लिख दो कि तुम्हारी मृत्युके उपरान्त झोंपडा मुझे मिल जाय। तुम्हारे कोई संतान तो है नहीं—केवल भतीजे और भतीजी हैं, सो भी दूरके नातेकी, सो उनकी तुम्हें क्या चिन्ता? यह बात ठीक है न! जबतक जिओगी सब-कुछ तुम्हारा ही रहेगा और प्रत्येक मासमें, मैं तुमको २० क्राउन दूँगा। तुम्हारा तो इसमें लाभ ही लाभ है।"

यह सुनकर बुढिया अचम्भेमें आ गई और उसके मनमें उथल-पुथल मच गई। लालचमें आकर वह स्वीकृति देनेहीको थी, परंतु जी रोककर बोली "मैं कब कहती हूँ कि मैं स्वीकार न करूँगी; किंतु सोचनेका समय तो दो। एक सप्ताह पश्चात् आना, तब मैं ठीक उत्तर दूँगी।" राज्य जीतनेपर राजाको जिस प्रकार प्रसन्नता होती है, चीकोको भी उसी प्रकारसे अपना कार्य सिद्ध देख हर्ष हुआ, और वह अपने घरको लौट पड़ा। बुढ़िया सोचमें पड गई। उस रातको तो उसकी आँख एक पलको भी न लगी। इसी प्रकार उधेड बुनमें चार दिन बीत गये; परन्तु वह कुछ निश्चय न कर सकी। रह-रहकर उसके जीमें यही विचार उठता था कि हो न हो, इसमें अवश्य कोई गुप्त चाल है। परन्तु जब वह यह सोचती कि विना हाथ-पैर हिलाये प्रत्येक मासमें छनछनाते ३० चमकते हुए क्राउन उसकी गोदमें आकाश-वर्षाकी भाँति गिरा करेंगे, तो उसके मुँहमें फिर पानी भर आता। अन्तमें वह वकीलके पास गई और उससे सब हाल कहा। उन्होंने जवाब दिया कि "मामला तो ठीक है; परंतु मूल्य कम है। तुम प्रति मास ५० क्राउनसे कम कदापि न लो। क्यों कि तुम्हारी भूमि ६०,००० फ्रेंकसे कमकी किसी दशामें भी नही है; यदि तुम १५ वर्ष भी और जियीं तो भी तुमको केवल ४५,००० फ्रेंक ही इस हिसाबसे मिल सकेंगे।"

५० क्राउन प्रतिमास पानेकी आशासे, बुढिया प्रफुल्लित हो गई; परन्तु फिर भी उसके मनका खुटका बना ही रहा। बहुत देर तक वकील साहब-से इसी विषयपर प्रश्नोत्तर करती रही। परतु मनको फिर शान्ति न मिली। अंतमें वह वकील साहबको मसविदा तैयार करनेकी अनुमति देकर घरको

लौट पडी। उस समय बुढियाका मस्तिष्क, बहुत मदिरा पान करनेपर, मद्यपीके मस्तिष्ककी भाँति घूम रहा था।

एक सप्ताह बीतनेपर चीको फिर आया, तो बुढियाने बहुत गुदगुदानेके उपरान्त, यह उत्तर दिया कि मुझको तुम्हारी शर्तें स्वीकार नहीं हैं। बुढियाने यह बात कह तो दी, परन्तु मनमें घबरा रही थी कि कहीं ऐसा न हो कि यह ५० क्राउन देना अस्वीकार कर दे। अन्तमे चीको भी झल्ला उठा और उसने बुढियासे स्पष्ट उत्तर माँगा कि वह चाहती क्या है, तब कहीं जाकर बुढियाने अपने मनकी बात कही।

सुनते ही पहले तो वह चौंका, फिर निराश होकर उसने बुढ़ियासे कहा कि यह मेरी सामर्थ्यके बाहर है।

उसको उखडते देखकर बुढिया कहने लगी कि "अब मैं हूँ कितने दिनकी मेहमान ? बहुत जीती रही तो हद ५ वर्ष या ६ वर्ष। ७३ वर्षकी तो मै इस समय हूँ और शरीरमें लेश-मात्र भी बल नही है। अभी उस दिनकी बात है कि मेरी दशा ऐसी हो गई थी कि मैं तो यह समझी कि अब प्राण निकले। बडी कठिनतासे रेंग-रेंगकर कहीं खाटतक पहुँची।" परन्तु चीको भला इन बातोंमें कब आनेवाला था। कहने लगा—"अरी बुढिया, रहने भी दे। तू तो अभी गिरजा-घरकी बुर्जकी भाँति दृढ़ बनी हुई है। अभी कमसे कम १०० वर्ष तक और जीयेगी। तू अभी क्या मरती है, मुझे मारकर मरेगी"। दिनभर यों ही लैन-दैनकी बातें होती रहीं। परन्तु बुढिया कम लेनेपर राजी न हुई। अंतमे शराबवालेने ५० क्राऊन मासिक देना ही स्वीकार किया, परन्तु उसपर भी बुढियाने १० क्राऊन और लिये तब कहीं धरतीका सौदा किया। तीन वर्ष बीत जानेपर भी वह (जैसीकी तैसी) वैसी ही कडी बनी रहीं, इससे चीकोको बडी निराशा हुई। अब उसे प्रत्येक मासमे बुढियाको रुपया देना ऐसा अखरता था, मानों वह उसे ५० सालसे दे रहा है। रह-रहकर वह अपनी मूर्खतापर पछताता था।

किसान जिस प्रकारसे अगस्तके महीनेमे, खेतमे जाकर फसलको इसलिए देखता है कि कब तक पककर तैयार होगी, उसी प्रकारसे चीको भी समय-समयपर जाकर बुढ़ियासे मिलता था। बुढिया भी उसको

कौतूहलभरी दृष्टिसे मानो यह उत्तर देती थी कि देखो, मैंने तुमको कैसा छला। परन्तु बुढ़ियाको भली-चंगी देखकर वह बुडबुडाता हुआ, फिर अपनी गाडीमें बैठकर घरको चला जाता, कि न जाने यह बुड्ढी खूसट कब मरेगी।

बहुत सोचनेपर भी वह कुछ निर्णय न कर सका। अब तो उसकी ऐसी दशा हो गई कि बुढियाको देखकर उसका जी चाहता कि इसका गला घोंट डालूं। प्रतिक्षण उसके हृदयमें प्रतिहिंसात्मक घृणा उठती रहती थी। धूर्त किसानोंकी तरह, अब वह दिन-रात किसी ऐसे उपायकी चिन्तामें रहता था कि जिससे उसे बुढ़ियासे छुटकारा मिल जाय।

एक दिन वह बुढ़ियाके पास फिर गया। जिस प्रकार धरतीका सौदा करते समय उसने हाथ मल-मलकर प्रथम दिन वार्त्तालाप किया था; उसी प्रकारसे आज भी बातें करनी आरम्भ की। वह कुछ देर यों ही इधर उधरकी बातें कर कहने लगा—"देखो यह बात ठीक नहीं है कि तुम कसबेमें तो जाती हो, पर मुझे सदा छेक देती हो। आज तक तुमने, मेरा भोजन—आतिथ्य तक भी स्वीकार नहीं किया। लोगोंको जब मैं यह कहते हुए सुनता हूँ कि मनमुटावके कारण, हम दोनों एक दूसरेसे नहीं मिलते, तो मुझको बड़ी मानासिक पीडा होती है। मेरा आतिथ्य स्वीकार करनेमें तुमको बाधा ही क्या है? जब तुम्हारी इच्छा हो, मेरे यहाँ पधारो। मुझे इससे बडी प्रसन्नता होगी।"

बुढिया उनमें न थी कि इस बातके दो-बारा कहनेकी आवश्यकता हो। इससे तीसरे ही दिन, उसे कसबेमें पेंठ करने जाना तो था ही, बस, पेंठ करके उसने अपनी गाड़ी चीकोके घरकी ओर हाँक दी। वहाँ पहुँचते ही गाडी तो खलियानमें खडी कर दी और आप मकानके अन्दर चली गई।

देखते ही शराबवालेकी बाछें खिल गईं और उसने तुरन्त हो सुन्दर मधुर पदार्थोंसे मेज भर दी। परन्तु बुढ़ियाने उनको छुआ तक नहीं। वह तो सदासे मिताहारी थी। केवल रोटी, मक्खन और रसेदार तरकारीको खाकर ही इतनी बडी हुई थी।

चीको यह देखकर निराश हो गया। बार बार उसने बुढ़ियासे कुछ और खानेको कहा; परन्तु उसने एक न सुनी। यहाँ तक कि कहवा तक

भी न पिया । यह ढंग देखकर उसने कहा—"क्या थोडी-सी ब्रांडी भी नहीं पियोगी ?"

बुढियाने कहा—"ऐसी बात नहीं है। वह तो थोडी पी लूँगी।"

सुनते ही उसने एक नौकर-द्वारा एक मधुर मदिराकी बोतल मँगवाई और दो प्याले मदिरासे भरे गये।

"जरा चाखकर तो देखो, कितनी मधुर है।"

बुढ़ियाने प्याला ओठोंसे लगाया, और वह चुसकियाँ लेकर धीरे धीरे उसका रसास्वादन करने लगी। अंतमें प्याला खाली कर बुढियाने कहा—

"निस्सदेह मदिरा बहुत उत्तम है।"

यह शब्द भले प्रकारसे उसके मुखसे निकले भी न थे कि चीकोने एक प्याला और भर दिया। बुढ़िया हूँ-हूँ करती ही रही, पर उसने एक न सुनी। प्रथम प्यालेकी भाँति बुढियाने दूसरे प्यालेको भी बहुत दीर्घकाल तक स्वाद लेकर पिया। इसके उपरान्त तीसरा प्याला भरनेका आग्रह हुआ। परन्तु बुढ़ियाको यह स्वीकार न था। इसपर वह बोला—"यह मदिरा दूधके समान है। दस-दस प्याले पी जानेपर भी इससे नशा नहीं होता। बिलकुल खांडकी तासीर रखती है। मस्तिष्क जरा भी नहीं बिगडता। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो यह जिह्वापर ही शुष्क हो जाती है। ऐसी मधुर मदिरा मिलना भी दुर्लभ है।"

बुढ़ियाको तो रसास्वादनमें आनन्द आ ही रहा था, उसने वह तीसरा प्याला भी उठा लिया, परन्तु पूरा न पी सकी। यह देखकर चीको मानो बडी उदारता दिखाता हुआ कहने लगा कि "यह मदिरा तुमको अत्यन्त प्रिय है, इस लिए अपनी मित्रताके स्मारकमें यह एक प्याला मदिराका उपहार-स्वरूप तुम्हारी भेंट करता हूँ।"

इस समय तक मदिराका उसके मस्तिष्कमें कुछ कुछ प्रभाव उत्पन्न हो गया था। अतएव बुढियाने वह पीना भी स्वीकार कर लिया।

दूसरे ही दिन शराबवाला एक बहुत ही तीव्र मदिरा लेकर फिर बुढियाके यहाँ गया और बहुत आग्रह करके बुढियाको तीन प्याले फिर पिलाये और जाते समय यह और कह गया कि निबट जानेपर और मदिरा मँगा लेना,

संकोच न करना। तुम इसको जितनी शीघ्र समाप्त करोगी, मुझे उतनी ही अधिक प्रसन्नता होगी।

चार दिन पीछे वह बुढियाके पास आया। बुढिया उस समय द्वारपर बैठी रोटियोंके टुकडे रसेमें मिला रही थी। चीको भी उससे सटकर बैठ गया। बुड्ढीके मुखसे मदिराकी गंध निकलती हुई देखकर, उसको वडी प्रसन्नता हुई। उसने बुढियाके पास बैठकर उस बार भी तीन प्याले मदिराके पिये।

अब बहुत ही शीघ्र अडोस-पडोसमे भी यह बात फैल गई कि बुढिया दिन-रात मदिरा-पानमें लगी रहती है। कभी रसोईघरमें, कभी ऑगनमें और कभी कभी तो सड़कमे वह बेहोश होकर गिरने लगती है। बेचारे पड़ोसी उसको आधी रातके समय उठाकर मकानमें पहुँचा आते है।

शराबवालेने भी बुढियाके यहाँ आना-जाना छोड दिया। जब कभी लोग उसकी चर्चा चलाते तो वह कृत्रिम सहानुभूति दिखाकर कहने लगता कि "देख-देखकर हृदय विदीर्ण होता है। यह अवस्था और ऐसी लत। पर क्या किया जाय, बूढोंका कुछ इलाज ही नही है। देखना, थोडे ही दिनोंमें चल बसेगी।"

और यही हुआ भी। अगले शिशिरमे उसका प्राणान्त हो गया। बडे दिनपर वह मदमत्त होकर बर्फपर गिर गई और अगले दिन प्रात.काल मरी हुई पाई गई।

जब चीको उसकी धरतीपर कब्जा करने गया, तो कहने लगा—

"बुढियाने वडी मूर्खता की। यदि वह मदिरा न पीती, तो कमसे कम ३० वर्ष और जीती रहती।"

काउंटेस सैमोरि

"काउंटेस सैमोरि।"

"क्या यह उसका नाम है, जो सामने काले वस्त्र पहिने हुए बैठी है?"

"जी हाँ, वही जो अपनी लड़कीकी हत्या करनेके उपरान्त शोक-सूचक वस्त्र धारण किये हुए है।"

"कहीं तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो? सच कहना लड़कीकी मृत्यु किस प्रकार हुई?"

"अजी, वह तो अत्यन्त साधारण घटना थी, अपराध अथवा बलात्कार किये बिना ही, वहाँ समस्त कार्य संपन्न हो गये।"

"तो फिर, वास्तवमें जो कुछ हुआ है, उसको कह क्यों नही डालते?"

"भाई, बात तो कुछ भी नहीं है, कहते हैं कि बहुतसी स्त्रियाँ, वेश्याके घर उत्पन्न होते हुए भी, धार्मिक जीवन व्यतीत करती हैं और बहुतसी, सदाचारमय जीवन व्यतीत करनेवाली कहलाकर भी, व्यभिचार कराती हैं; इस लोकोक्तिपर क्या तुम विश्वास नहीं करते? इन श्रीमतीजीपर यह कहावत सोलह आना चरितार्थ होती है। अर्थात् काउंटेस सैमोरि वेश्या होनेपर भी, उनकी पुत्री अत्यन्त ही धार्मिक थी; बस बात केवल इतनी ही है।"

"मै तुम्हारा आशय नहीं समझा।"

"तनिक ठहरिए, मै भली भाँति समझाये देता हूँ। काउंटेस कहलानेवाली यह स्त्री, वास्तवमें साधारण श्रेणीकी है। यह नवोत्थिता कहाँ उत्पन्न हुई है, इसको कोई नहीं जानता। यह युवती हंगेरी अथवा वैलेशियाकी काउंटैस है या कोई और, यह भी मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता। प्रगल्भ स्त्री-पुरुषोंके प्रधान अड्डे शंजेलिजे (Champs Elyse'es) में मकान किरायेपर लेकर, एक वर्ष शीत ऋतुमें, इन्होंने भी अपना गोल कमरेका द्वार

उस ओर आनेवाले सर्वप्रथम पुरुषके लिए, अथवा यों कहो कि प्रत्येक इच्छुकके लिए, खोल दिया।

" मैं भी वहाँ जाया करता था। तुम पूछोगे—' क्यों ? ' परन्तु इसका उत्तर देना मेरी शक्तिके बाहर है। केवल इतना ही कहूँगा कि स्त्रियाँ सुसाध्य, और पुरुषोंके कुटिल होनेके कारण, औरोंकी भाँति मैं भी वहाँ जाता था। उपाधिधारी विविधाभूषणयुक्त हमारा देश लूटनेवाले इन साहसी परदेशियोंसे, जो भद्रकुलोत्पन्न होनेकी डींग मारते हैं, तुम तो भली भाँति परिचित ही हो; परंतु गुप्तचरका कार्य करनेवालोंको छोड़कर, इनके शेष समाजको वैदेशिक दूत-भवनोंमें भी कोई नहीं जानता। वेश्यालय रखनेपर भी कुलीनताका दम भरनेवाले यह आत्मश्लाघी, मिथ्यावादी, वंचक, अवसर न होनेपर भी अपनी मानमर्य्यादाका बखान करते हैं। कहाँतक कहूँ, यह सब पत्तेबाज़ोंके समान भयंकर और अपने नामोंकी भाँति भ्रमोत्पादक होते हैं।

" मैं तो इन पुरुषोंकी सदैव आराधना ही किया करता हूँ। इनका अध्ययन चित्ताकर्षक, जानकारी सरस, और ज्ञान कौतूहलवर्धक होता है। अन्य बाजारियोंकी भाँति नीरस न होकर यह बहुधा दक्ष एवं कुशल ही होते हैं। इसी प्रकार इनकी स्त्रियोंमें, विदेशीय धूर्तताका कुछ-एक मिश्रण होनेपर भी, सौन्दर्य कूटकूट कर भरा होता है और उनके रहस्यमय जीवनका संभवतः आधेसे अधिक भाग सुधारगृहोंमें ही व्यतीत होता है। उनके नेत्र, साधारणतया, दैदीप्यमान् होते हैं और केशोंका तो कहना ही क्या है, उनको देखकर तो विश्वास ही नहीं होता। कहना न होगा कि मैं उनका भी परमभक्त हूँ।

" विदेशी स्त्रियोंके यह समस्तगुण, श्रीमती सैमोरिमें सोलह-आना पाये जाते हैं। प्रौढ होनेपर भी उनका रूप और लावण्य पहले जैसा ही बना हुआ है। इन हृदयाकर्षक बिल्लियोंको देखकर, ऐसा प्रतीत होता है कि मानों इनकी दृष्टियोंकी मींग तकमें पापवृत्तियाँ भरी पड़ी हैं। इनसे मिलकर खूब ही चित्तरंजन होता है। यह ताश खेलनेको भी बुलाती हैं और नृत्य एवं भोजके लिए भी न्यौता देती हैं। निष्कर्ष यह कि सामाजिक-जीवनके समस्त सुखोंका उपभोग करानेके लिए यह सदा प्रस्तुत रहती हैं।

" हाँ, तो, श्रीमतीजीके एक लड़की थी; जिसकी देह रूखी और पुष्ट सुडौल एवं सुंदर था। वह हँसोड़ और मस्त रहनेवाली लड़की आमोद-प्रमोदके लिए सदैव तयार रहती थी। अद्भुत साहस-प्रदर्शनकारी विदेशियोंकी इस बालिकामें अपने कुलानुरूप, अन्य समस्त गुण होते हुए भी, वह अत्यंत ही सरल एवं सीधी थी; और यही कारण था कि अपने पिताके घरमें होनेवाली घटनाओंको भी वह न तो जानती थी और न समझती थी।

" वह लड़की मेरे लिए एक पहेली थी, और वास्तवमें उसका जीवन था भी अत्यंत रहस्यमय। निंद्य परिस्थितिमें घिरी रहनेपर भी ऐसे सौम्य, शान्त, एवं स्वस्थ रूपसे जीवन व्यतीत करनेवाली बालिका, घोर पाप, अथवा सरलताका साक्षात अवतार प्रतीत होती थी। निकृष्ट वर्गमें उत्पन्न हुई इस बालिकाकी, घूरेपर लगे हुए सुन्दर कमनीय पुष्पसे, तुलना की जा सकती थी।

परंतु तुमको उनका यह वृत्तान्त क्योंकर मालूम हुआ ?

"मैंने इसको कैसे जाना? अजी इस कथामें सबसे मजेदार बात तो यही है। सुनो, एक दिनकी बात है कि द्वारपर घंटीका शब्द होते ही नौकरने मुझसे आकर कहा कि जोज़फ थोनेलथल नामका एक व्यक्ति मुझसे मिला चाहता है। सुनते ही मैंने कहा—" वह पुरुष कौन है ?' दासने उत्तर दिया—' श्रीमान् जानता तो मैं भी नहीं हूं; परन्तु बहुत करके वह नौकरी ही ढूँढता आया होगा। और वास्तवमें बात भी यही थी। वह पुरुष मेरे यहाँ नौकरी किया चाहता था। मेरे यह पूछनेपर कि पहिले वह कहाँ काम करता था, उसने ज्यों ही काउंटैस सैमोरिका नाम लिया, त्यों ही मैंने ठंडी आह भरकर कहा कि मेरा घर उनसे सर्वथा विपरीत है। यह उत्तर सुनते ही वह बोला—' श्रीमान्, यह मैं भली-भाँति जानता हूँ और इसी कारण यहाँ आश्रय लेनेका प्रार्थी हूँ। उस परिवारकी नौकरीसे मैं भर-पाया। उनके यहाँ कुछ कालके लिए तो शायद कोई नौकर टिक भी जाय, पर अधिक कालतक उसका वहाँ रहना सर्वथा असंभव है।' एक अतिरिक्त नौकरकी उस समय आवश्यकता होनेके कारण मैंने उसको, फिर बिना कुछ और कहे-सुने, तुरंत अपने यहाँ रख लिया।

"इस घटनाके एक मास पश्चात् काउंटेसकी लडकीका किसी गुप्त कारण-वश सहसा देहान्त हो गया और इस संबंधमे जो जो बातें अपनी प्रेयसीसे, जो काउंटैसके यहाँ परिचारिका थी, जोज़फने मालूम करके मुझको बताई वह इस प्रकार हैं—

"एक दिनकी बात है कि रातको नृत्यमे आये हुए दो नवीन अतिथि दर्वाजेके पीछे बैठे हुए कुछ वार्त्तालाप कर रहे थे कि इस बीचमें कुमारी यीवेत्त भी शुद्ध वायु-द्वारा, नृत्य-जनित श्रम दूर करनेके लिए उधर आ, उन्हीं किवाड़ोंका सहारा लेकर खड़ी हो गई।

"कुमारीको न देख सकनेके कारण, अतिथि पूर्ववत् वार्त्तालाप करते रहे; परन्तु उनकी वह सब बातचीत पुत्रीने भली-भाँति सुन ली; और वह इस प्रकार थी—

'परंतु इस लड़कीका पिता कौन है?'

'काउंट रुवैलौफ नामक एक रूसी धनिक।'

'परंतु वह तो अब इसकी माताके पास फटकता भी नहीं।'

'फिर, इस गृह-प्रदेशपर अब किस राजाका राज है?'

'खिड़कीके पास खड़े हुए उस अंग्रेज राजपुत्रका। श्रीमती सैमोरि तो उसकी बस पूजा ही करती रहती है; परंतु इससे होता ही क्या है? क्योंकि यह आराधना वर्ष छह महीनेसे ज्यादा रहती ही नहीं। फिर भी, जैसा कि तुम स्वयं देख रहे हो, उसके चाहनेवालोंकी कमी नहीं है। वह प्रायः सब-हीको न्यौता देती है और पसंद कर लेती है। ऐसा करनेमे व्यय अधिक होता है, परंतु उसकी चिंता ही किसको है और ऐसे स्थानोंमें तुम अन्य प्रकारकी आशा भी भला क्या कर सकते हो।

'परंतु यह नाम (सैमोरि) इसने कहाँसे उड़ाया है?'

'बर्लिननिवासी सैमुएल मौरिस नामक यहूदीसे। अपने समस्त जीवनमे उसके अतिरिक्त इस स्त्रीने शायद किसी अन्यसे प्रेम ही नही किया।'

'यह बातें भी आपने अच्छी सुनाई। वास्तवमे मैं आपका अनुग्रहीत

हूँ। इस स्त्रीसे मैं अब परिचित भी हो गया और यह भी जान गया कि यह है किस प्रकारकी, बस ऐसे स्थानपर अधिक ठहरना उपयुक्त नहीं।'

"धार्मिक प्रवृत्तिवाली उस बालिकाके चित्तपर इन बातोंसे कैसी ठेस लगी, इसको सुनकर वह सरलहृदया किस प्रकार निराशाके समुद्रमें डूब गई, उसका असीमोल्लास, मनोहर अट्टहास और जीवनके प्रति सोलह आना संतोष, किस प्रकार मानसिक यातना-रूपी पालेके कारण मुरझा गया और अंतिम अतिथिके विदा होनेतक, उसके हृदयमें कैसा तुमल युद्ध छिडता रहा, इन बातोंको बताना जोज़फकी शक्तिके बाहर था। परंतु उसी रातमें जैसे ही काउंटैस, अपनी शय्यापर शयन करने जा रही थी, वैसे ही नौकरनीके द्वारसे बाहर निकलते ही, उनके कमरेमें घुसकर 'यीवेत्त' विवर्ण मुख हो, आँखें फाडकर, मातासे खड़े खड़े यों बोली.—

"माँ! नृत्यमें अभी थोड़ी देर हुई, जो कुछ मैंने सुना है वह तुम भी ध्यानपूर्वक सुन लो।"

"इतना कह उसने वह सब बातें जो मैंने अभी सुनाई हैं, अक्षरशः माताके सामने दोहरा दीं।"

"सुनते ही पहिले तो काउंटैस ऐसे सन्नाटेमें आ गई कि कुछ कहते ही न बन पडा, परंतु फिर स्वस्थचित्त होते ही, उसने इसके अस्तित्वको अस्वीकार कर, ईश्वरको साक्षी देकर, समस्त वृत्तान्तको—आदिसे अन्ततक—मिथ्या बता दिया।

"संदेह सर्वथा न मिटनेपर भी, लडकी उस समय तो, वहाँसे अकुलाकर चली आई, पर आगेके लिए उसने मातापर दृष्टि रखनी प्रारंभ कर दी।

"उसकी मुखमुद्राका वह अद्भुत परिवर्त्तन, मुझको अभीतक भली भाँति, स्मरण है। उस दिनसे उसकी सारी चपलता जाती रही और वह खिन्न रहने लगी। अपनी बडी बडी आँखोंसे टकटकी बाँधकर, हमारी ओर, तब वह इस प्रकारसे देखती थी, मानो हमारे हृदयस्तलके विचारोंको पढना चाहती हो। परंतु उस समय लड़कीके मनकी बात न जाननेके कारण हमने सदा यही समझा कि वह पतिकी खोजमें है।

"एक दिनकी बात है कि संध्यासमय, लडकीने माता और उसके एक प्रेमीकी बातें छिपकर सुन लीं, और फिर उनको एक गुप्त स्थानपर, पास-पास, बैठे हुए भी देख लिया, जिससे उसके संदेहकी सर्वथा पुष्टि होती थी। इस घटनासे लड़कीका हृदय टूक टूक हो गया और माताको अपनी आँखोंदेखी बातें सुनाकर, इकरारनामा लिखानेवाले व्यवसायीकी भाँति उदासीन भावसे वह यों कहने लगी—'देखो माँ, मैंने अब यह निश्चय किया है कि हम दोनों इस स्थानको छोड़कर, किसी छोटेसे नगर अथवा देहातमें जाकर, यथाशक्य शान्तिमय जीवन व्यतीत करेंगे। तुम्हारे आभूषण ही इतने मोलके हैं कि उनको बेचकर हम धनाढयोंकी भाँति रह सकते हैं। वहाँ तुम किसी भले मानुससे विवाह कर लो तो भी हर्ज नहीं है; और फिर मुझको भी यदि कोई सुयोग्य वर मिल गया तो और अच्छा है; परंतु तुम्हारे ऐसा न करनेपर, मैं आत्महत्या कर लूँगी।'

"इस बार माताने, पुत्रीको जाकर सोनेकी आज्ञा दी और फिर ऐसी बातें करनेको मना कर दिया और कहा कि 'मातासे इस प्रकार बोलना पुत्रियोंको शोभा नहीं देता।'

"यह सुनकर, 'यीवेत्त' ने कहा—'इसपर विचार करनेके लिए, मैं तुमको, फिर भी, एक मासका समय देती हूँ। फिर इस कालके पश्चात् भी यदि तुमने अपना चलन न बदला, तो मैं सदाचारमय जीवन व्यतीत करनेकी कोई अन्य राह न होनेके कारण, अवश्य ही आत्महत्या कर लूँगी' और वहाँसे उठकर चल दी।

"एक मास पश्चात्, काउंटैस सैमोरिने अपनी पुरानी रंगरलियाँ फिर इस प्रकारसे प्रारंभ कर दीं, मानों कोई बात ही नहीं हुई थी। माताका यह आचरण देख, 'यीवेत्त' ने दाँतोंमें दर्दका बहाना कर पडौसके एक दवा बेचनेवालेके यहाँसे कुछ बूँद क्लोरोफार्म मोल लिया, फिर अगले दिन, और उसके पश्चात् कई दिन पर्यंत वह थोडी थोडी खुराकमें नींद लानेवाली इस औषधिको युक्तिपूर्वक मोल लेती रही, यहाँ तक कि उसके पास एक शीशी भर गई।

"एकदिन प्रातःकाल, लड़की, अपनी शय्यापर निर्जीव पडी मिली। उसकी समस्त देह तब हिम-सरीखी शीतल हो रही थी और क्लोरोफार्मसे खूब तर किया हुआ एक सूती टोपा उसके मुखपर रक्खा हुआ था।

" यिवेत्तका कफन फूलोंसे ढक दिया गया, गिरजाघरमें श्वेत वस्त्रके पर्दे उस अवसरपर लटकाये गये, और मृतकसंस्कारके समय भी खूब भीड़ रही।

" आह ! यदि मैं इन बातोंको पहिलेसे जान सकता, तो अवश्य ही उस लडकीसे विवाह कर डालता। क्योंकि वह ग़ज़ब की सुंदरी थी, परंतु यह बात तो मेरे भाग्यहीमें न थी।"

" हाँ, यह तो बताओ, कि माताकी तब क्या दशा हुई ?"

" अजी, उस समय तो उसने ढेरों आँसू बहाये, परंतु अब पिछले सप्ताहसे पुनः लोगोंकी बुलाना-चलाना प्रारंभ कर दिया है।"

" पर उस लडकीकी मृत्युका वह कारण क्या बताती है ?"

" अरे भाई, उसका ज़िक्र आनेपर तो वह यों कहकर टाल देती है कि एक नये 'स्टोव्ह' के कल पुर्जे बिगड जानेके कारण वह घटना हुई थी और बहुतसी ऐसी घटनाएँ हो जानेके कारण, लोग इस बातपर विश्वास भी कर लेते हैं।"

निरर्थक सौन्दर्य

(१)

जून मासके अंतमे एक दिन लगभग संध्याके साढे पॉच बजे, जब कि सूर्यका उष्ण-प्रकाश उस लंबे चौडे आङ्गनमे भरा हुआ था, प्रासादके सम्मुख दो सुंदर काले घोड़े जुती हुई एक सुभग 'विक्टोरिया' आकर खडी हो गई।

काउंटैस मासकैरे अभी सीढ़ियोपर उतर रहीं थीं कि उनको घर लौटते हुए, अपने पति गाडीके द्वारपर खड़े हुए दिखाई दिये। पत्नीको देखनेके लिए वह, कुछ क्षणपर्य्यंत, वहॉ रुके और फिर उनका रंग पीला पड़ गया। काउंटैस अत्यंत ही सुंदर एवं लावण्यवती थीं। उनका मुख कुछ एक लंबा, वर्ण पीले हाथी-दॉतके समान, ऑखें बडी बडीं एवं भूरीं और बाल काले थे। पतिकी ओर बिना दृष्टिपात किये, उनको अनदेखेकी भॉति छेककर, वह अपनी गाडीमें ऐसी सौजन्य-प्रदर्शक मुद्रासे जाकर बैठ गईं कि सुदीर्घ कालतक दहन करनेवाली ईर्ष्याने पति-महोदयका पुनः हृदय-कृन्तन करना प्रारंभ कर दिया और उन्होने भार्यासे जाकर पूँछा कि क्या तुम हवा खाने जा रही हो?

इसपर स्त्रीने कुछ-एक अवज्ञापूर्वक कहा—"यह तो तुम स्वयं ही देख रहे हो।"

"क्या बॉय द बोलोनकी ओर जाओगी?"

"बहुत संभव है।"

"क्या मै भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

"यह गाडी तुम्हारी ही है।"

भार्याके स्वरपर आश्चर्य प्रकट किये विना ही वह गाडीमें घुस उनके पार्श्व भागमें जा बैठे, और उन्होंने 'बॉय द बोलोन' चलनेका आदेश किया। आज्ञा मिलते ही, साईस कूदकर कोचमैनके पास जा बैठा, और

घोडे सदाकी भाँति इठलाते तथा मस्तक विक्षेप करते हुए सडककी ओर दौडने लगे। एक दूसरेके पार्श्व भागमें बैठे हुए पति-पत्नी, इस समय सर्वथा मौन थे। वार्तालापके लिए उत्सुक होनेपर भी, वह किस प्रकार प्रारंभ किया जाय, यह बात पति महाशयकी समझमें न आती थी। और पत्नीने भी, आग्रह अथवा दुराग्रहपूर्वक, अपनी दृष्टि इतनी उग्र कर ली थी कि उनको ऐसा प्रयत्न करनेका साहस तक न होता था। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी पतिने अन्तमें एक उपाय सोच ही लिया, और अत्यन्त दक्षतापूर्वक काउंटेसका दस्ताना-चढा हाथ इस प्रकारसे छुआ मानो उनका हाथ अनायास ही उस ओर चला गया है। उनके ऐसा करते ही पत्नीने अपनी बाँह घृणा प्रदर्शित करते हुए इतने वेगसे सिकोडी कि सदैव निरंकुशता तथा प्रभुत्व प्रकट करनेका स्वभाव होनेपर भी, स्वामी सन्नाटेमें आ गये और केवल यही कह सके—गैवरियल !

"तुम क्या कहना चाहते हो ?"

"यही कि तुम कैसी सुन्दर दीखती हो।"

यह सुनकर, उन्होंने उत्तर तो कुछ न दिया; परन्तु वे गाडीके तकियेका सहारा लिये हुए रूठी रानीकी भाँति पूर्ववत् बैठी रहीं। गाडी इस समय 'शज़े लिज़े'[1] (champo Elsees) में होकर, आर्क द त्रियम्फ (विजयद्वार) की ओर, दौडी जा रही थी। सुदीर्घ कुंजके छोरपर बने हुए इस विशाल स्मारकका बृहत्काय तोरण, रक्त आकाशकी ओर उन्नत मस्तक किये हुए खडा था, और अस्ताचलगामी सूर्य रक्त-धूलिका वर्षण कर, उसपर गिरता हुआ सा प्रतीत हो रहा था।

गाडियाँ धारावाही रूपसे, दो पंक्तियोंमें नगर और 'वॉय' की ओर आ-जा रही थीं, और सूर्यकी ज्योति, उनके पार्श्वभागीय लैम्पोंके काँच, तथा रजतमंडित अश्वसज्जाओंपर पडकर सहस्र-सहस्र रश्मियोंद्वारा प्रतिविम्बित हो रही थी। काउंट द मासकैरेने इसी समय फिर कहा—प्यारी गैवरियल !

चित्तको और अधिक कालतक वशमें रखनेका सामर्थ्य न होनेके कारण भार्य्याने झल्लाकर कहा—आह ! कृपाकर मेरी शान्ति भंग न करो !

---

१ पैरिसकी अत्यत प्रसिद्ध सडक

अपनी गाड़ीमें भी मुझको अब अकेले बैठनेकी आज्ञा नहीं मिलती; परंतु इस बातको सुनी अन-सुनी-सी कर उन्होंने फिर कहा—" अन्य दिनोंकी अपेक्षा आज तुम कहीं अधिक सुन्दरी दीखती हो।"

धीरजका सर्वथा अन्त हो जानेके कारण भार्य्याने इस बार दुर्निवार क्रोधित स्वरसे कहा—" तुमने इसको व्यर्थ ही देखा। मैं शपथ खाकर कहती हूँ कि आगेसे मैं तुमको कदापि वैसा न करने दूँगी।"

काउंट, जो अब वास्तवमें घबराकर, अव्यवस्थित एवं हतबुद्धिसे हो रहे थे, स्वाभाविक क्रोध बढ जानेके कारण उच्च स्वरसे कहने लगे—" तुम क्या कह रही हो ?" यह वाक्य उन्होंने, कुछ इस ढंगसे कहा कि मानों, वह एक निर्दय शासक हैं, न कि प्रेमी। गाड़ीके पहियोंकी कान-फोड़ घड़-घड़ाहटमें, नौकरोंको कुछ भी सुनाई न दे, इस कारण भार्याने पतिके प्रश्नका धीमे स्वरसे यह उत्तर दिया " क्या कहा तुमने, कि मैं क्या कह रही हूँ ? इस कथनसे मेरा क्या आशय है ? आह ! अब मैं, तुमसे पुनः भली-भाँति परिचित हो गई। क्या तुम मुझसे सब ही बातें सुना चाहते हो ?"

" हाँ।"

" तुम्हारी भयंकर स्वार्थपरताके वशमें, जबसे पड़ी हूँ, तबसे आज-पर्यन्त, जो जो बातें मेरे हृदयपर, बोझकी भाँति लदी हुई हैं, क्या वह सब ही कह डालूँ ?"

आश्चर्य और क्रोधसे रक्तवर्ण हो; उन्होंने दाँत पीसकर उत्तर दिया—

" हाँ मुझसे सब बातें कहो।"

इस सुंदर, भद्रकुलोत्पन्न पुरुषकी देह लंबी, कंधे चौड़े, दाढी घनी एवं रक्तवर्णकी थी। सांसारिक-व्यवहारपटु होनेके कारण, यह व्यक्ति सर्वत्र ही निर्दोष स्वामी और श्रेष्ठ पिता कहलाता था। घरसे बाहर आनेके पश्चात् अब, पहिली बार, पतिके मुखकी ओर देख, आँखोंसे आँखें मिला, पत्नीने कहा,—" आह ! तुमको अब बहुतसी अप्रिय बातें सुननी पड़ेंगी, परंतु यह भली-भाँति समझ लो कि मैं, अब प्रत्येक फलाफलके लिए सर्वथा तयार हूँ। मुझको किसीका भी डर नहीं और आज तो मैं अन्य पुरुषोंकी अपेक्षा तुमसे, बहुत ही कम, भयभीत हो रही हूँ।"

क्रोधसे काँपते हुए, पत्नीकी आँखोंसे आँखें मिला, उन्होंने भी अब मंद स्वरसे कहा—" तुम पागल हो रही हो ।"

" नहीं—गत ग्यारह वर्षोंकी भाँति माता बनाकर तुम मुझको, इस घृणित रूपसे, बलि-पशुके समान और अधिक दंड न दे सकोगे । अन्य स्त्रियोंकी भाँति, मैं भी, अपने अधिकारोंका उपयोग कर समाजमें निज स्थान प्राप्त करना चाहती हूँ ।"

यह सुनकर, सहसा पीले वदन हो, उन्होंने कंपित एवं अस्फुट स्वरसे कहा—" मैं तुम्हारा आशय नहीं समझा।"

" वाह ! क्या ठीक कहा है ! जो मैं कह रही हूँ वह भले प्रकार तुम्हारी समझमें आ रहा है । अन्तिम शिशुको उत्पन्न हुए अभी केवल तीन मास ही बीते हैं । तुम्हारे भरसक प्रयत्न करनेपर भी मेरी आकृति नहीं बिगडी है । और क्योंकि तुमने द्वारसे निकलते समय मुझसे अभी कहा था कि मैं अब भी अत्यंत सुंदर देख पड़ती हूँ अतएव इस समय तुम मेरे पुन प्रसवकी बात सोच रहे हो ।"

"कैसी मूर्खताकी बातें कर रही हो ।"

" नहीं, यह बात नहीं है । मेरी आयु इस समय तीस वर्षकी है । हमारा विवाह हुए ग्यारह वर्ष बीत गये और इस बीचमें मेरे सात संतानें उत्पन्न हुईं; अब अगले दश वर्षतक तुम यही सिलसिला और जारी रखना चाहते हो और तदनंतर ही शायद तुम्हारी समस्त शङ्काएँ समूल नष्ट हो सकेंगी ।"

इसपर, भार्याकी बाँह पकड़कर दबाते हुए, वह बोले—"अब मैं तुमको इस प्रकारकी अन्य बातें कदापि न कहने दूँगा ।"

" जो कुछ मैं कहना चाहती हूँ वह, जब तक आदिसे अन्त तक, न कह लूँगी, तब तक कदापि चुप न बैठूँगी, और यदि तुम मुझको रोकनेकी चेष्टा करोगे तो मैं इतने उच्च स्वरसे बात करूँगी कि कोचबक्सपर बैठे हुए दोनों नौकरोंको भी पता चल जायगा। इस समय तुमको अपने साथ लानेमें मेरा तात्पर्य ही यह था कि, इन दो साक्षियोंकी उपस्थितिमें, अनिच्छा होने पर भी मेरी बात, तुमको, बरबस धैर्यसे सुननी पड़ेगी, इस लिए जो कुछ मुझको कहना है, वह ध्यान देकर सुनो । महाशय, आपके प्रति मेरे हृदयसे सदैव विद्वेष रहा है, और इसका, मैंने आपसे दुराव भी नहीं किया;

कारण यह कि मैं मिथ्या आचरणको बहुत बुरा समझती हूँ। मेरी अनिच्छाकी पर्वाह न कर आपने मेरे साथ विवाह कर डाला; मेरे माता-पिताको, उनकी दुरवस्थाके कारण, आपने अपने धनके गर्वसे, मेरा हाथ आपके हाथमें सौंपनेके लिए विवश कर दिया; और इसी कारण मेरे आँसुओंपर ध्यान न दे, उन्होंने मुझको आपके साथ ब्याह दिया।

"इस भाँति तुमने मुझको मोल लिया था; और ज्यों ही मैं तुम्हारे अधिकारमें आई—तुम्हारी संगिनी बनी—पिछली भयप्रदर्शक नीति एवं धमकियोंको भूलकर, पतिव्रताकी भाँति मैं भक्ति और प्रेम करनेको उतारू हुई, त्यो ही, नीच एवं अधम गुप्तचरकी भाँति, तुम ऐसी ईर्ष्या करने लगे कि जिसके समान इससे प्रथम शायद ही किसी पतिने अपने पत्नीके प्रति की होगी। यह कृत्य तुम्हारे पदके सर्वथा प्रतिकूल था और इससे तुम्हारी तथा मेरी दोनोंकी, एकहीसी, अवमानना होती थी। मेरे विवाहको आठ महीने भी न हुए होंगे कि तुम, मेरी बात-बातमें, विश्वासघात समझने लग गये और यह तुमने मुझसे स्पष्टतया कह भी डाला। इस अपकीर्त्ति और नीचताका भी कुछ ठिकाना है! फिर मेरे सौन्दर्यको न्यून करनेका सामर्थ्य न होनेके कारण—मुझको अन्य पुरुषोंके साथ हँसते-बोलते, विशिष्ट-कुलोंमे मेरा आदर-सत्कार होते, और समाचार-पत्रोंमे मुझको पेरिसकी अत्यंत 'सुन्दरी-नारी' लिखा हुआ देखकर, तुमने—इन प्रशंसकोंको मुझसे दूर रखनेकी पहले तो खूब भरसक चेष्टा की, परन्तु इसमें सर्वथा असफल होनेपर—मनुष्योंकी दृष्टिमें जब तक सर्वथा हेय न हो जाऊँ तबतक मुझको सदैव जननी बनाये रखनेका अंतिम नीच संकल्प किया। वाह! तुम सिर हिलाकर क्या इन बातोंको अस्वीकार करना चाहते हो? परंतु अब, करनेसे होता ही क्या है! कुछ कालतक तो मैं, तुम्हारी यह चाल, न समझ सकी थी, परन्तु कालान्तरमें यह सब बातें स्वयं मेरी समझमे आ गईं। और आत्मश्लाघा समझ तुमने भी, बड़े दर्पके साथ, यह बातें अपनी बहिनसे कह डाली थीं; परंतु मुझपर स्नेह, और तुम्हारी असभ्य बर्बरतासे घृणा, करनेके कारण, उन्होने मुझको भी बता दी।

"आह! पहले तुमने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है, उसको तो तनिक याद करो। पिछले ग्यारह वर्षोंमे, समस्त समाज छुड़ाकर तुमने

मुझको किस प्रकार विवश कर संतानोंकी माता बनाया, इसका मैं क्या वर्णन करूँ; और फिर, घृणाके साथ, मुझको, गाँवमें खेतों और गोचरभूमिपर विचरण करनेके लिए भेजकर, किस प्रकार वहाँकी जमीदारी हवेली रहनेके लिए दे दी गई; यह भी क्या कुछ भूलनेकी बात है। परन्तु यह सब कुछ उपाय करनेपर भी जब मेरा सौन्दर्य्य यत्किंचित न्यून न हुआ, और मैं पूर्ववत् ही कमनीय एवं दोष-हीन बनी रही, तथा प्रशंसकोंकी भीड़ चारो ओर लगी रहनेसे समाजमें मेरा स्थान अधिक कालतक बने रहनेकी संभावना होने लगी, तो जिस प्रकार, मेरे पार्श्वभागमें बैठे हुए, इस समय घृणित एव नीच कामनाएँ तुम्हारे हृदयमें उठ रही हैं, ठीक वैसी ही भावनाएँ, उस समय भी, चित्तमें उठनेके कारण, तुम मुझको पुन. तंग करने लगे। मुझपर अधिकार करनेकी इच्छासे तुमने ऐसा सोचा हो सो बात न थी—क्योंकि मै तो स्वयं ही अपनेको तुम्हारे अर्पण करनेके लिए सदैव तयार रहती हूँ—और तुम, प्राणपणसे मुझको कुरूपा बनानेके लिए तुले बैठे हो।

"और फिर तुम्हारे मानस-विकारो और कार्योंका निरन्तर निरीक्षण करते रहने पर, जिसको बहुत काल पश्चात, मैं ठीक ठीक समझ सकी थी, वही गर्ह्य एवं रहस्योत्पादक घटना भी घटित हो गई, तुम अपनी संतानसे स्नेह करने लग गये और वह, मुझको जितनी भाररूप प्रतीत होती थी उसी 'अनुपात' में, तुमको मेरी ओरसे निर्भय करती जाती थी। मेरे कायिक सौष्ठवको नष्ट होता देख, क्षणिक प्रसन्नता प्राप्त होनेपर भी, अपने नीच-प्रकृतिजन्य संदेहके कारण, तुम मुझसे घृणा और संतानसे अनुराग करते थे।

"आह! कितनी बार उस प्रसन्नताकी झलक मैंने तुम्हारे मुखमंडलपर देखी है; और केवल तुम्हारे नेत्रोंके दर्शनमात्रसे ही उसे जान लिया है, परन्तु संततिको अपने ही रुधिरका अंश मानकर, तुमने कभी उनसे प्रेम न किया। 'विजय-फल' समझकर ही तुम उनको प्रेम-दृष्टिसे देखते थे, और तुम्हारी यह विजय थी मुझपर, मेरे यौवनपर, मेरे सौन्दर्य तथा मेरे लावण्यपर, और उन प्रशंसात्मक वाक्योंपर, जो मुझसे कहे जाते थे अथवा जिनको लोग स्पष्टतया मुझसे न कहकर, मेरे पास बैठ एक दूसरेसे

कहते थे। तुमको सन्तानोंपर गर्व है, और तुम इसका आडम्बर रचते हो; कभी इनको अपनी गाड़ीमें बिठाकर बौय द बोलोनकी सैर कराते हो, कभी मौंट मोरेन्सीमें खच्चरोंपर चढ़ाकर भेजते हो; और कभी नाटक-मंडलियों-हीमें अपने साथ लिये फिरते हो; और यह सब इसलिए, कि तुम्हारे साथ इनको देखकर लोग यह कहें कि अहा! कैसे दयालु पिता है और वारम्वार कहें—"

इतनेमें पुरुषने, पशुवत् क्रूरतासे, स्त्रीकी कलाई पकड़ इतने ज़ोरसे मसोसी कि वह चुप हो गई और मारे पीड़ाके चिल्लाने-हीको थी कि पतिने यह कहना प्रारंभ किया—

"सुनो, मैं अपनी सन्तानसे, प्रेम करता हूँ। तुमने जो बातें मुझसे अभी कहीं है वह किसी भी माताके लिए अत्यन्त ही लज्जाजनक है; परन्तु तुम भी अन्तमे मेरी ही हो, मै मालिक हूँ—तुम्हारा स्वामी हूँ; जो चाहूँ–इच्छानुसार सब कुछ ही, प्रत्येक समय–तुमसे बलपूर्वक ले सकता हूँ और न्याय–कानून भी इसमे मेरी ही ओर है।"

इधर तो वह अपने बड़े, बलिष्ठ, एवं स्नायुयुक्त हाथमे युवतीकी उँगलियाँ दबाकर दले डालते थे; और उधर वह भयसे नीलवर्ण हो, उनके संडासी सदृश बंधनसे उन्हें मुक्त करनेका असफल प्रयत्न कर रही थी। अन्तमे घोर पीडाके कारण उनका श्वास कठिनतासे चलने लगा और नेत्रोंमें आँसू भर आये। पतिने कहा, "तुम देखती हो कि मैं स्वामी हूँ और तुमसे कही अधिक बलिष्ठ हूँ" और अपनी मुट्ठी ढीली कर दी। तदुपरान्त पत्नीकी यह बात सुनकर कि "क्या तुम मुझको एक धार्मिक स्त्री समझते हो?" वह अचम्भेमें आ गये, और अस्फुट स्वरसे बोले—"हाँ।"

"क्या तुम यह समझते हो कि गिरजामें वेदीके सम्मुख—जहाँ यीशुका शव रक्खा हुआ है—शपथ खाकर भी मै असत्य ही कहूँगी?"

"नहीं।"

"क्या तुम मेरे साथ किसी गिरजामें चलोगे?"

"किसलिए?"

"यह वही चलकर मालूम हो जायगा। क्यो क्या कहते हो?"

"यदि वहाँ जानेका तुमने दृढ निश्चय कर लिया है, तो मैं भी साथ-साथ चला चलूँगा।"

युवतीने स्वर ऊँचाकर कहा—'फ़िलिप।' कोचमैन घोडोंपरसे आँखें हटाये विना ही कुछ झुका, मानों उसके कान केवल अपनी स्वामिनीकी ओर ही लगे हुए है। 'सेंट फिलिप–दु–रोलकी ओर गाड़ी हाँक दो।' काउंटैस्के इस आदेशपर उनकी विक्टोरिया जो अब, वौय द वौलोनके द्वार-पर पहुँच चुकी थी, पुनः पैरिसकी ओर लौट पडी।

पति-पत्नीने, तदुपरान्त, शेप राहमें कोई वात-चीत न की, और गिरजा आते ही, श्रीमती द मैसकेरे तो शीघ्रतासे कूदकर भीतर घुस गई और काउंट कुछ गज़की दूरीपर उनके पीछे पीछे हो लिये। काउंटैस अब विना रुके हुए सीधी उस स्थान तक चली गई, जहाँ गायकोंके लिए पर्दा लगा रहता है और वहाँ पहुँच एक कुरसीके निकट, हाथोंसे मुख ढाँप, धरतीपर घुटनोंके वल, वैठ गई और वहुत कालपर्य्यंत प्रार्थना करती रहीं। निकट खडे हुए पति महाशयने अब देखा कि वह रो रही है; परंतु यह रुदन निश्शब्द था; घोर मर्म-भेदी दुख आपड़नेपर स्त्रियाँ जिस प्रकार रोया करती हैं, ठीक वैसा ही था। उनकी देहमें एक प्रकारकी तरंग-मालाएँ-सी उठ रही थीं और अंतमें सिसकी भरनेका शब्द भी सुनाई दिया था, परन्तु उँगलियोंके कारण अवरुद्ध हो जानेसे, वह पुनः शीघ्र ही लुप्त हो गया।

अधिक स्थायी परिस्थिति होते देख, काउण्ट महाशयने उनका कंधा छुआ ही था कि वह, अंग स्पर्श होते ही, जलते अंगारेसे छू जानेकी भाँति, चौंककर शीघ्रतासे खड़ी हो, आपेमें आ, पतिकी आँखोंसे आँखें मिलाकर वोलीं—"मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ। मुझको किसी वातका भय नहीं है, चाहे तुम मार ही क्यों न डालो। सुनो, समस्त वालकोंमेसे एक—केवल एक तुम्हारी संतान नहीं है—यह मैं, ईश्वरको—जो यहाँ सब कुछ सुन रहा है—साक्षी करके तुमसे शपथ खाकर कहती हूँ। और यह सब केवल, तुम्हारे उस निन्दनीय, पुरुप-स्वभाव-जन्य निष्ठुर शासन और कठोर कारावासके सदृश प्रसूति-यंत्रणा देनेका प्रतिशोध-मात्र है, जो मेरे लिए संभवनीय था। मेरा प्रेमी कौन था?

यह तुम कभी न जान सकोगे। प्रत्येक व्यक्तिपर सन्देह करनेपर भी, तुमको इस बातका ठीक ठीक पता न चलेगा। तनिकसा भी प्रेम अथवा सुख न होनेपर भी, केवल तुमसे विश्वासघात करनेकी इच्छासे ही, मैंने अपनेको उस पुरुषके अर्पण कर दिया था और उसने भी मुझको संतानवाली बना डाला। वह कौनसा बालक है, यह भी तुम न जानने पाओगे। मेरी सात संतानोंमें वह कौन है, यही मालूम करनेका तुम अब भरसक प्रयत्न कर डालो। कुछ कालके अनन्तर तुमसे यह बात कहनेका मेरा स्वयं विचार हो रहा था, कारण यह कि, किसी पुरुषके साथ किस प्रकार विश्वासघात किया गया है, यह बताकर ही उससे पूरा बदला लिया जा सकता है; परन्तु तुमने आज ही यह बातें कहनेके लिए, मुझको विवश कर दिया। मुझको केवल यही कहना है।"

इतना कह वह शीघ्रतापूर्वक गिरजाके खुले द्वारकी ओर मुडकर चल दीं; परन्तु प्रत्येक क्षण, उनको यह आशंका हो रही थी कि पति महाशय, जिनकी उन्होने अभी अवज्ञा की थी, कहीं शीघ्रतापूर्वक पीछेसे आकर घूँसा मार काउंटैसको धराशायी न कर दें; परन्तु इतनेमेंसे कोई भी बात न हुई और वह कुशलतापूर्वक गाडीतक जा पहुँचीं, तथा एक ही छलांगमे कूदकर अन्दर घुस गईं। घोर दुःख एवं भयके कारण, इस समय वह बद-हवास हो रही थीं; और उनके मुखसे 'घरको' यह शब्द निकलते ही घोडे द्रुतगतिसे दुलकी चलने लग गये।

(२)

मृत्यु-दंड पाये हुए अपराधी जिस प्रकार फाँसीकी प्रतीक्षा करते हैं; ठीक उसी प्रकार अपने कमरेमें बैठी हुई काउंटैस भोजन-बेलाकी बाट जोह रहीं थी। पतिमहाशय अब क्या करेंगे? क्या वह घरमें आ गये हैं? स्वभावतः स्वच्छन्द क्रोधशील और सदा मारपीटके लिए उतारू होते हुए भी वह इस समय चित्तमें क्या सोच रहे है? और उन्होने क्या निश्चय किया है? यही विचार रह-रह-कर उनके चित्तमे उठ रहे थे। घरमें निस्तब्धता छाई हुई थी और, क्षण-क्षणमे, वह घड़ीकी ओर देख रही थी। परिचारिका भी अब स्वामिनीको संध्याकालीन वस्त्र पहिराकर कमरेके बाहर चली गई थी।

इतनेमें आठका घंटा बजते ही कमरेके द्वारपर दो वार खट-खटका शब्द हुआ और सरदारने भीतर घुस ' भोजन तयार ' होनेकी सूचना दी।

" क्या काउण्ट आ गये ? "

" जी हुजूर, वह तो खानेके कमरेमें बैठे हुए है। "

हृदयमें दुःखांत नाटकका तूफ़ान उठे रहनेके कारण, भविष्यके विचारसे, एक छोटासा रिवाल्वर—जो उन्होंने कुछ ही पहले मोल लिया था—अपने साथ ले चलनेका, उनके चित्तमें क्षणिक, विचार उत्पन्न हुआ, परंतु फिर वहाँ बच्चोकी उपस्थितिकी याद आनेपर, उसको तत्क्षण ही त्याग, वह केवल सूँघनेके लिए ' नौसादरकी शीशी ' लेकर ही, उधर चल दी। भार्याको आते देखकर पति महोदय भी आज कुछ अधिक आदर-सत्कार दिखाते हुए कुर्सीसे उठे, और फिर अभिवादनके लिए अपनी अपनी गर्दने कुछ ही झुकाकर, दोनो यथास्थान बैठ गये। तीनों लड़के अपने शिक्षक मठाधिवासी मार्टिनके साथ दाहिनी ओर बैठे थे और अंग्रेज शिक्षिका मिस मार्टिनके साथ तीनो लड़कियाँ बाईं ओर थीं। केवल सबसे नन्हा शिशु, तीन मासका होनेके कारण, धायके पास ऊपरके खंडमे था।

सर्व प्रथम पादरी महाशयने अन्य पुरुषोंके वहाँ न होनेके कारण—क्योंकि अतिथियोंके आनेपर बालक वहाँ भोजनके समय नहीं जाते थे—और दिनोकी भाँति ईश-प्रार्थना की और फिर भोजन प्रारंभ हुआ। एक ओर तो क्षुभित चित्त काउंटैस नीचे नेत्र किये भोजन कर रही थीं और दूसरी ओर काउंट महोदय, संशयग्रस्त हो, म्लान वदनसे, कभी तो तीनो लड़कोकी ओर और कभी तीनों लडकियोकी ओर दृष्टिपात कर रहे थे। इतनेमे, खसकाते समय, पान-प्याला, पास रक्खे हुए अन्य पदार्थोसे टकराकर, टूट गया और उसमे भरी हुई समस्त मदिरा मेज़पर बिछे हुए कपड़ेपर बिखर गई। इस क्षुद्र घटनाके कारण, पात्रोके किंचित् खटकनेका शब्द होते ही, काउंटैस कुर्सीसे उठ खड़ी हुईं, और अनिच्छा होते हुए भी दोनोंकी (चार) आँखे मिलते ही, धमनियोंमें दाह उत्पन्न होनेके कारण, उन्होने एक दूसरेकी ओर, पिस्तौलसे निकलनेवाली गोलियोंकी भाँति, शीघ्रतापूर्वक, कई बार दृष्टिपात किया।

ठीक ठीक हेतु न जाननेपर भी पादरी महाशयने, गड़बड़ समझ, वार्त्तालाप प्रारंभ करनेके लिए विविध प्रसंग छेड़े; परन्तु वारम्वार प्रयत्न करनेपर भी, किसीके मुखसे, एक भी शब्द न निकला। काउंटैसने स्त्री-सुलभ दक्षतासे उत्तर देने भी चाहे, पर सफल न हुईं; उद्विग्न चित्त होनेके कारण, एक तो उनको ढूँढनेपर भी, उस समय, उपयुक्त शब्द नहीं मिलते थे; दूसरे, रकाबियों और छुरी कॉटोंकी मंद ध्वनिको छोड़कर, उस बडे कमरेमें, निस्तब्धता भंग करनेवाले, अपने ही स्वरको सुनकर वह बहुत भयभीत हो रही थीं।

इतनेमें, सहसा उनकी ओर झुककर, पतिने कहा—"यहाँ अपनी संतानोंके बीचमें क्या तुम शपथ खाकर कह सकती हो कि तुमने जो मुझसे अभी कहा है वह वास्तवमें ठीक है?"

धमनियोंमें खमीरकी भाँति उठनेवाली घृणाके कारण, काउंटैसने, पतिकी ओर दृष्टिपात करते समय, जैसी दृढता दिखाई थी, वैसे ही साहससे, अब दोनों हाथ उठा, दायेंसे लडको और बॉयेंसे लड़कियोंकी ओर इंगितकर, विना हिच-किचाए उच्च अकंपित स्वरसे कहा—

"मै अपने बालकोंके सिरकी सौगंध खाकर कहती हूँ कि मैने जो कुछ कहा था वह सब सत्य है।"

यह सुनते ही, भोजन करते समय जो तौलिया शरीरके कुछ अंगोंपर डाल लिया जाता है उसको मेजपर पटक, काउंट महाशय द्रुतगतिसे मेजसे उठ खड़े हुए; और कुर्सीको दीवारकी ओर फैक, बिना कोई अन्य शब्द मुखसे निकाले हुए, कमरेके बाहर चले गये। इसपर काउंटैसने, विजय-घोषक गहरा सॉस खीच, शांत स्वरसे कहा—"प्यारे बच्चो, तुम्हारे पिताने जो कुछ अभी कहा है, उसपर तनिक भी ध्यान न देना; कुछ देर हुई वह अत्यंत ही क्षुभित हो गये थे, परंतु थोड़े ही दिनोमें उनकी दशा फिर सुधर जायगी।"

तत्पश्चात् वह, पादरी महोदय और मिस स्मिथसे, बातें करने लगीं; परंतु बीच-बीचमे, अपनी मधुर एवं अमृतमय वाणीसे, बच्चोको भी प्रसन्न करती जाती थीं। सुधा-सिंचित शब्दोद्वारा बालकोंके हृदय-कमल किस प्रकार खिल उठते है यह बात माताएँ ही, भले प्रकार, जान सकती है।

भोजन-समाप्तिपर, वह बड़े गोल कमरेमें चली गई और बालक भी उनहीके पीछे-पीछे हो लिये, और वहाँ पहुँचकर लगे गपशप करने। परंतु जब उनके सोनेका समय आया तो सुदीर्घ कालतक उनका चुंबन करनेके पश्चात् वह, अपने कमरेमें, चली गई।

यह समझकर कि पति महाशय, कुछ कालमें, अवश्य ही आते होंगे, वह उनकी, यहाँ आकर, प्रतीक्षा करने लगी। बालक तो अब निकट थे ही नहीं, अतएव अन्य सांसारिक स्त्रियोकी भाँति, अपनी रक्षा करनेका, दृढ निश्चय कर, उन्होने कपड़ोंकी जेबमें, एक छोटासा रिवाल्वर भी—जो कुछ ही दिन पहले मोल लिया था—गोली भरकर डाल लिया। फिर, प्रहरपर प्रहर बीतने लगे; यहाँ तक कि घड़ीके घंटे तथा अन्य प्रकारके शब्द भी, घरके सन्नाटेमे विलीन होने प्रारंभ हो गये। केवल, रह-रहकर, सड़क-पर चलनेवाली गाड़ियोकी घड़-घड़ाहट ही, कमरेकी बंद परदे पडी हुई खिड़कियोंद्वारा जब तब, अस्पष्ट रीतिसे सुनाई दे जाती थी। पतिके हृदय-को ठेस पहुँचाकर और भविष्यमें उनको सदैव पीड़ित करते रहनेका उपाय प्राप्त हो जानेके कारण, सर्वथा निर्भय हो, प्रत्येक बातके लिए तयार होकर, विजयीकी भाँति, वहाँ आवेशमें बैठी हुई, अब वह उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

परन्तु उनके आये बिना ही, द्वारपर पड़े हुए पर्देके छोरोंके नीचेसे, उषःकालीन प्रकाशकी प्रथम रेखाएँ कमरेमें आना प्रारंभ हो गईं, और उस समय, श्रीमतीको आश्चर्यमें डालनेवाला, यह भयानक सत्य प्रकट हुआ, कि वह अब नहीं आवेंगे। अधिक रक्षाके विचारसे अब वह, दर्वाजा बंदकर, चटखनियाँ लगा, ताला डाल, शय्यापर जा पड़ीं और बहुत काल पर्य्यंत आँखें खोले पड़ी रहीं, परंतु वारम्वार सोचनेपर भी उनकी समझमें यह न आया कि काउण्ट महाशय अब क्या कर रहे हैं।

अंतमे परिचारिकाने जब भीतर आ, चायके साथ, पतिका एक पत्र दिया, तो उसको पढकर उन्हें पता चला कि वह किसी दूर देशकी लंबी यात्रा करने जा रहे है, पत्रके नीचे यह भी लिखा हुआ था कि श्रीमतीके आव-श्यक तथा अन्य सब प्रकारके खर्चोंके लिए, उन्होंने अपने वकील महोदयको काफ़ी धन दे रखा है।

(३)

नाट्य-गृहकी बात है। 'धूर्त्त राबर्ट' नामक खेलके दो अंक समाप्त हो चुके थे। दर्शकोसे शाला ठसाठस भरी हुई थी। अपने अपने स्थानपर खड़े हुए,—हैटधारी और नीचे कटकी वेस्ट पहिरे कि जिसमें भीतरके सफ़ेद कमीजका बहुत सा अग्रभाग, तथा उसमें लगे हुए रत्नजटित स्वर्ण-बटन भली भॉति दीख रहे थे—पुरुष दर्शक, विशेष कक्षामे बैठी हुई, हीरे-मोती-टँके स्वल्प परिधान-युक्त, उष्णगृहमे लगे हुए फूलोंकी भॉति विकसित, भद्र-कुलीय महिलाओंको देख रहे थे। वाद्य यंत्रो तथा मानव-स्वरोसे पूरित इस विशाल गृहमे मानों पुष्पसम विकसित होनेके लिए ही यह शुभ्र स्कंध तथा सुंदर कमलसम मुख उत्पन्न किये गये थे।

ग्रांड थियेटरकी शोभा बढानेवाली—रत्नाभूषण, सत्य अथवा मिथ्या कांति, विलास और अभिमानकी—इस प्रदर्शिनीको, वादक-समूहकी ओर पीठ किये हुए, दो मित्र भी ध्यानपूर्वक देख रहे थे और इनमेंसे एकने, जिसका नाम रैाजर दे सैलनिस था, अपने साथी बर्नार्ड-ग्रैण्डिनसे कहा—
"तनिक देखो तो, काउंटैस द मैसकेरे, अब भी कैसी सुंदर लगती है।"

यह सुनते ही उस अधेड मनुष्यने, अपनी सैरबीन लगाकर, सामनेकी ओर विशिष्ट कक्षामें बैठी हुई, एक दीर्घकाय युवतीकी ओर देखा, जो अब भी अत्यन्त अल्पवयस्क मालूम पडती थी, और जिसका अनुपम लावण्य नाटक-शालाके कोने कोनेकी दृष्टि अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। हाथी-दॉत सदृश कुछ-एक पीतवर्ण होनेके कारण, उसकी देह प्रतिमासदृश दीखती थी और घने-काले केशपाशमे हीरेका चमकता हुआ मुकुट, प्रकाश-रेखाके समान शोभा दे रहा था।

स्त्रीकी ओर कुछ कालपर्यंत देखनेके पश्चात् बर्नार्ड ग्रैण्डिनने, हृदयमें मित्रके कथनका सत्य अनुभव करते हुए भी, व्यंगके स्वरसे कहा—"तुम भले ही उसको सुंदर कहो।"

"क्यों? तुम उसकी कितनी आयु समझते हो?"

"तनिक ठहरो, मै तुम्हारे प्रश्नका ठीक ठीक ही उत्तर दूँगा, क्योंकि मै उसको बाल्यकालसे जानता हूँ। समाजमें उसने जिस समय सर्व-प्रथम पदार्पण किया था, वह भी मुझको भली-भॉति स्मरण है, परंतु तब तो वह

निरी बालिका ही थी, इस समय इसकी आयु—तीस—नहीं नहीं—छत्तीस वर्षकी है।"

"असंभव।"

"मैं निश्चयपूर्वक कह रहा हूँ।"

"परन्तु यह पच्चीस वर्षकी-सी लगती है।"

"इसके सात संतानें उत्पन्न हुई हैं।"

"इसपर विश्वास नहीं होता।"

"अजी और भी अधिक आश्चर्यकी बात तो यह है कि वह सातों, इसके सुमाता होनेके कारण, अभीतक जीवित हैं। इसके यहाँ भी मैं बहुधा जाया करता हूँ, और वहाँकी शांति तथा सुख देखकर मुझको अत्यंत ही प्रसन्नता होती है; हमारा समाज और उसमें ऐसा कौटुंबिक सुख! यह भी अद्भुत वस्तुओंके समान एक दर्शनीय वस्तु है।"

"यह तो अत्यंत ही आश्चर्यजनक बात है। क्या इसके संबंधमें कभी कोई प्रवाद भी नहीं फैला?"

"नहीं, कभी नहीं।"

"परन्तु इसके पतिको आप कैसा समझते हैं? वह भी क्या कुछ कम विचित्र हैं?"

"हैं भी और नहीं भी। मेरी समझमे तो इन दोनोंकी कुछ खटपट हो गई है—वही कोई घरेलू झगडा होगा, जो क्षुद्रसे क्षुद्र बातपर तनिक देरमें तिलका ताड बनकर खडा हो जाता है। ऐसे मन-मुटावोंको भाँप लेनेपर भी लोग उनका वास्तविक हेतु तो कभी जान नहीं सकते, हाँ, अनुमान उनका बहुधा ठीक ठीक ही बैठता है।"

"तो इनका झगडा क्या था?"

"उसका हाल तो, मैं कुछ जानता नहीं, पर यह अवश्य कह सकता हूँ कि पहले, 'आदर्श-पति' रहकर भी काउट महाशय अब अत्यंत कामुककी भाँति जीवन व्यतीत करने लगे हैं। प्रथमावस्थामें—भले पति होनेकी दशामें—उनका स्वभाव बहुत ही बुरा था, तब वह अत्यंत ही उग्र थे और बात बातमें क्रोधित हो जाते थे, परन्तु इस प्रकारका उच्छृंखल जीवन

व्यतीत करनेके समयसे, उनकी प्रकृति ही बदल गई है। ताडनेवाले फिर भी ताड़ ही जाते है कि इस दंपति-युगलमे अवश्य ही कोई झगड़ा हुआ है, अन्यथा उनको ऐसा घुन क्यों लगता, और वह असमय ही इतने वृद्ध क्यों होते।"

इसके पश्चात् वह दोनों, पहलेसे भली प्रकार निरीक्षण न करनेके कारण स्वभाव-भेद अथवा विरोधात्मक प्रकृतियोंद्वारा, कुटुम्बोमे उत्पन्न होनेवाले गूढ एवं अज्ञेय क्लेशोके संबंधमें, दार्शनिकोंकी भाँति, कुछ मिनटोंतक आपसमें बातचीत करने लगे; फिर तत्क्षण ही रैाजर द सैलनिसने, जो अब भी काउंटैसकी ओर सैरबीन लगाकर देख रहा था, यों कहना आरंभ किया—

"यह स्त्री सात संतानोंकी माता है—इस बातपर कैसे विश्वास किया जाय ?"

"जी हाँ; और वह भी ग्यारह वर्षोंमे; फिर उसके पश्चात् तो, तीस वर्षकी आयु होनेपर इसने, समाजमें आगामी बहुत वर्षोपर्य्यंत अपना स्थान बनाए रखनेकी इच्छासे, और अधिक संतानोंकी माता बनना ही अस्वीकार कर दिया।"

"आह! अभागी स्त्रियाँ!"

"तुम उनपर तरस क्यों खा रहे हो ?"

"क्यों ? वाह भाई! तुम भी खूब हो, ग्यारह वर्षपर्य्यन्त माता बनाए रखना! और वह भी ऐसी स्त्रीको! तनिक इसपर तो विचार करो! वास्तवमें कैसा नरक-सम बीभत्स व्यापार है! इसका संपूर्ण यौवन, सौन्दर्य, सफलताकी हरीभरी आशालताएँ, और निर्मल जीवन व्यतीत करनेके वह सब काव्यादर्श, 'पुनर्जनन' रूपी 'न्याय' के उस भीपण दानवको, निर्दयतापूर्वक भेंट कर दिये गये, जिसने संसारकी प्रत्येक साधारण स्त्रीको संतानोत्पत्तिकी केवल एक मैशीन-मात्र बना रक्खा है।"

"फिर तुम क्या चाहते हो ? यह तो प्रकृतिकी लीला है।"

"तुमने ठीक कहा, पर मेरा कहना है कि, यह प्रकृति हमारी चिरशत्रु है; हमको इससे सदैव युद्ध करते रहना चाहिए; क्योंकि हमको पशुत्वकी

ओर हटाकर ले जाना ही इसका स्वभाव है। सत्य जानो कि हमारे आदर्शको सुंदर बनाने, अथवा उस कार्यमें सहायता देनेके लिए, ईश्वरने पृथ्वीपर कोई भी स्वच्छ अथवा सुंदर कांतिवाली वस्तु नहीं रची; यह कार्य तो मानव-मस्तिष्कद्वारा ही संपादित हुए है। मनुष्यने ही प्रकृतिके गीत गा-गाकर, इसका भाष्यकार बन, प्रशंसात्मक पद्य रच, कलावित्के रूपसे (उसको) आदर्श मान, और वैज्ञानिकके रूपसे रहस्योद्घाटन कर उसको कुछ-एक श्री, लावण्य और प्रकार-विशेपका अज्ञात सौन्दर्य प्रदान कर रहस्यमय बना दिया है। यह ठीक है, कि मनुष्यके इस कार्यमें बहुतसी ग़लतियाँ भी हुई है; परन्तु फिर विविध प्राकृतिक दृश्योंमें अद्भुत सामंजस्य, गूढ कांति, सौन्दर्य, अज्ञात लावण्य, और रहस्योके अस्तित्वका, पता लगाना भी तो उसीका काम था। ईश्वरने तो केवल, असभ्य बर्बरोको—कीटो और रोगाणुओसे भरे हुए प्राणियोंहीको—यहाँपर उत्पन्न किया था, जो पशुवत् सुख भोगनेके पश्चात् कुछ ही वर्षोंमे दुर्बल और वृद्ध होकर, जराक्रान्त मनुष्योंके समान विरूप और सामर्थ्यहीन हो, प्राण त्याग देते थे। ऐसा करनेमें उसका केवल एक ही उद्देश्य प्रतीत होता है। और वह यह, कि अपने ही सदृश प्राणियोको जघन्य रीतिसे उत्पन्न करनेके पश्चात् क्षणभंगुर कीटादिककी भाँति, वह जन्मदेनेवाले प्राणी भी विनष्ट हो जायँ। 'जघन्य रीतिसे अपने ही समान प्राणियोको उत्पन्न करते है' यह बात मैंने जान बूझकर कही है और इसपर मेरा दृढ विश्वास भी है। देखा जाय तो, वास्तवमें प्राणियोंके पुनर्जननसे अधिक जघन्य एवं विरक्तिकारक कार्य ही संसारमे नहीं है। सुकुमार-चित्त जीव तो भूतकालकी भाँति भविष्यमे भी, इसका सदैव विरोध ही करते रहेगे। मितव्ययी एवं अपकारेच्छु विधाताने जब प्रत्येक इन्द्रियको दो काम करनेके लिए बनाया है, तो फिर मानव-कार्योमे उस अत्यंत श्रेष्ठ और पवित्र कर्मके लिए कोई अन्य विधि क्यो न निर्धारित की ? देखो, भौतिक अन्नद्वारा शरीरको पुष्ट करनेवाला मुख, भाषण-द्वारा, विचार भी प्रकट करता है। इसी प्रकार शरीरस्थ त्वचा भी, हमारे तद्विषयक चर्चा करते-न-करते स्वयमेव ही, परिवर्तित हो जाती है। नासिकाद्वारा प्राणदायिनी वायु भी फेफडोमें पहुँचती है और फूल-वन-पेड़-समुद्र इत्यादि समस्त सांसारिक पदार्थोंका सौरभ भी हमारे मस्तिष्क तक पहुँचता रहता है। श्रवणेन्द्रिय (कान) सजातीय मनुष्योसे

वार्तालाप करनेमें भी सहायता करती है और इसके द्वारा हमने गान-विद्या, तथा कल्पना, आनंद, और अनंत एवं अपरिमित सुखोंके मूल, नाद (Sound) का, आविष्कार किया है। परंतु कुटिल एवं कपटी विधाताने, पुरुष-स्त्रीके पारस्परिक संसर्ग (मैथुन)के अधिक उच्च एवं श्रेष्ठ आदर्शकी ओर अग्रसर होनेका विरोधी बन, बाधाएँ खडी कर दी है; पर मनुष्यने भी, प्रेमका अविष्कार कर, उस धूर्त्त देवको अच्छा उत्तर दिया है। मनुष्याविष्कृत यह प्रेम अब कविता तथा गीतिकाओंसे इतना अधिक मंडित हो गया है कि स्त्रियाँ, बहुधा उसका मैथुन-प्रसंगसंबंधी भाग ही, भूल जाती हैं। इसके अतिरिक्त जो जो व्यक्ति अपनेको धोका देनेमें असमर्थ है उन्होंने, परिमार्जित व्यभिचार और विषय-भोगका आविष्कार कर, ईश्वरकी खूब खिल्ली उडाई है; और इस प्रकार उनकी श्रद्धाजलि भी,—असभ्य रीतिहीसे सही,—सौन्दर्यदेवीके चरणोंतक तो जा पहुँची।"

"परंतु मैथुन करनेपर, पशुओंकी भाँति, मनुष्योंके भी सृष्टि-नियमके कारण, संतान उत्पन्न होती है।"

"इस स्त्रीहीको क्यो नही देखते। रत्न एवं मुक्ताके समान यह तो केवल सौन्दर्य्य-प्रदर्शनके लिए ही उत्पन्न हुई थी, सत्कार और पूजाके लिए ही संसारमें आई थी; परंतु इससे काम लिया गया ग्यारह वर्षपर्य्यंत, काउंट मैसकेरेके वंशमें, उत्तराधिकारी उत्पन्न करनेका। आह! कैसा कुत्सित व्यापार है!"

"तुम्हारे कथनमें बहुत-कुछ सत्य है। पर इसके समझनेवाले पुरुष ही कितने है!" बर्नार्ड ग्रेण्डिनने हँसकर कहा।

सैलनिस जो अब पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक उत्तेजित हो गया था बोला—"ईश्वरका मैने कैसा मानसिक चित्र खींचा है, इसका भी क्या तुमको कुछ पता है? सुनो, मछली जिस प्रकार समुद्रमें अपने अंड-समूह विथरा देती है कुछ कुछ उसी प्रकारसे यह इन्द्रियातीत साधन भी, मेरी समझमें, अनंत लोकोको परमाकाशमें बखेर देता है। अपना स्वाभाविक गुण होनेके कारण ही ईश्वर सृष्टिकी रचना करता है; परंतु वह जो कुछ करता है उसको समझनेकी शक्ति उसमे नहीं है; इसी कारण उसका कार्य-

बाहुल्य मूर्खताकी सीमातक पहुँच जाता है; और उसके फैलाए हुए अंकुर किस प्रकार विविध रीतिसे संयुक्त हो जाते है, इसका भी उसको पता तक नहीं होता। सौभाग्यसे केवल मानव-मस्तिष्क ही एक ऐसी क्षुद्र स्थानीय घटना कही जा सकती है जिसका उसको पहलेसे पता न था; परंतु यह भी पृथ्वीके साथ ही नष्ट हो जायगा; और फिर पुनः यहींपर अथवा अन्य कहीं, इन ही अथवा इनसे सर्वथा भिन्न पदार्थोंके सहयोगसे, धारावाही रूपमें अनादि सृष्टिके नवीन कल्पमे पुन. उत्पन्न होगा। उसके तनिकसे प्रमादके कारण ही हम संसारमे इतने दुःखी बने हुए है। यह संसार, हमारे रहनेके लिए, अथवा हमारी अभ्यर्थनार्थ, नही बनाया गया था और न हमारे रहने और खानेके लिए ही यहाँ पहलेसे कोई तयारी की गई थी। वास्तवमे, सभ्य और सुशिक्षित होते हुए भी, यदि हमको यहाँपर, साधारण बोलचालमें कही जानेवाली 'ईश्वरेच्छा' के कारण निरन्तर जीवन-संग्राम करना पडता है, तो वह भी केवल उसी ईश्वरकी बदौलत है।"

प्रेण्डिन, जो अपने मित्रकी अद्भुत मस्तिष्क-शक्तिसे भली-भाँति परिचित होनेके कारण, उसके कथनको अत्यंत ध्यान-पूर्वक सुन रहा था, बोला—"तो तुम्हारा विश्वास है कि मानव-विचार-शक्तिको ईश्वरने स्वयमेव जानबूझकर नहीं सृजा वरन् वह, स्वयं ही, सहसा उत्पन्न हो गई है?"

"बिलकुल यही बात है; यह तो हमारे मस्तिष्कके ज्ञान-तंतुओंके केन्द्रोका व्यापार है। जिस प्रकार नवीन पदार्थोंके रासायनिक योगसे अज्ञात वस्तु बन जाती है, अथवा जैसे रगड़से, वा अन्य पदार्थ-विशेषके अत्यंत निकट आ जानेसे, विद्युत्-शक्ति उत्पन्न हो जाती है, या यों कहो कि जिस प्रकार सजीव पदार्थोंमें असीम सफलताके साथ खमीर उठनेपर, भाँति भाँतिके उत्पात प्रारभ हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार, यह घटना भी समझनी चाहिए।

"प्यारे मित्र, आँखें खोलकर, चारों ओर देखने-वाले किसी भी पुरुषको मेरे कथनकी सत्यता प्रकट हो सकती है। कालान्तरमें. सूक्ष्मदर्शी, सत्यान्वेषी तथा सतप्त एवं क्षुभित रहनेवाली, किसी त्रिकालज्ञ सृष्टाद्वारा निर्दिष्ट और पशुओंकी मानस वृत्तियोंसे सर्वथा भिन्न, इस मानव शक्तिका यदि यही उद्देश्य होता, तो हम सरीखे वर्त्तमान-कालीन प्राणियोंके रखनेके लिए,

यह संसार क्या इसी प्रकारका क्षुद्र जन्तुओंके आखेटके उपयुक्त, एक छोटेसे कष्ट-दायक उपवन सरीखा ही होता; और वनखंड-पूरित, पथरीली, गोलाकार रसोईघर सरीखी, इस क्षुद्रवाटिकामें, गुफाओं अथवा पेड़ोंके नीचे, नंगे रहने और अपने अन्य भाइयो तथा पशुओके मांस अथवा सूर्य्यताप और वर्षाद्वारा परिवर्धित शाकादिसे देह पुष्ट करनेके लिए, वह अदूरदर्शी ईश्वर, क्यों हमको इस प्रकार निर्देश करता।

"थोड़ासा भी विचार करनेसे यह बात अच्छी तरह समझमे आ जाती है कि यह संसार, हम सरीखे प्राणियोके लिए नहीं बनाया गया था। इस समयकी भाँति, भविष्यमें भी, सदैवके लिए, शक्तिहीन, अज्ञानी और क्षुब्ध रहनेवाले, हमारे मस्तिष्क-कोषों (cells) के ज्ञानतंतुओमें, अलौकिक रूपसे परिवर्धित होनेवाली, इस विचार-शक्तिने हम सब, बुद्धि-युक्त प्राणियोंको इस पृथिवीपर सदैवके लिए अभागा और निर्वासित-सा बना रक्खा है।

"पृथ्वीके संबंधमें ही विचार कर देखो कि ईश्वरने इसको किस प्रकार-का बनाया है। इसको देखकर क्या तुम अस्विकार कर सकते हो कि पशुओ-का उपयुक्त निवास होनेके कारण ही यह इस प्रकार वन-पूरित बनाई गई है ? आपके वा हमारे लिए यहाँ क्या धरा है ? कहना पड़ेगा कि कुछ नहीं। इसके विपरीत उनके लिए सब पदार्थ उपस्थित है। अपने नैसर्गिक ज्ञान-के कारण, उनको एक दूसरेका भक्षण करने, आखेट खेलने, और इधर-उधर फिरनेके अतिरिक्त कोई अन्य कार्य ही नही है, इसका हेतु यह है, कि दया और शान्तिका ईश्वरको पहलेसे ध्यान ही नहीं आया। एक दूसरेको फाडकर चट करनेवाले प्राणियोकी मृत्युका ही उसको पूर्ण ज्ञान हुआ था। तीतर, बटेर और कबूतरोंको 'बाज' मारकर खा जाता है, और इसी प्रकार भेड़ बारहसिंघे और बैलोका मांस पुष्ट होकर 'ट्रुफुलस' नामक कंदके साथ, जो हमारे विशेप लाभके लिए धरातलसे उपलब्ध हुआ है, बड़े बड़े बनैले हिंस्र पशुओके हिस्सेमें आता है।

"रही हमारी बात; सो ज्यों ज्यों हम अधिक सभ्य मेधावी और सुसंस्कृत होते जाते है, त्यो त्यों हमको ईश्वरेच्छाद्योतक अपनी शरी-

रस्य पशु-वृत्तियोंको और भी अधिक दृढ़तासे दमन करना पड़ता है। इसी कारण, अपनी पशुवत् दशाको अधिक सुखदायी बनानेके विचारसे, हमने घरसे लेकर उपयुक्त भोजन, चटनी, मिठाई, मठरियॉं इत्यादि लवणयुक्त पदार्थ; शर्बत, मदिरा आदि पेय वस्तु, वस्त्र, आभूषण, शय्या, चटाई इत्यादि गृह-सामग्रियॉं, गाड़ी, रेल, आदि विविध प्रकारकी मैशीनें, कला-कौशल, भौतिक विज्ञान, लेखन, कला, और संगीत काव्य तककी खोजकर सृष्टि कर डाली है। अपरञ्च, जीवनकी इन सुविधाओंके अतिरिक्त, आदर्शोंकी स्थापना भी संसारमें हमारे ही द्वारा हुई है। ईश्वरने तो हमको केवल संतान-प्रसव करनेके लिए ही भेजा था; परन्तु यहॉंके वैचित्र्य-हीन जीवनकी कठिनाइयोंको कुछ एक न्यून करनेके विचारसे, हमने इन सुविधाओ और आदर्शोंकी सृष्टि की है।

"इस नाट्यशाला हीको देखो। इस मानव-संसारके विधाता तो हम ही हैं। यहॉंके विषय-सुख-संबंधी मोहको, केवल हमारे मानसिक विचार ही समझ सकते है। बेचारे सनातन ब्रह्माने तो इसका स्वप्न भी न देखा होगा। मनुष्यरूपी असंतुष्ट एवं अशांत जंतुके चित्तको मोहनेके लिए ही इसकी सृष्टि की गई थी।

"अब तनिक श्रीमती द भैसकेरेकी दशापर ही विचार करो, गुहाओंमें नंगी अथवा वन्य पशुओंकी खालसे शरीर ढॉंककर रहनेके लिए ही ईश्वरने हमको संसारमें भेजा था, परतु अब क्या यह उससे कहीं अधिक अच्छी दशामें नहीं है? मैं इसी युवतीकी ओर लक्ष्य कर कहता हूँ कि, वर्बरोंकी भॉंति सात बार माता बनाकर, ऐसी संगिनीको भी सहसा छोड़कर, वह पशुतुल्य स्वामी, क्यों दुष्टा स्त्रियोंके फेरमें मारा-मारा फिरता है!"

यह सुनकर ग्रेण्डिनने कहा—"आह प्रिय मित्र! इसका भी वही हेतु होगा, बढ़ते हुए वंशका व्यय-भार उठानेमें असमर्थ होकर ही—गृहप्रबंधमें मितव्ययिताके विचारसे—शायद वह भी, इसी निष्कर्षपर पहुँचा है कि जिसका दार्शनिकोंकी भॉंति तुमने अभी वर्णन किया है।"

इसी समय तृतीय ऐक्टका पर्दा उठ गया और वह दोनो अपने अपने हैट उतारकर पुन यथास्थान जा बैठे।

(४)

काउंट और काउंटैस मैसकेरे गाड़ीमें, एक दूसरेके पास सर्वथा मौन बैठे हुए, नाट्यशालासे घरको लौट रहे थे कि इतनेमें पतिने, पत्नीकी ओर मुख मोड़, सहसा यह कहा.—' गैब्रियल '

" क्या कहते हो ? "

" देखो कितना समय बीत चुका है; क्या तुम इसको पर्याप्त नहीं समझतीं ? "

" किसको ? "

" तुम्हारे दिये हुए इस भयानक दंडको, जो मैं गत छह वर्षोंसे भोग रहा हूँ। "

" तुम क्या चाहते हो ? इस संबंधमें तुम्हारी सहायता करना मेरी सामर्थ्यके बाहर है। "

" केवल यह बता दो, कि उनमेंसे वह कौनसा है ? "

" कदापि नहीं। "

" देखो ! इन बच्चोंको पास बुलानेपर, अथवा अपने सामने खड़ा देख-कर ही, मेरा हृदय संदेह-ज्वालासे जलने लगता है। मुझको केवल इतना बता दो कि उनमेंसे वह कौनसा है; शपथ खाकर कहता हूँ कि मै तुमको क्षमा कर दूँगा और उसके साथ भी सदा दूसरोंके समान बर्ताव होगा। "

" मुझको ऐसा करनेका अधिकार नहीं है।'

" मैं इस भाररूप जीवनको अब और अधिक बरदाश्त नही कर सकता। क्या तुम नही देखतीं कि इस चिंताके कारण मैं घुला जा रहा हूँ ? यह प्रश्न मेरे हृदयमे सदैव उठा करता है और, संतानोंको देखनेपर, प्रत्येक बार ही मुझको मानसिक व्यथा होती है। इसके कारण मै पागल-सा हुआ जाता हूँ। "

" तो क्या तुमको, कुछ अधिक कष्ट पहुँचा है ? " पत्नीने कहा—

" अत्यंत ही दारुण रूपसे। और यदि ऐसा न होता तो भला मैं, तुम्हारा भयावह साथ देकर, क्यो इस प्रकार पीछे-पीछे फिरता; और यह जानकर भी कि उनके मध्य एक—केवल एक—ऐसा है, जिसको मैं नहीं पहिचान सकता और उसीके कारण मैं दूसरोंसे स्नेह नही कर सकता, मैं क्यों यहाँ आता, तथा और भी अधिक दारुण यातनाएँ सहता।'

" तो क्या तुमको वास्तवमें अत्यंत ही दारुण व्यथा हुई है ? " काउटेसने फिर दोहराया।

पत्नीका यह प्रश्न सुनकर, वह नियंत्रित एवं विषादजनक स्वरसे, कहने लगे—

" निस्संदेह; और तभी तो, मैं तुमसे प्रत्येक दिन कहता हूँ कि असह्य वेदना होती है। यदि मुझको उनसे स्नेह न होता तो क्या मैं तुम्हारे या उनके पास, इस घरमें रह सकता था ? आह !

" तुमने मेरे प्रति अत्यंत ही गर्हित आचरण किया है। तुम भली प्रकार जानती हो कि मैंने, अपनी संतानको सदा सच्चे हृदयसे, प्यार किया है। स्वभाव-हीसे अतीत कालीन पुरुषोंकी भाँति, सदा नैसर्गिक व्यवहार करनेके कारण, जिस प्रकार मैं, तुम्हारे साथ, प्राचीन कुलोत्पन्न पतिकी भाँति पहिले वर्त्ताव करता था ठीक उसी भाँति मैंने, अपनी संतानसे भी, पूर्वकालीन पिताकी भाँति स्नेह किया है; यह ठीक है कि मैं घोर ईर्ष्यालु था, परंतु इसका कारण भी तुम ही थीं; तुम्हारा कुल, तुम्हारी आत्मा, और तुम्हारी आवश्यकताएँ, सब कुछ ही मुझसे सर्वथा भिन्न हैं। आह ! उस दिनसे तुम्हारी तनिकसी पर्वाह न करनेपर भी मेरे चित्तसे तुम्हारी वह बात कदापि न निकलेगी। मैंने तुम्हारी हत्या नहीं की, क्योंकि ऐसा करनेपर हमारी—नहीं नहीं,—तुम्हारी इन संतानोंमें किसको मैं अपना नहीं कह सकता यह जाननेके लिये, इस पृथ्वीपर, कोई भी साधन शेष न रहता। मैं इसी आशापर बैठा हूँ; परंतु विश्वास रखना कि ऐसा करनेमें मुझको अत्यंत तीव्र मानसिक व्यथाएँ भोगनी पडी हैं। सबसे बडी दो संतानोंके अतिरिक्त दूसरोंसे स्नेह करनेका मुझको साहस ही नहीं होता। मैं न तो उनकी ओर देख सकता हूँ, न उनको बुला सकता हूँ, और न उनका चुम्बन ही कर सकता हूँ; उनमेंसे किसीको गोदीमें बैठाते ही, मेरे चित्तमें, सदा यही प्रश्न उठता है ' क्या यह वही है ? ' गत छह वर्षोंमें मैंने तुम्हारे साथ, न केवल ठीक, प्रत्युत अनुकूल ही वर्त्ताव किया है; अब यदि तुम यथार्थ बात प्रकट कर दोगी तो मैं, शपथ खाकर कहता हूँ कि, कोई अप्रिय कार्य कदापि न करूँगा।

गाड़ीमें अंधकार होनेपर भी पतिको अब ऐसा प्रतीत हुआ कि पत्नीका हृदय कुछ कुछ पसीज रहा है; और यह निश्चय होते ही, कि वह मुख बोला चाहती हैं, काउण्ट महाशयने फिर कहा—" मैं तुमसे भिक्षा माँगता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, कृपा कर मुझको यह बता दो—"

वह इतना ही कह पाये थे कि काउंटैसने कहा—"जितना तुम सोच रहे हो, उससे कहीं अधिक अपराध मेरा है; परंतु वारम्वार जननी होनेका भार वहन करना मेरे लिये अधिक शक्य न होनेके कारण, तुमको अपनेसे दूर रखनेका केवल एक ही उपाय मुझको मालूम था, और मैंने, ईश्वरके समक्ष तथा अपनी संतानोंके सिरपर हाथ उठा, जो कुछ कहा था वह सर्वथा झूठ था; मैंने तुम्हारे प्रति कभी कोई अपराध नहीं किया।"

वौय द बोलोनको जाते समय जिस प्रकार, उस भयंकर दिन, उन्होंने पत्नीका हाथ पकड़कर ऐंठ दिया था, ठीक वैसा ही आज व्यवहार करनेके उपरांत उन्होंने अस्पष्ट स्वरसे पूछा—

" क्या सच कह रही हो ? "

" बिलकुल सच । "

यह सुनकर दुःखसे व्याकुल हो दीर्घ निःश्वास ले उन्होंने कहा—"मेरे मनमें अब नये संदेह उत्पन्न हो गये और उनका कभी अंत न होगा; तुम्हारी कौनसी बात मिथ्या है ? पहली या पीछेकी ? मैं इस समय तुम्हारी बात-पर क्यों कर विश्वास करूँ ? ऐसी स्त्रीपर भला कोई कैसे विश्वास कर सकता है; मुझको कौन-सी बात ठीक माननी चाहिए यह शायद मेरी सम-झमें कभी न आवेगा। मै तो यह आशा कर रहा था कि तुम जेम्स, जीन अथवा किसी दूसरे बालकका नाम बताओगी।"

इतनेमें गाडी प्रासादकी सीमाके भीतर आ गई और उसके द्वारकी सीढ़ियोंके सम्मुख रुकते ही, काउंट महाशय सदाकी भाँति पहले उतर अपना हाथ बढ़ा, पत्नीको सीढ़ियोंपर सहारा देते हुए प्रथम खंडमें पहुँचकर बोले—"मै, कुछ क्षणके लिए, तुमसे बात किया चाहता हूँ।" पत्नीने कहा—" मुझे स्वीकार है।"

तत्पश्चात्, उन दोनोंके एक छोटेसे गोल कमरेमें प्रवेश करते ही, एक नौकरने, आश्चर्यान्वित हो, वहाँपर मोमबत्तियाँ जला दीं। उसके बाहर जाने

पर जब कमरेमें केवल यही दो व्यक्ति रह गये तो काउटने कहा—"मैं किस प्रकार जानूँ कि तुम्हारी कौनसी बात सच्ची है ? इस संबंधमें, इससे पहले, मैं सहस्रोंवार तुमसे पूँछ चुका हूँ; परंतु आज तक तुम सदा मूक, अभेद्य, पाषाणहृदय, और दृढ़संकल्प ही बनी रहीं और अब कहती हो कि उस समय तुमने झूँठ कहा था। छह वर्ष पर्य्यंत तो एक बातपर विश्वास कराया और अब दूसरी बात कह रही हो। नहीं, तुम इस समय झूठ बोल रही हो। क्यों ? यह तो मैं ठीक ठीक नहीं बता सकता पर मेरे ऊपर दया करनेके विचारसे ही शायद तुमने ऐसा कहा है।"

"यदि मैं ऐसा न करती तो गत् छह वर्षोंमें मेरे चार बालक और उत्पन्न हो गये होते।" पत्नीने शुद्ध हृदयसे संशयोच्छेदन करते हुए कहा।

"क्या माताके लिए इस प्रकार कहना शक्य है ?"

"आह ! जो संतान मेरे अभीतक उत्पन्न नहीं हुई है उनकी माता मैं किस प्रकार कहला सकती हूँ, यह बात मेरी समझमें नहीं आई। उदरसे उत्पन्न हुए मेरे यह बालक ही यथेष्ठ संख्यामें हैं, और इन्हींको सच्चे हृदयसे प्यार कर मैं संतुष्ट हो जाती हूँ, परतु श्रीमान् स्मरण रखिए कि मैं—नहीं नहीं, हम सब, वर्त्तमानकालीन सभ्य संसारमें रहनेवाली स्त्रियाँ है, संतानोंसे पृथ्वीको भर देनेवाली स्त्रियोंमें हमारी गणना आप भूलकर भी न करें, यह कार्य तो हम कदापि स्वीकार न करेंगी।"

इतना कहकर वह उठ खडी हुई, परंतु काउंटने उनके हाथ पकडकर कहा—"लेकिन गैब्रियल एक शब्द—केवल एक शब्द मुखसे कह दो, और वह यह, कि वास्तविक बात क्या है ?"

"यही जो मैं अभी कह चुकी हूँ, तुम्हारे धवल यशपर मैंने कभी कलंक कालिमा नहीं लगाई।"

काउंट पत्नीके मुखकी ओर सतृष्ण नयनोंसे देख रहे थे, काउंटैसका शीतल नीलाकाशवत सुंदर भूरे नेत्रोंवाला मुख, उनको तब अत्यंत ही भला दीख रहा था, और काले केश-पाशोंमे हीरेका मुकुट अद्भुत कांतिकी सृष्टि कर मनको मोहे लेता था। इसी समय उनके हृदयमें सूर्यरश्मिवत् सहसा प्रकाश हुआ कि अन्य साधारण स्त्रियोंकी भाँति केवल वंशवृद्धि करनेके लिए ही यह तेजस्वी नारी नहीं उत्पन्न हुई थी; वरन् वह सैकड़ों वर्ष तक

संक्षिप्त किये जानेके उपरांत, आद्य दिव्योद्देश्यसे पथ-भ्रष्ट किये जाने पर, किसी गूढ़, अपूर्णतया निरूपित, और अस्पृश्य लावण्यके पीछे भटकनेवाली हमारी संकीर्णाभिलाषाओंके अद्भुत एवं रहस्यमय फलके सदृश थी। ऐसे नारी-पुष्प कभी कभी केवल हमारे सुख-स्वप्नके लिए ही संसारमें विकसित हो जाते है। काव्यवर्णित सभ्यताके गुणोंसे रंजित, स्त्रीसुलभ कमनीय कांति, हाव-भाव और आदर्श-विलासमंडित ऐसी ही सजीव-प्रतिमारूप नारियोंसे हमारे जीवन-गृह, दैदीप्यमान हो जाते है।

इस मन्द निष्प्रभ निर्णयपर पहुँचकर, पति महाशय पत्नीके सम्मुख, स्तंभित-से खड़े रह गये और फिर सम्भ्रान्त रूपसे उस पहिली ईर्ष्याके हेतु भी कुछ कुछ उनकी समझमें आ जानेपर वह अंतमें बोले कि—"प्रथम, तुम्हारी यह बात झूठी समझनेपर भी, अब मैं दृढ विश्वासके साथ कहता हूँ कि, जो कुछ तुमने कहा है वह सब सत्य है।"

यह सुन स्त्रीने अपना हाथ उनकी ओर बढाकर कहा:—

"तो क्या, हम अब मित्र हो गये?"

पत्नीके हाथको चुंबन कर काउंट महाशयने कहा—"हाँ, अब हम मित्र हैं। गैवरियल मैं तुमको धन्यवाद देता हूँ।"

इसके पश्चात् अब भी चित्तको चुरानेवाले पत्नीके सौंदर्यपर आश्चर्य करते हुए वह, उनहीकी ओर, टकटकी लगाये हुए, बाहर चले गये। इस समय उनके हृदयमें एक विचित्र भाव उठ रहा था।
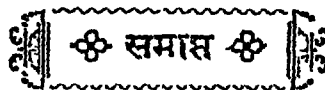
हमारा कथा-साहित्य

१ मानव हृदयकी कथाएँ प्रथम भाग—मोपासांकी कहानियोंका यह प्रथम भाग है। इसमें १५ कथाएँ है। इसकी तारीफमें और क्या लिखें इसका दूसरा भाग आपके हाथमें मौजूद ही है। संसारका यह सर्वश्रेष्ठ कथाकार है। मूल्य १)

२ वातायन—हिन्दीके सुप्रसिद्ध कथाकार, श्री० जैनेन्द्रकुमारकी तेरह उत्कृष्ट रचनाएँ। हालहीमें इनके उपन्यास 'परख' के लिए, जो कि हमारे यहाँसे छपा है, हिन्दुस्तानी एकाडेमीने ५००) का पुरस्कार दिया है। मूल्य १॥)

३ नवनिधि—हिन्दीके सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीयुक्त 'प्रेमचंद' जीकी सर्वश्रेष्ठ ९ कृतियाँ। इस पुस्तकके द्वारा ही शुरू शुरूमें उनका नाम हुआ। मूल्य ॥।)

४ चन्द्रकला—ख्यातनामा कथाकार श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकारकी आठ कथाओंका संग्रह मूल्य ॥।=)

५ पुष्पलता—सुप्रसिद्ध हिन्दी कहानी लेखक श्री० 'सुदर्शन'की सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ ११ कहानियाँ। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १)

६ रवीन्द्रकथाकुंज—विश्वविख्यात लेखक श्री० रवीन्द्रनाथ टागोरकी १०० से ऊपर कहानियोंमेंसे चुनी हुई सर्वश्रेष्ठ ८ कहानियाँ। मूल्य १)

७ फूलोंका गुच्छा—(दो भाग) अनेक भाषाओंसे अनूदित १३ सुंदर ऐतिहासिक कहानियाँ। मूल्य प्रत्येकका १)

८ वीरोंकी कहानियाँ ।=) ९ चित्रावली ॥=) १० भ्रमण-नारद =) ११ सदाचारी बालक =)॥ १२ भाग्यचक्र =) १३ दियातले अंधेरा ≡)

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

गिरगाँव बम्बई।